आगम विज्ञान

सच्चे सुख का स्त्रोत

- प.पू.पं.श्री कृपाबोधि विजयजी म.सा.

वंदना - समर्पणम्

बीजबुद्धिधारक गणधर भगवंत, 14 पूर्वधर तथा बहुश्रुतधर महापुरुष को वंदना

- सिद्धांत महोदधि परम पूज्य आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय**प्रेमसूरीश्वरजी** महाराजा
- न्यायविशारद परम पूज्य आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय**भुवनभानुसूरीश्वरजी** महाराजा
- समतामूर्ति परम पूज्य पंन्यास प्रवर श्री **पद्मविजयजी** गणिवर्य
- सिद्धांतदिवाकर परम पूज्य आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय**जयघोषसूरीश्वरजी** महाराजा
- प्रशांतमूर्ति परम पूज्य आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय**राजेन्द्रसूरीश्वरजी** महाराजा
- प्राचीनश्रुतोद्धारक परम पूज्य आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय**हेमचन्द्रसूरीश्वरजी** महाराजा
- सुदीर्घसंयमी परम पूज्य आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय**जगच्चन्द्रसूरीश्वरजी** महाराजा
- परमतपस्वी, गुरुदेव परम पूज्य आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय**संयमबोधिसूरीश्वरजी** महाराजा

शासनपति श्री महावीर स्वामिने नमः
श्री प्रेम-भुवनभानु-पद्म-जयघोष-राजेन्द्र-हेमचन्द्र-संयमबोधि गुरुभ्यो नमः

आगम विज्ञान

सच्चे सुख का स्रोत

~ लेखक - चिंतक ~
परम पूज्य सहस्रकूट तपाराधक आचार्यदेव श्रीमद् विजयसंयमबोधिसूरिजी म.सा. के शिष्यरत्न
परम पूज्य पंन्यासजी श्री विजयकृपाबोधिविजयजी म.सा. (हेमघोष)

मूल्य: 250 /-

~ प्रकाशक-प्राप्ति स्थान ~
जैनम् परिवार
'श्रुतमंदिरम्' 6,अश्विन सोसायटी, फतेहपुरा, पालडी-सरखेज रोड, अमदावाद - 380007
मो.89801 21712

~ लाभार्थी ~
परम पूज्य पंन्यास श्री कृपाबोधिविजयजी म.सा. की गणि - पंन्यास पद की उपज में से...

प.पू.प्रशांतमूर्ति, गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.का आशिष पत्र

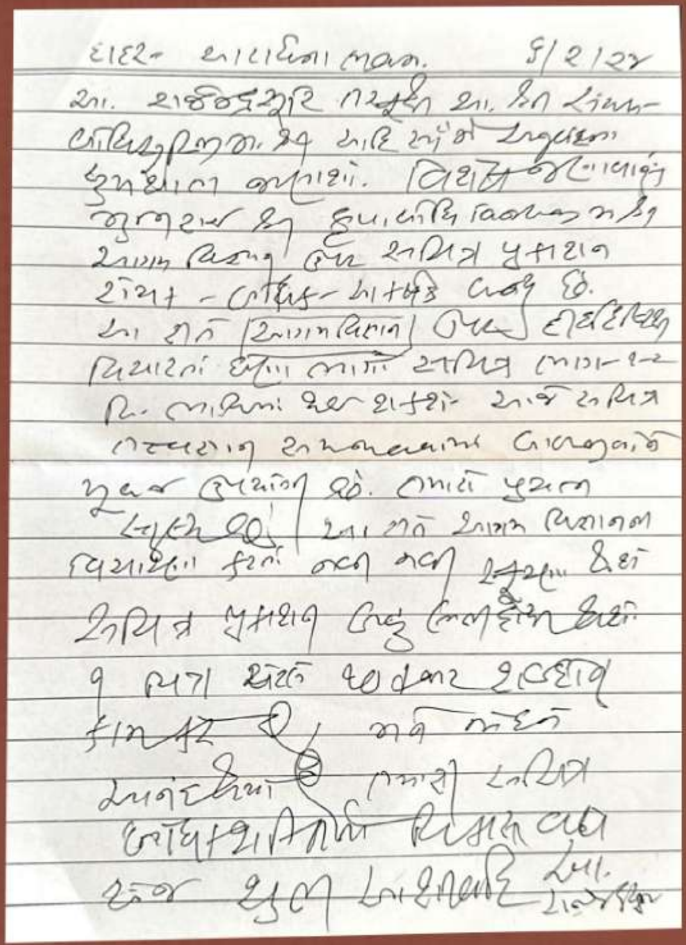

प.पू.राजप्रतिबोधक आचार्य भगवंत श्रीमद् विजयरत्नसुंदरसूरीश्वरजी म.सा. का आशिष पत्र

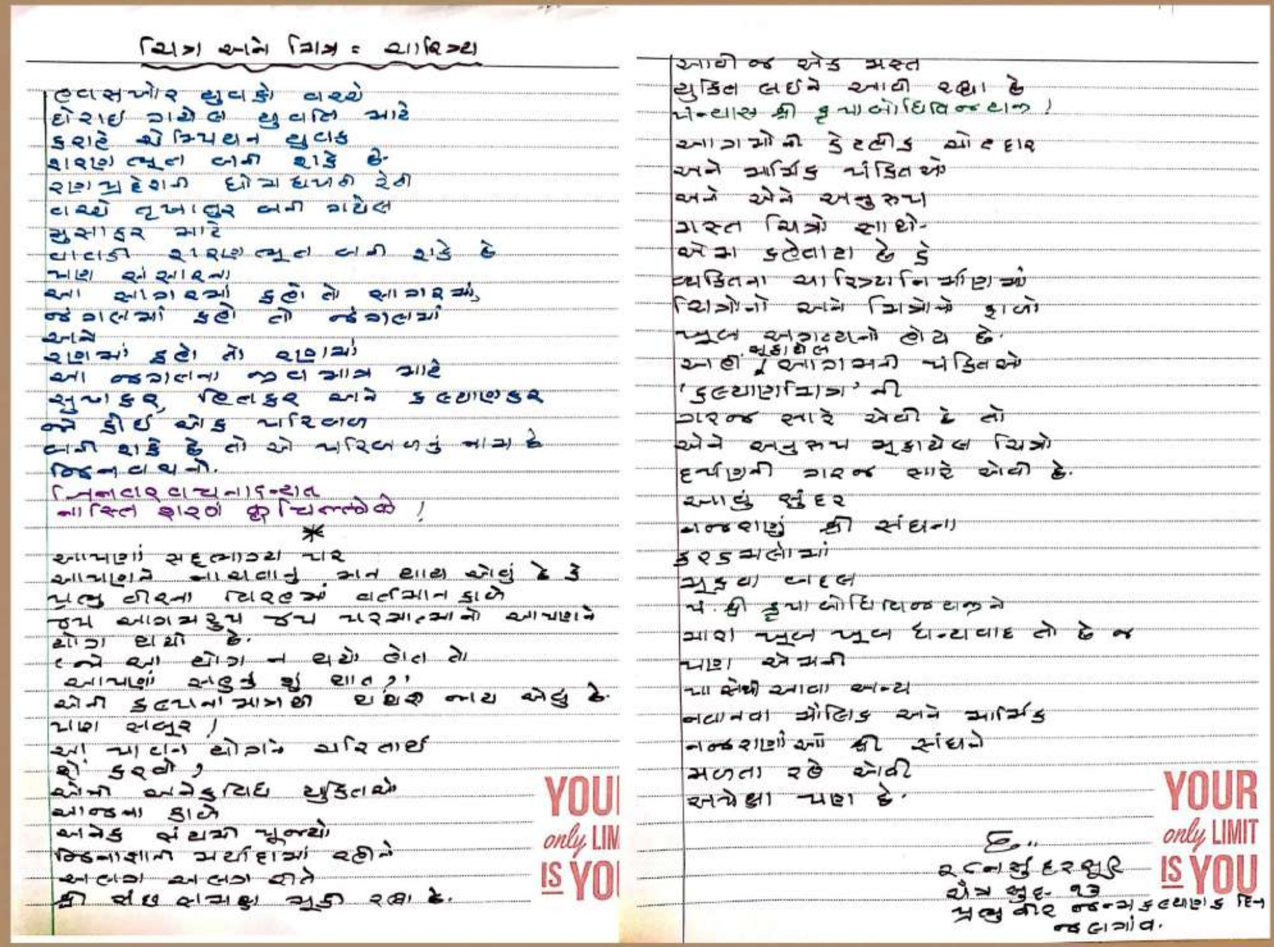

आगम का ज्ञान लेते चलो

- लेखक : पू.आ.संयमबोधिसूरीश्वरजी म.सा.

कईं साल पहले की अखबार में छपी एक खबर,रूस के एक शहर के व्यस्त राजमार्ग के एक कोने पर वर्षों से भीख मांगने वाला भिखारी आयुष्य पूर्ण होने पर मर गया... कुछ सज्जन सहृदय आत्माओं ने उसकी अंतिम क्रिया करवाई... उसके बाद उसकी स्थायी बैठक की जगह खुदवाने पर 30 लाख रूबल मिले... धन के ढेर पर बैठा वह जीवन भर भिखारी ही रहा।

हमें यह घटना कितनी करूणाजनक लगती है न! साथ ही यह भी सोचना है कि कहीं हम भी ऐसी करूणता का शिकार तो नहीं बन गए हैं...

विश्व के सर्वोत्तम ज्ञान-खजाने, तत्व-खजाने और आचार-खजाने का धारक जैनशासन मिलने के बावजूद क्या हम भी सूखे ही रह गए हैं, यह बहुत बड़ी करूणा नहीं है?

'प्रमाणनयतत्त्वलोकालंकार'-ग्रंथ के अध्ययन के बाद उद्भट बंगाली विद्वान श्री हरिसत्य भट्टाचार्य जैन धर्म की परमसत्यता को नतमस्तक हो गए थे। **'श्री उपमिति भव प्रपंच कथा'** नामक रूपकग्रंथ को मस्तक पर रखकर भारत के राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन नाच उठे थे।

'तरंगवती तरंगलोला' नामक प्राचीन उपन्यास ने पश्चिमी देशों के विद्वानों के मन को भिगो दिया है।

अगर आधुनिक ग्रंथ इतने शक्तिशाली हैं, तो बीजबुद्धि के धारक, श्रुतकेवली, ज्ञान-विज्ञान की सभी शाखाओं की गंगोत्री समान द्वादशांगी के रचयिता गणधर भगवंत, पूर्वधर भगवंत, तीर्थंकरों के स्वहस्तदीक्षित शिष्यों आदि द्वारा रचित आगमों में तो कितना ज्ञानखजाना और रसभंडार भरा होगा।

ऐसे आगम पहले हजारों की संख्या में थे। मुखपाठ रहने वाला वह ज्ञान घटकर 84 आगमों की मान्यता तक आया। वर्तमान में 45 ग्रंथों को आगम के रूप में मान्यता दी गई है। इनमें से 11 अंग आगम श्री गणधर भगवंतों द्वारा लिखे गए हैं, 12 उपांग आगम पूर्वधर महर्षियों द्वारा लिखे गए हैं, 10 पयन्ना सूत्र प्रभुवीर के शिष्यों द्वारा रचित हैं, 6 छेद, चार मूल, नंदी और अनुयोगसूत्र आदि विविध बहुश्रुत महापुरुषों द्वारा रचित हैं। एक-एक अक्षर में अनंत अर्थों को भरकर रचित आगमों में विश्व की सभी शाखाओं का भौतिक तथा अतिन्द्रिय ज्ञान भरा पड़ा है। वर्तमान में 'समुद्र समाना बूंद में' की तरह विशाल महासागर जैसा ज्ञान कुछ बूँदों में समाहित है, कुछ नष्ट हो गया और कुछ भविष्य के जीवों की अक्षमता/अयोग्यता को ध्यान में रखकर पूर्वाचार्यो ने छुपा दिया। बहुत कुछ नष्ट हो जाने के बावजूद गुजराती कहावत 'भांग्यु भांग्यु तोय भरूच' के न्याय से वर्तमान में होने वाली सभी घटनाओं/अन्वेषणों के रहस्यों को आगमग्रंथ आपके सामने प्रकट कर सकते हैं। वास्तविक, व्यवहारिक और आध्यात्मिक बहुल खजाना आगमग्रंथों में प्रस्तुत किया हुआ है।

मार्मिक चिंतक-विचारक पंन्यासजी श्री **कृपाबोधिविजयजी** ने अपने **भगवती सूत्र** के योगोदहन के समय भगवतीसूत्र तथा अन्यग्रंथों का बार-बार चिंतन-मनन किया, उनसे सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय उपयोगी बनने वाले जीवनलक्षी संदेश देते हुए 5-15 तत्वों को प्रत्येक आगम से खोजकर उनके अनुसार ग्राफिक्स तैयार करवाए। अनंत अर्थों और असंख्य तत्वों से भरे आगमों से कुछ ही विचाररत्नों का चयन बहुत वैचारिक संघर्ष मांगता है लेकिन देव-गुरु की कृपा, विशुद्ध भावना और सशक्त पुरुषार्थ के बल पर उन्होंने सुंदर संग्रह तैयार कर श्री संघ के चरणों में अर्पित किया है। पदप्रदान प्रसंग पर विशालकाल आगमप्रदर्शन आयोजित होने से वह अहोभाव और प्रशंसा का पूर जन्मा गया।

पूज्य प्रशांतमूर्ति विशुद्ध पुण्यपुंज जिनवचन-गुरुवचन समर्पितमति सुविशाल गच्छाधिपति आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयराजेंद्रसूरीश्वरजी म.सा. के प्रेमादेश और कठोर आग्रह के बल पर वही आगमप्रदर्शन खंड के लिए तैयार किए गए ग्राफिक्स और चित्र समजूतियों को पुस्तकरूप प्रदान किया गया है। वे-वे आगमग्रंथों की विशालकाय ज्ञानराशि से वर्तमान मोहग्रस्त आत्माओं को जीवन जीने का उचित मार्गदर्शन मिले ऐसा एक केंद्रित संदेश, उसके अनुसार 3 से 10 ग्राफिक्स से समजूतियाँ इस प्रकार प्रत्येक आगमग्रंथ पर एक चित्र प्रस्तुत किया गया है। विराटकाय आगम ग्रंथों के उपकार की केवल अति अत्यंत झलक है। एक अपेक्षा से कहें तो यह appetizer है जो ज्ञान की भूख जगा सकता है। पंन्यास **श्री कृपाबोधि विजयजी म.सा.** की लगन-पुरुषार्थ और उत्साह की हृदय से अनुमोदना। अपनी आराधना को तीव्रतम और शुद्धतम बनाए रखें और साथ ही शासन सेवा भी निर्मल भाव से निरंतर करते रहें, इस प्रकार हृदय से शुभाशीष।

ग्राफिक्स बनाने वाले ग्रफिकल्चर के आर्टिस्ट हितभाई तथा जयभाई, जीत, रिधम आदि युवा, सुंदर प्रिंटिंग करवाने वाले पंडितवर्य श्री प्रियांकभाई आदि सभी की अनुमोदना...

पूज्य गच्छाधिपतिश्री के आशीर्वाद तथा परम पूज्य राजप्रतिबोधक आचार्यदेव **श्रीमद् विजयरत्नसुंदर सूरीश्वरजी महाराज** के उदारतापूर्वक मिले आशीर्वाद पत्र बहुत बड़ी पूंजी बनकर रहेंगे।

अंत में, यह पुस्तक युगों तक आगम प्रकाश का उजाला फैलाती रहे और स्व-पर कल्याण में निमित्त बनती रहे, यही हृदय की अभ्यर्थना है...

विजयसंयमबोधि सूरि
वैशाख सुद 11
शासन स्थापना दिन
पालीताणा

૧૨ દ્રષ્ટિવાદ

(૧) પરિકર્મ (૮૩)

- સિદ્ધ શ્રેણિકા (૧૪)
- માતૃકા પદ
- એકાર્થિક પદ
- પાદોષ્ઠ પદ
- આકાશ પદ
- કેતુભૂત
- રાશિબદ્ધ
- એકગુણ
- દ્વિગુણ
- ત્રિગુણ
- કેતુભૂત
- પ્રતિગ્રહ
- સંસાર પ્રતિગ્રહ
- નંધાવર્ત્ત સૂત્ર
- સિદ્ધબદ્ધ

- મનુષ્ય શ્રેણિકા (૧૪)
- માતૃકા પદ
- એકાર્થિક પદ
- પાદોષ્ઠ પદ
- આકાશ પદ
- કેતુભૂત
- રાશિબદ્ધ
- એકગુણ
- દ્વિગુણ
- ત્રિગુણ
- કેતુભૂત
- પ્રતિગ્રહ
- સંસાર પ્રતિગ્રહ
- નંધાવર્ત્ત સૂત્ર
- મનુષ્યાવર્ત

- પૃષ્ટ શ્રેણિકા (૧૧)
- આકાશપદ
- કેતુભૂત
- રાશિબદ્ધ
- એકગુણ
- દ્વિગુણ
- ત્રિગુણ
- કેતુભૂત
- પ્રતિગ્રહ
- સંસાર પ્રતિગ્રહ
- નંધાવર્ત્ત
- પૃષ્ટાવર્ત

- અવગાહન શ્રેણિકા (૧૧)
- આકાશપદ
- કેતુભૂત
- રાશિબદ્ધ
- એકગુણ
- દ્વિગુણ
- ત્રિગુણ
- કેતુભૂત
- પ્રતિગ્રહ
- સંસાર પ્રતિગ્રહ
- નંધાવર્ત્ત
- અવગાહનાવર્ત

- ઉપસંપધ શ્રેણિકા (૧૧)
- આકાશપદ
- કેતુભૂત
- રાશિબદ્ધ
- એકગુણ
- દ્વિગુણ
- ત્રિગુણ
- કેતુભૂત
- પ્રતિગ્રહ
- સંસાર પ્રતિગ્રહ
- નંધાવર્ત્ત
- ઉપસંપધાવર્ત

- વિપ્રજહ શ્રેણિકા (૧૧)
- આકાશપદ
- કેતુભૂત
- રાશિબદ્ધ
- એકગુણ
- દ્વિગુણ
- ત્રિગુણ
- કેતુભૂત
- પ્રતિગ્રહ
- સંસાર પ્રતિગ્રહ
- નંધાવર્ત્ત
- વિપ્રજહાવર્ત

- ચ્યુતાચ્યુત શ્રેણિકા (૧૧)
- આકાશપદ
- કેતુભૂત
- રાશિબદ્ધ
- એકગુણ
- દ્વિગુણ
- ત્રિગુણ
- કેતુભૂત
- પ્રતિગ્રહ
- સંસાર પ્રતિગ્રહ
- નંધાવર્ત્ત
- ચ્યુતાચ્યુતાવર્ત

૨) સૂત્ર (૮૮)

- ઋજુકસૂત્ર
- પરિણતા પરિણતસૂત્ર
- બહુભંગિકસૂત્ર
- વિપ્રત્યચિકસૂત્ર
- અનંતસૂત્ર
- પરંપરસૂત્ર
- સમાનસૂત્ર
- સંયૂથસૂત્ર
- સંભિન્નસૂત્ર
- યથાત્યાગસૂત્ર
- સૌવસ્તિવર્ત્તસૂત્ર
- નંધાવર્ત્ત સૂત્ર
- બહુલસૂત્ર
- પૃષ્ટાપૃષ્ટસૂત્ર
- વ્યાવર્ત્તસૂત્ર
- એવંભૂતસૂત્ર
- દ્વિકાવર્તસૂત્ર
- વર્તમાનુત્પદસૂત્ર
- સમભિરૂઢસૂત્ર
- સર્વતોભદ્રસૂત્ર
- પ્રણામસૂત્ર
- દ્વિપ્રતિગ્રહસૂત્ર

છિન્નછેદનય - ૨૨
અછિન્નછેદનય - ૨૨
ત્રિનય - ૨૨
ચતુર્નય - ૨૨
૮૮

(૩) પૂર્વગત (૧૪ પૂર્વ) (૨૨૫ વસ્તુ)

- ઉત્પાદપૂર્વ (૧૦)
- અગ્રાયણીયપૂર્વ (૧૪)
- વીર્યપ્રવાદપૂર્વ (૮)
- અસ્તિનાસ્તિપૂર્વ (૧૮)
- જ્ઞાનપ્રવાદ (૧૨) (નંદીસૂત્રનો ઉદ્ધાર આમાંથી)
- સત્યપ્રવાદ (૨)
- આત્મપ્રવાદ (૧૬)
- કર્મપ્રવાદ (૩૦)
- પ્રત્યાખ્યાતપ્રવાદ (૨૦) (દશાશ્રુતસ્કંધ કલ્પસૂત્રનો ઉદ્ધાર આમાંથી)
- વિદ્યાપ્રવાદ (૧૫) સિદ્ધચક આરાધનાનો ઉદ્ધાર
- કલ્યાણપ્રવાદ(જ્યોતિષ) (૧૨)
- પ્રાણવાયુ પૂર્વ (૧૩) આયુર્વેદનો ઉદ્ધાર
- ક્રિયા વિશાલ (૩૦)
- લોકબિંદુસાર (૨૫)

(૪) અનુયોગ (૨)

- મૂલ પ્રથમાનુયોગ (તીર્થંકર ચરિત્ર)
- ગંડિકા અનુયોગ (અલગ અલગ ગંડિકાઓ)

(૫) ચૂલિકા (૩૪)

૧લા પૂર્વમાં - ૪
૨જા પૂર્વમાં - ૧૨
૩જા પૂર્વમાં - ૮
૪થા પૂર્વમાં - ૧૦

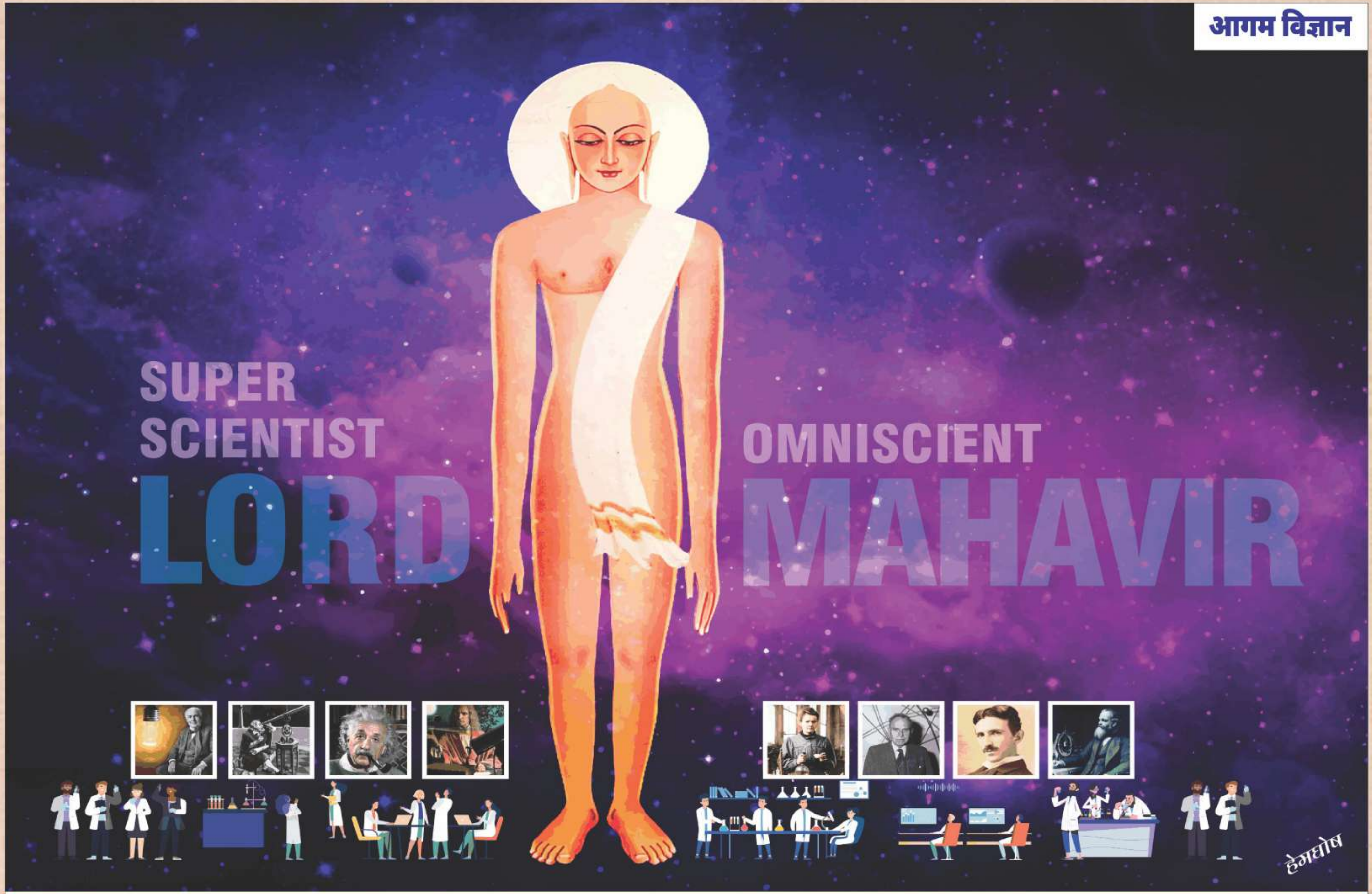

केमेस्ट्री,फिजिक्स,बायोलोजी,एस्ट्रोलोजी,मेथेमेटिक्स,आयुर्वेदिक आदि समस्त ज्ञान परंपरा की उत्पत्तिभूमि सर्वोकृष्ट पुण्य, शक्ति, बुद्धि-ज्ञान के धारक इस विश्व के SUPER SCIENTIST भगवान महावीर के चरणों में वंदन करके आगम विज्ञान विषय के ज्ञान में भीगते हैं...

श्री आचारांग सूत्र

चित्र दर्शन

(1) दर्पण जैसा जीव, **उदाहरण**-मनोरंजन के साधन, व्यसन के साधन,चोरी का निमित्त या वल्गर दृश्य के संग से जीव बिगड़ता है और देव-गुरू-धर्म व ज्ञान के निमित्त को प्राप्त करके जीव बहुत ही अच्छा बनता है। अच्छी साम्रगी- व्यक्ति-माहोल के बीच में रहने से अच्छा बनता है। बूरी साम्रगी-व्यक्ति- माहोल में रहने से बूरा बनता है।

(2) **जिसमें चेतना यानि Feelings (संवेदना) हैं वह जीव है**, उसके भेद यानि की पृथ्वीकाय ,अपकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय , चउरेंद्रिंय, देव, मनुष्य, नरक, तिर्यंच-ये सभी के मूल और पेटा भेद **कुल 563 भेदों** का वर्णन और चैतन्य को साबित करनेवाली भिन्न - भिन्न 10 संज्ञाएँ (मलिन संवेदना) यानि की **आहार, भय, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ** एवं ओघ लोक यह 10 संज्ञा से जीवत्व को अच्छी तरह से साबित करके इसमें दिखाया हे।

(3) किसी भी प्रकार की जीवहिंसा के बिना, भ्रमर की भाँति अल्प अल्प भिक्षाचरी से जीवननिर्वाह करनेवाला तथा पर्यावरण को दूषित किए बिना **Waste Product को Best Product** बनाती निहार व्यवस्थावाला **साधुजीवन** और उससे विरोधी पर्यावरण का संतुलन बिगाडनेवाला **गृहस्थ जीवन**।

प्रकृति के लाभ - नुकशान तथा विज्ञान का पूर्ण स्वरुप यह ग्रंथ सिखाता है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण : 18000 पद

उपलभ्यमान प्रमाण : 2644 श्लोक प्रमाण

प्रथम श्रुतस्कंध : 16 अध्ययन

द्वितीय श्रुतस्कंध : 9 अध्ययन

निर्युक्ति : 356 गाथा

चूर्णि : 8300 श्लोक प्रमाण

श्रीशीलांकाचार्यकृत टीका : 12000 श्लोक प्रमाण

श्रीजिनदेवगणिकृत दीपिका : 8000 श्लोक प्रमाण

श्रीजिनहेमाचार्यकृत दीपिका : 9225 श्लोक प्रमाण

श्री आचारांग सूत्र

1) Positive Atmosphere की Positive Impact
Negative Atmosphere की Negative Impact

आगम विज्ञान

2) जीव के भेद और जीवत्व को साबित करते 10 Emotions

विज्ञान की प्रकृति, प्रकृति का विज्ञान

3) भ्रमर की तरह अन्य को पीडा पहुँचाए बिना आहार (भोजन) व्यवस्थावाला साधु जीवन

पर्यावरण को सानूकुल निहार व्यवस्थावाला साधुजीवन

पर्यावरण को नुकशानकारक निहार व्यवस्थावाला गृहस्थजीवन

हेमघोष

श्री सूयगडांग सूत्र

चित्र दर्शन

(1) एकांत दृष्टि से पदार्थ, व्यक्ति, या संयोग का दर्शन, यह है **नय दर्शन**। संपूर्ण दृष्टि से पदार्थ, व्यक्ति या संयोग का दर्शन, यह है **अनेकांत दर्शन**। जिसको हाथी, घडा, आदमी, मंदिर और घर के दृष्टांत से समजाया है। उदाहरण- कोई एक दृष्टि से आदमी को वो उदार है ,मायावी है , अहंकारी है , क्रोधी है, चोर है, सेवाभावी है यह मानना, वो है **नयदर्शन** ... लेकिन वह आदमी इन सभी विरोधी और विभिन्न गुणदोषों का समन्वय है यह मानना, वो है **अनेकान्तदर्शन**। ... अनेकान्तदृष्टि का स्वीकार करके कोई एक दृष्टि से एक निश्चित द्रव्य ,क्षेत्र,काल एवं भाव के परिप्रेक्ष्य में आदमी को बताना वह है **स्याद्वाद।**

(2) जीव **गलत मान्यता** (मिथ्यात्व), **गलत पक्षपात** (अविरति), **गलत संस्कार** (कषाय), **गलत प्रवृत्ति** (योग) के कारण कर्मबंध करता है।

- गलत मान्यता और गलत प्रवृत्ति से मुक्त होने के बावजूद भी **गलत पक्षपात** (अविरति) जन्य कर्मबंध सतत चालू रहता है। इससे बचने के लिए **विरति** की आवश्यकता है | प्रतिज्ञा सहित पापत्याग करने से अविरतिजन्य यानि गलत पक्षपात जन्य कर्मबंध अटक जाते हैं।
- पानी-बिजली के **Connection** को काट दें तो बिल नहीं आता वैसे,
प्रतिज्ञा से पाप के **Connection** को काट दें तो पाप का बिल नहीं आता वह है **विरति।**
- याद रहे गलत मान्यता , संस्कार , प्रवृति से जन्य कर्मबंध करण - करावण पर निर्भर है, लेकिन गलत पक्षपात से जन्य कर्मबंध करण - करावण - अनुमोदन ये तीन पर निर्भर है।
- **अनेकांतवाद - स्याद्वाद और विरतिवाद विश्व को जिनशासन की अमूल्य भेट है, वह पूर्णदृष्टि और पवित्र ज़िंदगी का संदेश देते हैं ।**

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :
36000 पद
उपलभ्यमान प्रमाण :
2100 श्लोक प्रमाण
प्रथम श्रुतस्कंध :
16 अध्ययन
द्वितीय श्रुतस्कंध :
7 अध्ययन
निर्युक्ति :
205 गाथा
चूर्णि :
9900 श्लोक प्रमाण
श्रीशीलांकाचार्यकृत टीका :
12850 श्लोक प्रमाण
श्रीजिनदेवगणिकृत दीपिका :
6600 श्लोक प्रमाण
श्रीजिनहेमाचार्यकृत दीपिका :
10000 श्लोक प्रमाण

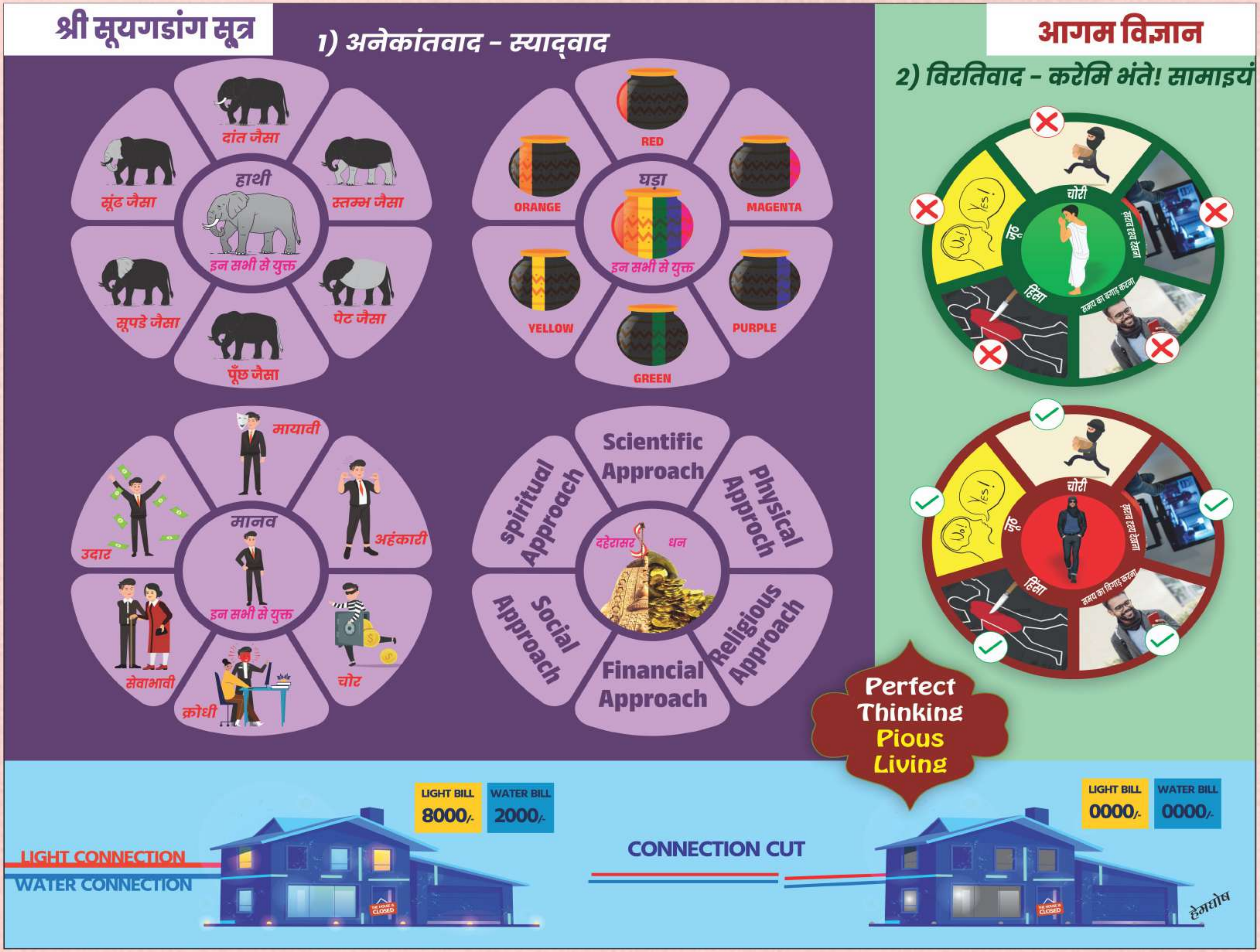

श्री सूयगडांग सूत्र
1) अनेकांतवाद - स्याद्वाद
हाथी
इन सभी से युक्त
दांत जैसा
स्तम्भ जैसा
पेट जैसा
पूँछ जैसा
सूपडे जैसा
सूंढ जैसा
घड़ा
इन सभी से युक्त
RED
MAGENTA
PURPLE
GREEN
YELLOW
ORANGE
मानव
इन सभी से युक्त
मायावी
अहंकारी
चोर
क्रोधी
सेवाभावी
उदार
देहेरासर
धन
Scientific Approach
Physical Approch
Religious Approach
Financial Approach
Social Approach
Spiritual Approach
आगम विज्ञान
2) विरतिवाद - करेमि भंते! सामाइयं
चोरी
गलत दृश्य देखना
समय का बिगाड़ करना
हिंसा
झूठ
Yes!
चोरी
गलत दृश्य देखना
समय का बिगाड़ करना
हिंसा
झूठ
Perfect Thinking
Pious Living
LIGHT BILL
8000/-
WATER BILL
2000/-
LIGHT CONNECTION
WATER CONNECTION
CONNECTION CUT
LIGHT BILL
0000/-
WATER BILL
0000/-
हेमघोष

श्री ठाणांग सूत्र

चित्र दर्शन

1 से 10 के अंकों का व्यवहारू उपयोग करके जीवन में ज्ञान और प्रेम की वृद्धि करनी ही चाहिए, यह इस ग्रंथ का संदेश है।

(1) परमात्मा, देव, मनुष्य, नारकी, तिर्यंच सभी का **आत्मा एक ही जैसा है।**

(2) प्रभु ने श्रवण और आचरण दो प्रकार के धर्म दिखाये हैं। गुरु निश्रा में प्रभु आज्ञा को जानना वह है **श्रवणधर्म** और उसके मुताबिक खुदका जीवन बनाना वह है **आचरणधर्म।**

(3) प्रभु ने **कर्म पुरुष** (**पुरुषार्थ** से अन्य को आगे बढानेवाले), **भोग पुरुष** (**पुण्य** से अन्य को आगे बढानेवाले) और **धर्मपुरुष** (**पवित्रता** से अन्य को आगे बढानेवाले)... वैसे तीन भेद पुरुष के दिखाए हैं। इसमें परोपकार ,प्रेम और पुरुषार्थ जिसमें हैं वह पुरुष है ऐसा प्रतिपादित हो रहा है।

(4/5) शरीर मन की मलिनता की चतुभँगी 4 प्रकार के पुरुष दिखाए हैं। शरीर की उज्जवलता यह **भौतिकजगत** है। लेकिन मन की उज्जवलता वही **अध्यात्मजगत है।** अध्यात्मजगत में आपके स्थान के मुताबिक कर्मबंध होता है।

- पाँच प्रकार की शुद्ध करनेवाली एवं शुद्ध होनेवाली चीज दिखाई है। अध्यात्मजगत में शुद्धि का बहुत बड़ा मूल्य है, **ब्रह्मचर्य से आत्मा** शुद्ध होता है, **मंत्र से मन** शुद्ध होता है, इन दोनों का ज्ञान आध्यात्मिक विकास का पथ दिखाता है।

(6/7/8) छ प्रकार की **हड्डीओं की रचना** (संघयण), चक्रवर्ती के 7 (पंचेन्द्रिय) **एकेन्द्रिय रत्न** - मतलब पुण्य से प्राप्त हो रही शरीर की विशिष्ट रचना यानि एकेन्द्रिय (एवं पंचेन्द्रिय) के भव में भी **उत्कृष्ट सौभाग्य के उदयवाले** एवं जिससे 2000 देवता का सान्निध्य प्राप्त हो वैसे 7 रत्न तथा अष्टविध भोजन के प्रकार दिखाए हैं।

(9/10) चक्रवर्ती की **9 निधि** और **10 प्रकार** के भवनपति देव (जो रत्नप्रभा पृथ्वी के बीच के 178000 योजन पट में 7 क्रोड 72 लाख भवनों के मालिक हैं) वह दिखाए हैं।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण : 72000 पद

उपलभ्यमान प्रमाण : 3600 श्लोक प्रमाण

अध्ययन : 10 अध्ययन

श्री अभयदेवसूरिकृत टीका : 14250 श्लोक प्रमाण

श्री नागर्षिगणिकृत दीपिका : 18000 श्लोक प्रमाण

श्री ठाणांग सूत्र
1) आत्मा एक जैसा है (एगे आया)
4) जीव के 4 प्रकार -
उज्जवल शरीर मलिन मन
मलिन शरीर उज्जवल मन
उज्जवल शरीर उज्जवल मन
मलिन शरीर मलिन मन
8) आठ प्रकार के भोजन
आगम विज्ञान
प्रिय अशन, पान-खादिम, स्वादिम
अप्रिय अशन, पान-खादिम, स्वादिम
2) धर्म के 2 प्रकार
1) श्रवण धर्म
2) आचरण धर्म
5) पांच प्रकार के पवित्र द्रव्यों
मिट्टी
पाणी
अग्नि
मंत्र
ब्रह्मचर्य
बरतन को शुद्ध करे
वस्त्र को शुद्ध करे
धातुओं को शुद्ध करे
मन को शुद्ध करे
आत्मा को शुद्ध करे
9) चक्रवर्ती के 9 निधि
1. नैसर्प निधि
महानिधान मंजूषा
4. सर्वरत्न निधि
5. महापद्म निधि
6. काल महानिधि
7. महाकाल निधि
9. शंख निधि
3) पुरुष के 3 प्रकार -
PRACTICAL WISDOM THROUGH MATHS
धर्म पुरुष = पवित्र
भोग पुरुष = पुण्य
कर्म पुरुष = पुरुषार्थ
6) 6 प्रकार की हड्डीओं की रचना (संघयण)
वज्रऋषभ नाराच
ऋषभनाराच
नाराच
अर्ध नाराच
कीलीका
सेवार्त
10) भवनपति के 10 प्रकार के देवों
7) चक्रवर्ती के 7 एकेन्द्रिय रत्नों
चक्रवर्ती के 14 रत्न
एकेन्द्रिय रत्न
चक्र
2 छत्र
3 चर्म
4 दंड
5 असि
6 मणि
7 काकिणी रत्न
हेमघोष

श्री समवायांग सूत्र

स्वरूप दर्शन

प्रमाण : 144000 पद

उपलभ्यमान प्रमाण : 1667 श्लोक प्रमाण

विभाग : 160 समवाय

श्री अभयदेवसूरिकृत टीका : 3575 श्लोक प्रमाण

चित्र दर्शन

अंकों का उपयोग करके विश्वदर्शन करने का बेहतरीन प्रयास इस ग्रंथ में है।

(1/2) प्रभु समवसरण में बिराजमान होके अंक के माध्यम से पूरे ब्रह्मांड (14 राजलोक) को दिखा रहे हैं।

- प्रभु के समवसरण की रचना अद्भूत एवं आश्चर्यकारी होती है | **समवसरण स्तव** आदि ग्रंथो में दिखाए नाप के अनुसार यह काल्पनिक चित्र है | इसके मुताबिक सभी गढ़ आपस में जुड़े हुए न रहते प्रभु के अतिशय के प्रभाव से **केवल आकाश में स्थित होते हैं** | दोनों गढ़ के बीच में क्रमशः 5000 -5000 सोपानों की **सोपानश्रेणी** भी **आकाश में स्थित** होती है | 500 धनुष्य उँचाईवाला चाँदी का - सोने का - रत्नों का गढ होता है ,उसके बीच में वीतराग परमात्मा बैठकर धर्मदिशना देते हैं। गणितानुयोग के आधार पर परमात्मा विश्वदर्शन करवाते हैं। एक से लेकर सो, हजार, लाख... संख्यात, असंख्यात, पल्योपम, सागरोपम, एककोड़ाकोड़ि सागरोपम तक की संख्या के आधार सेलोक-अलोक का ज्ञान परमात्मा ने दिया, वह इस पवित्र आगम में समाविष्ट है।

श्री समवायांग सूत्र

आगम विज्ञान

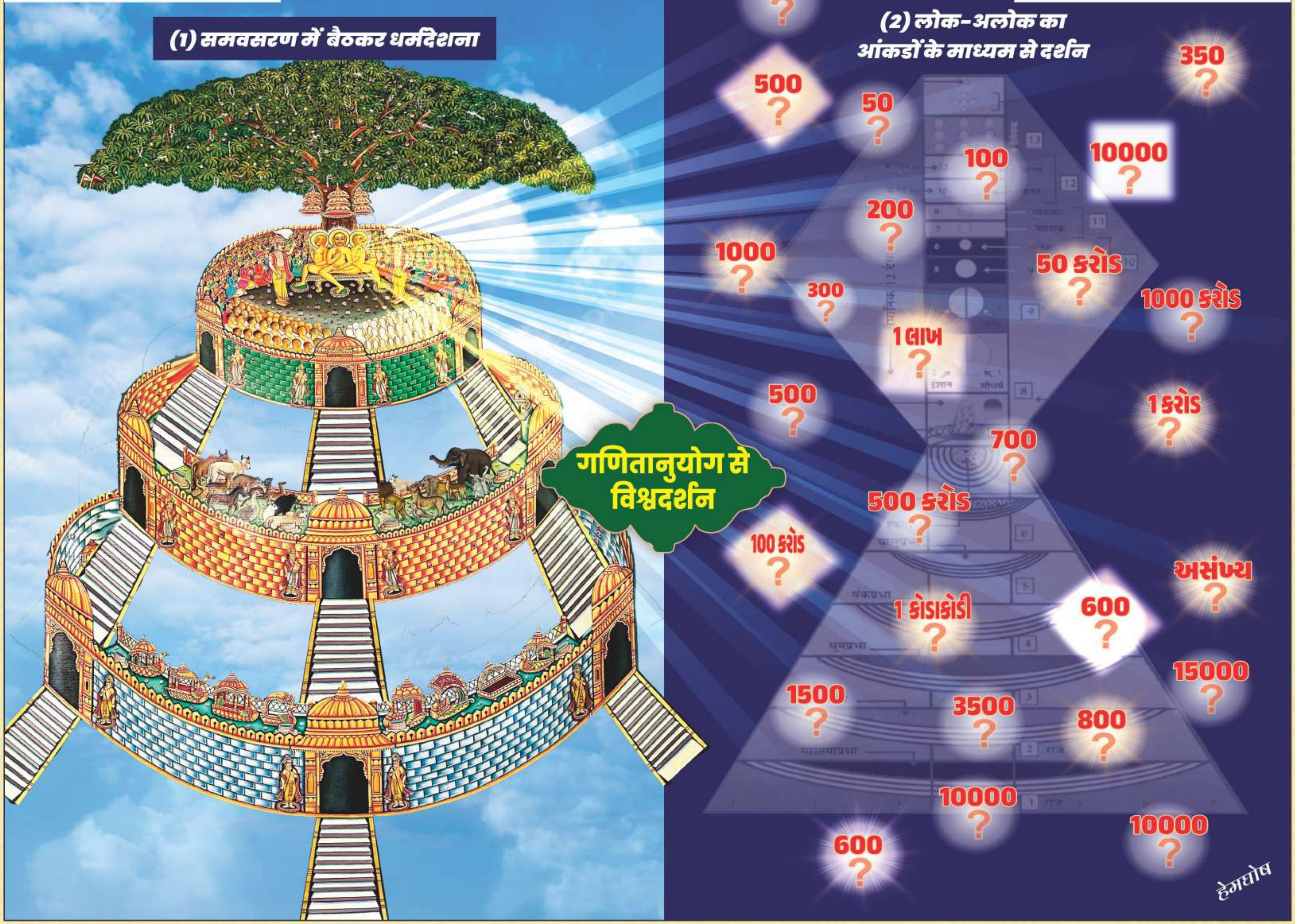

श्री भगवती सूत्र

चित्र दर्शन

शुध्द जिज्ञासा - आध्यात्मिक उत्थान का आधार है, यही इस ग्रंथ का संदेश है।

(1) प्रभु महावीर के समवसरण में आकर के देव, साधु, साध्वीजी, श्रावक, श्राविका तथा अजैन संन्यासी द्वारा पूछे गए सभी प्रश्नों के उत्तर इसमें हैं, मुख्यतया गौतमस्वामिने पूछे प्रश्न और प्रभु के दिए गए समाधान इसमें है। प्राचीनकाल में **करीबन 36000** प्रश्नों के उत्तर इसमें थे।

(2) **जयंती श्राविका** ने प्रभु को पूछा - हे भगवंत! **कौन से जीव सोते भले ? कौन से जीव जागते भले ?** प्रभुने दिया हुआ समाधान कीतना मार्मिक था। **जीवन स्व और पर दोनों को सुख देने के लिए है।** जो स्व और पर के सुख के लिए महेनत करे उसका जागना ही सार्थक व लाभकारी है।

(3) **जयंती श्राविका** ने दूसरा भी एक प्रश्न पूछा की भगवंत जीवका कर्म भार कैसे बढता है और कर्म भार हल्का कैसे होता है ? तो प्रभु बताते है **पाप से, दुर्वृत्ति से, दुर्गुण से कर्मभार बढ़ता है। धर्म से, सद्गुण से कर्मभार कम होता है।** धर्म करने से मलिन आत्मा क्रमशः उज्ज्वल और पाप करने से उज्ज्वल आत्मा क्रमशः मलिन हो रही है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण : 288000 पद 10000 उद्देशा
उपलभ्यमान प्रमाण : 15752 श्लोक प्रमाण
विभाग : 41 शतक - 10000 उद्देशा
चूर्णि : 3114 श्लोक प्रमाण
अवचूर्णि : 2800 श्लोक प्रमाण
श्री अभयदेवसूरिकृत टीका : 18616 श्लोक प्रमाण
श्री मलयगिरिसूरिकृत टीका : 3750 श्लोक प्रमाण
श्री दानशेखरसूरिकृत टीका : 12920 श्लोकप्रमाण
श्री हर्षकुलगणिकृत बीजक : 490 श्लोक प्रमाण

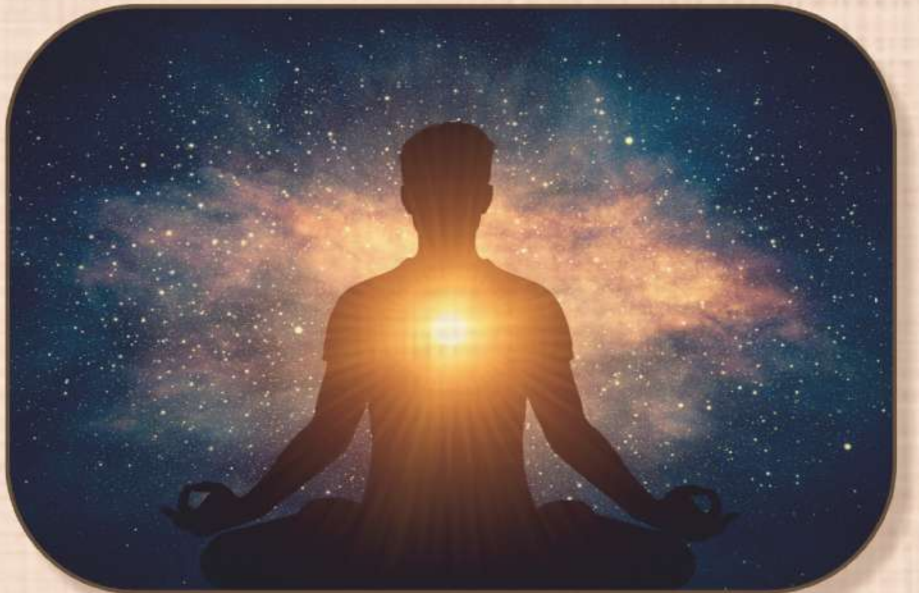

श्री भगवती सूत्र

आगम विज्ञान

1 प्रभु से प्रश्न पूछकर जिज्ञासा का संतोष

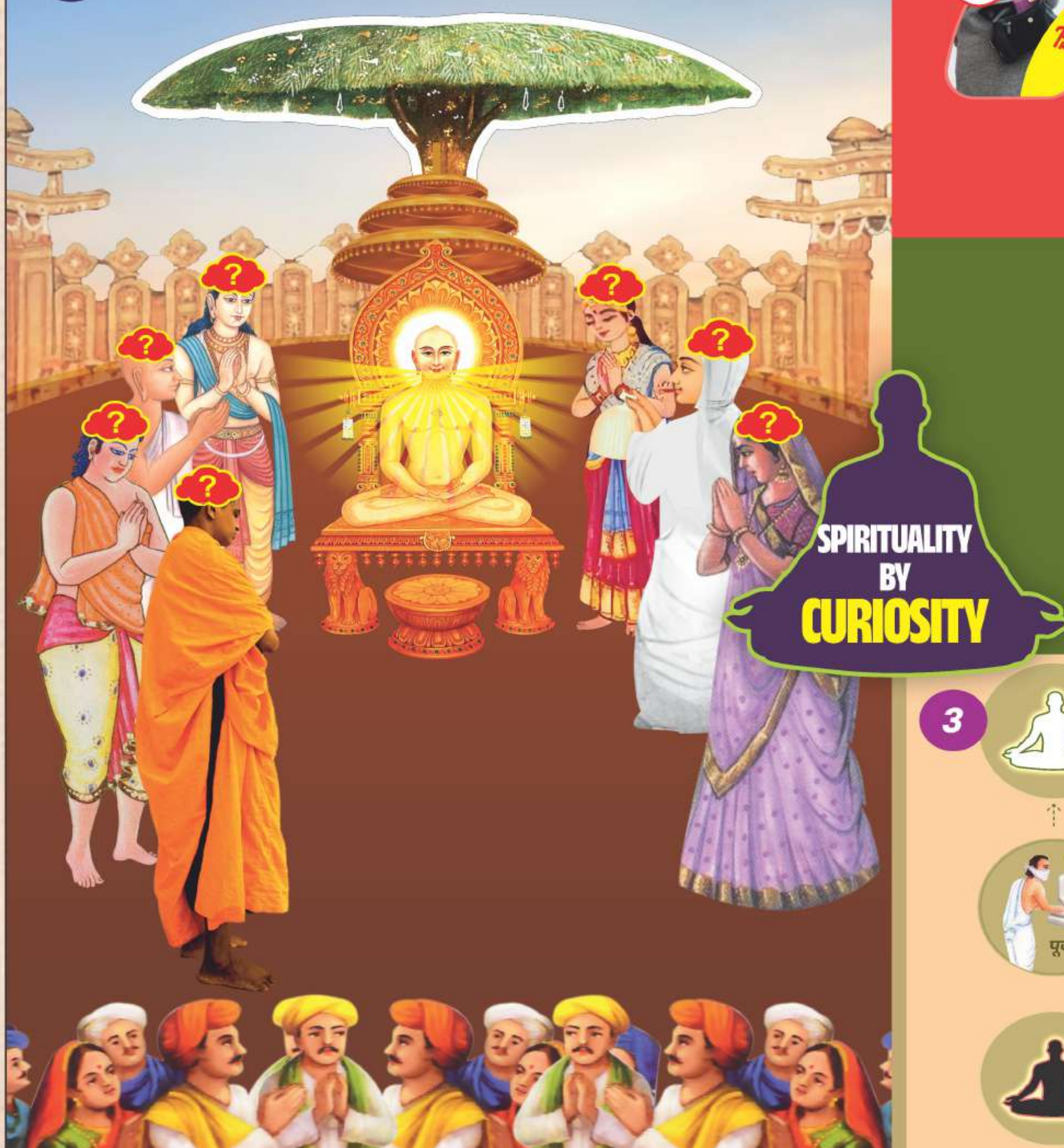

2

अधर्मीओ
सोते भले

धर्मीओ
जागते
भले

3

धर्म से घटता
कर्मभार

पाप से बढ़ता
कर्मभार

हेमघोष

श्री ज्ञाताधर्मकथा सूत्र

चित्र दर्शन

कथाओं से बने इस ग्रंथ में भिन्न-भिन्न उपदेश हैं - संयम, समज, समय और स्वीकार की महत्ता इसमें दिखाई है।

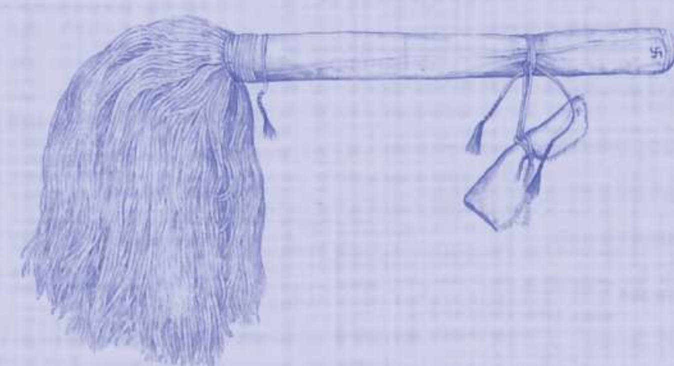

(1) संयमवान कछुआ बच जाता है, असंयमवान कछुआ लोमड़ी का शिकार बन जाता है, वैसे ही **संयमवान** साधु / गृहस्थ का विकास होता है, **असंयमवान** साधु/गृहस्थ का विनाश होता है।

(2) श्वसुर के पास से मिले चाँवल (डांगर) के 5 दाने का जिसने जो उपयोग किया उसके अनुसार उसका स्थान घर में तय हुआ.. एक ने चावल को **फैंक दिया**,एक ने **खा लिया**, एक ने संभालकर **रख दिया**, एक ने ज़मीन में **बो दिया**, यह जानकर श्वसुर ने क्रमशः **सफाई की, रसोईगृह की, तिजोरि की, पूरे गृह** की मालिकी सोंप दी इसलिए बोला जाता है,
"जैसी सोच वैसा स्थान" यह याद रखना चाहिए।

(3) शुक्लपक्ष में चन्द्र बढ़ता है, कृष्णपक्ष में चन्द्र कम होता है वैसे ही **अप्रमत्त (समय का सदुपयोग करनेवाले)** शुक्लपक्ष के चांद की भाँति बढ़ते हैं , प्रमत्त (समय का दुरुपयोग करनेवाले) कृष्ण पक्ष के चाँद की भाँति कम होती है।

(4) समुद्र के बीच-टापु पर **दावद्रव** वृक्ष होते हैं , टापु और समुद्र से बहुत पवन आने से वह विकसित होते हैं। जिस ओर से पवन न आए वहाँ से सूखते हैं। वैसे सज्जन व दुर्जन के **वचन परिसह रूपी पवन** को स्वीकारने वाले साधु की साधुता **पूर्णतया** निखरती है, सज्जन के वचन परिसह को न सहे तो **बहुभाग**, दुर्जन के वचन परिषह को न सहे तो **अल्पभाग**, दोनों को न सहे तो **पूर्णतया** साधुता मुरझा जाती है। इन्हें शास्त्रीय परिभाषा में क्रमशः **सर्वआराधक, देशआराधक, देशविराधक, सर्वविराधक बोले जाते हैं।**

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :
576000 पद
उपलभ्यमान प्रमाण :
5400 श्लोक प्रमाण
प्रथम श्रुतस्कंध :
ज्ञाता-19 अध्ययनो
द्वितीय श्रुतस्कंध :
धर्मकथा-10 वर्गों
श्री अभयदेवसूरिकृत टीका :
3800 श्लोक प्रमाण

श्री ज्ञाताधर्म कथा सूत्र
आगम विज्ञान
1)
संयमित इन्द्रिय, असंयमित इन्द्रिय से
जीवतदान और सजा ए मौत
असंयमित कछुआ
संयमित कछुआ
3) चावल का दान -
चावल स्वीकार
चावल फेकना
चावल खाना
चावल संभालना
चावल बोना
सोच के मुताबिक कार्य, कार्य के मुताबिक परिणाम
Control
Thinking
Power of
Working
Acceptence
2) अप्रमत्त जीवन याने
समय का सदुपयोग
प्रमत्त जीवन याने
समय का दूरुपयोग
शुक्ल पक्ष के चांद जैसा बढ़ता जीवन
कृष्ण पक्ष के चांद जैसा घटता जीवन
TIME UTILISE
TIME INVEST
TIME PASS
TIME WASTE
4) सज्जन
(कषाययुक्त)
दुर्जन
(कषाययुक्त)
!*&^%
!*&^%
सर्वआराधक
देशविराधक
देशआराधक
सर्वविराधक

श्री उपासकदशांग सूत्र

चित्र दर्शन

प्रभु ने अपवादिक रूप में दिखाया हुआ आदर्श श्रावकजीवन और 10 आदर्श श्रावक का वर्णन इसमें है।

(1) प्रभु के परमभक्त ऐसे आनंद, कामदेवादि 10 श्रावक, जिसने संसार में आदर्शभूत जीवन जीया।

(2) आदर्श श्रावक के 4 आधार हैं जो चित्र में दिखाए हैं। यहाँ जो बात है वह 4 थे गुणस्थानक स्थित श्रावक की है। यहाँ संपत्ति का महत्व है ऐसी बात नहीं है, लेकिन **संपन्न** होने के बावजूद जो सज्जनों को **स्वीकृत** और मोक्षमार्ग के **साधक** है, उसकी ही महत्ता है। **परिवार से सुशोभित** होने के साथ जो **गुण से सुशोभित** होता है उसकी ही महत्ता है।

(3) **संसार को परिमित** करने हेतु न करने जैसे 15 प्रकार के व्यवसाय **(कर्मादान)**। संपन्नता के लिए बहुत बड़ा आरंभ - समारंभ करने की भावना ही सच्चे श्रावक को नहीं होती इसलिए वह ये सभी पापप्रवृत्तियों का अवश्य त्याग करते हैं।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण : 1152000 पद

उपलभ्यमान प्रमाण : 812 श्लोक प्रमाण

श्री अभयदेवसूरिकृत टीका : 800 श्लोक प्रमाण

श्री उपासक दशांग

1) प्रभु वीर के अग्र 10 श्रावक

आनंद कामदेव चुलनीपिता सुरादेव चुल्लशतिक नंदिनीपिता महाशतक सद्दाळपुत्र कुंडगोलिक लांतकापिता (सालिहीपिता)

आदर्श श्रावक जीवन

2) आदर्श श्रावक

संपन्नता

सुशोभितता

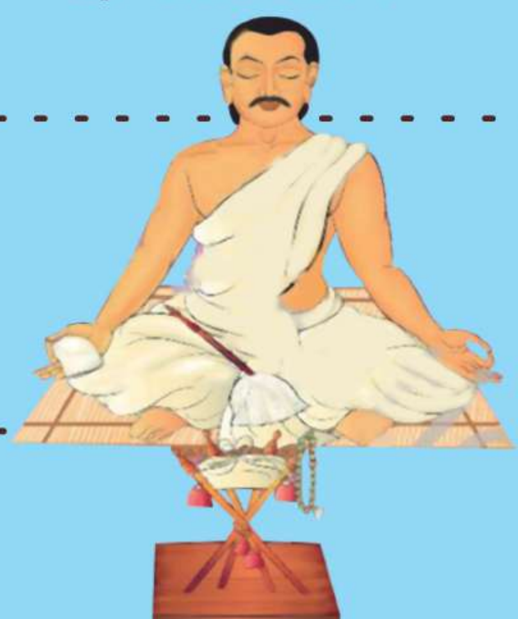

साधकता

स्वीकृतता

आगम विज्ञान

3) न करने जैसे 15 प्रकार के व्यवसाय

1) इंट का भट्ठा

2) वृक्ष काटना

3) वेहिकल बनाना

4) माईनींग

5) किराए पे देना

6) हाथी दांत

7) लाख

8) दारू का धंधा

9) हथियार

10) चमड़े या चमरीगाय के बाल

11) मशीनरी

12) पशुओ के अवयय काटना

13) आग लगाना

14) सरोवर खाली करना

15) वेश्यागमन

हेमघोष

श्री अंतकृतदशांग सूत्र

चित्र दर्शन

साधना में सतत प्रयत्नशील जीव को जीवन के अंतिम पल में भी एक ही साथ केवलज्ञान व मोक्षसुख प्राप्त होता है वैसे 92 आत्माओं की कथाएँ इसमें हैं।

(1) आयंबिल नाम के तप के प्रभाव से 12 साल तक द्वेषी बना द्वैपायन देव द्वारिका नगरी को जला न सका, लेकिन तप में प्रमाद करने से संपूर्ण नगरी को द्वैपायन देव ने जला दिया।

- दारू के कारण तथा द्वैपायन देव के श्राप से आग में जल रही विराट द्वारिका नगरी और 56 करोड यादव प्रजा जलती रही।

(2) साधना करते - करते जीवन के अंतिमपल में केवलज्ञान व मोक्ष जिसको मिले वह है **अंतकृत् केवली।** इसग्रन्थमें अईमुत्ताजी को अंतकृत् केवली बताया है। इसमें दीक्षा से पहले माँ - बाप को अइमुत्ताजी ने दिया हुआ मार्मिक संदेश- **"मौत आनेवाली है यह जानते हुए भी, कब आएगी यह मालूम नहीं है और किस कर्म से नरकादि गति में जाते हैं उससे अनजान होते हुए भी खुद के बूरे कर्मों से ही नरक आदि में जाते हैं वह तो सब दिखाया है।"**

(3) अंतिम समय में अणसण व समाधि से उपसर्ग सहने से समाधिमरण, केवलज्ञान व निर्वाण सुख की प्राप्ति होती है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण : 2304000 पद

उपलभ्यमान प्रमाण : 790 श्लोक प्रमाण

विभाग : 8 वर्ग, 92 अध्ययन

श्री अभयदेवसूरिकृत टीका : 400 श्लोक प्रमाण

श्री अंतकृतदशांग सूत्र
1) दारू, अग्नि, द्वैपायनदेव के श्राप से द्वारिका का नाश
दारू
आग
द्वैपायनदेव
द्वारिका नगरी
जीवन की अंतिम पल में साधना का अंतिम फल
आगम विज्ञान
2)
जे जाणु ते नवि जाणु
नवि जाणु ते जाणु
तिर्यंच का दुःख
नरक का दुःख
3)
अणसण से समाधिमरण
हेमघोष

श्री अनुत्तरोपपातिकदशांग सूत्र

चित्र दर्शन

साधना का अंतिम फल सिद्धि है लेकिन समृद्धि रूप फल भी By Product (आनुषंगिक) मिल ही जाता है वैसी 33 कथाएँ इस ग्रंथ में है।

(1) प्रभुवीर द्वारा सर्वश्रेष्ठ अणगार रूप में घोषित स्वादविजेता, घोरसाधक धन्ना अणगार का गृहस्थाश्रम में 32 पत्नियों के साथ 32 एकदंड महल से घिरे अतिवैभवी महल में स्वर्गीय सुख का भोग,

- संयम जीवन में छट्ठ के पारणे छट्ठ, पारणे में आयंबिल और मक्खी को भी नापसंद ऐसा भोजन स्वीकार...
- अतिउत्कृष्ट भोगजीवन को छोड़ अतिउत्कृष्ट त्यागजीवन को स्वीकारनेवाले धन्नाजी के **सत्व,संयम,सहिष्णुता** की परिणति को देखकर ही प्रभु ने 14000 शिष्यो में सबसे श्रेष्ठ अणगार घोषित किया।

(2) धन्ना मुनि और दूसरे 32 मुनियों को श्रेष्ठ साधना के कारण संसार के श्रेष्ठ भौतिक सुख के धाम अनुत्तर देवलोक की प्राप्ति, पुनः महाविदेह में मनुष्य बनके निर्मल संयमजीवन की प्राप्ति और मोक्ष सुख की प्राप्ति।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण : 4608000 पद

उपलभ्यमान प्रमाण : 192 श्लोक प्रमाण

विभाग : 3 वर्ग, 33 अध्ययन

श्री अभयदेवसूरिकृत टीका : 100 श्लोक प्रमाण

श्री अनुत्तरोपपातिक दशांग सूत्र

आगम विज्ञान

1) 32 पत्निओं के महेल के बीच में रहे भोगी धन्ना कांकदी का भोग जीवन

2)

3)

साधना से समृद्धि और सिद्धि

प्रभु के 14000 श्रमणोमें सबसे उत्कृष्ट परिणाम वाले धन्ना अणगार की छठ-आयंबिल की अपूर्व साधना

हेमघोष

श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र

चित्र दर्शन

विवेक - विद्या - मंत्रों के भंडार तुल्य यह आगम ग्रंथ है।

(1) देव अधिष्ठायक हो वह मंत्र है, देवी अधिष्ठायिका हो वह विद्या है। प्राचीनकाल में इस ग्रंथ में देवों को वश करने की, उनके साथ संवाद करने की पद्धतियाँ भी थी। जिसके स्मरण मात्र से देव-देवी प्रसन्न हो कर संघ को सहाय करते थे। इसमें 108 प्रश्ना - प्रश्न विद्यातिशय की माहिती है।

(2) **अनादिकाल से स्त्री और संपत्ति के कारण ही बड़े-बड़े युद्ध हुए हैं।** उदाहरण सीताजी, द्रौपदी, पद्मावती आदि।

इसीलिए प्रभु ने परिग्रह को (धन की मूर्च्छा को) सबसे बड़ा पाप बताया है। स्त्री - पुरुष के प्रति आसक्ति यानि मैथुन भी मूर्च्छा स्वरुप होने से परिग्रह आत्मक ही है।

(3) हिंसा, झूठ, चोरी, अब्रह्म, परिग्रह तथा अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, संतोष का स्वरूप दिखाने के साथ **ब्रह्मचर्य की 32 उपमाएँ दी हैं।** जैसे अवकाश में चंद्र श्रेष्ठ है, मणि में वैडूर्य, आभूषण में मुकुट, पुष्प में कमल, पर्वत में मेरु श्रेष्ठ है वैसे व्रत में ब्रह्मचर्य सबसे श्रेष्ठ है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण : 18432000 पद

उपलभ्यमान प्रमाण : 1300 श्लोक प्रमाण

पूर्वविभाग : 108 प्रश्न, 108 अप्रश्न, 108 प्रश्नाप्रश्न

उपलभ्यमान विभाग : 5 आश्रव, 5 संवर

श्री अभयदेवसूरिकृत टीका : 4600 श्लोक प्रमाण

श्री नयविमलगणिकृत टीका : 7500 श्लोक प्रमाण

श्री प्रश्न व्याकरण अंग/सूत्र

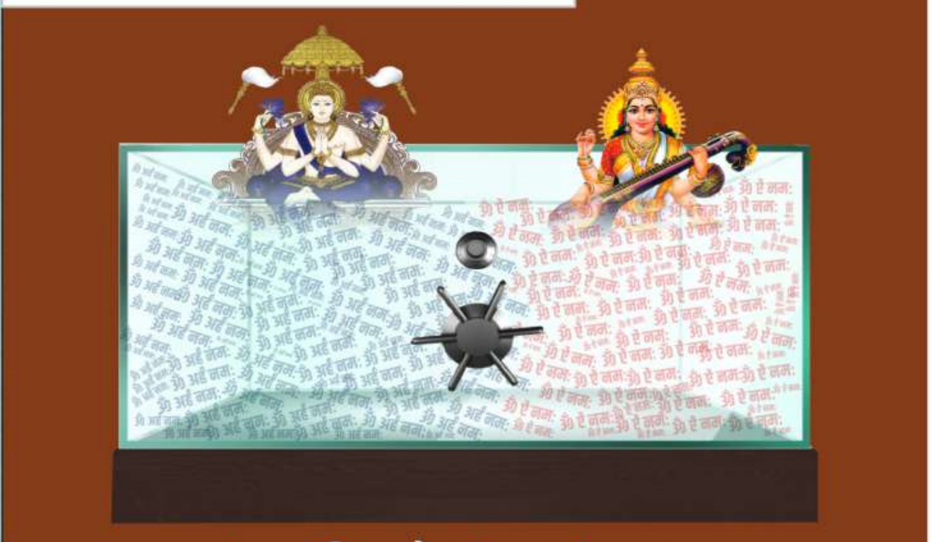

1) गुप्त विद्या और मंत्र का संग्रहस्थान

विद्याओ का भंडार
प्राचीन प्रश्न व्याकरण
विवेक का भंडार
वर्तमान प्रश्न व्याकरण

2) स्त्री और धन के कारण युद्ध

आगम विज्ञान

श्री विपाक सूत्र

चित्र दर्शन

जीवन में सुख की चाबी पुण्य और धर्म है। दुःख की चाबी पाप है।
इसमें पुण्य के फल और पाप के फल को दिखानेवाली रोचक कथाएँ हैं। धर्म करनेवाले 10 पुण्यात्मा और पाप करनेवाले 10 जीवों का चरित्र प्रभुने इस ग्रंथ में दिखाया है। जिससे पाप एवं दोषों का खौफ और गुण एवं धर्म का प्रेम बढ़ता है।

(1) जीवन में सुकृत, सेवा, सदाचार है तो मनुष्यभव एवं देवभव के सुख प्राप्त होते हैं।

(2) जीवन में हिंसा, झूठ, स्वार्थ है तो तिर्यंचभव एवं नरकभव के दुःख प्राप्त होते हैं।

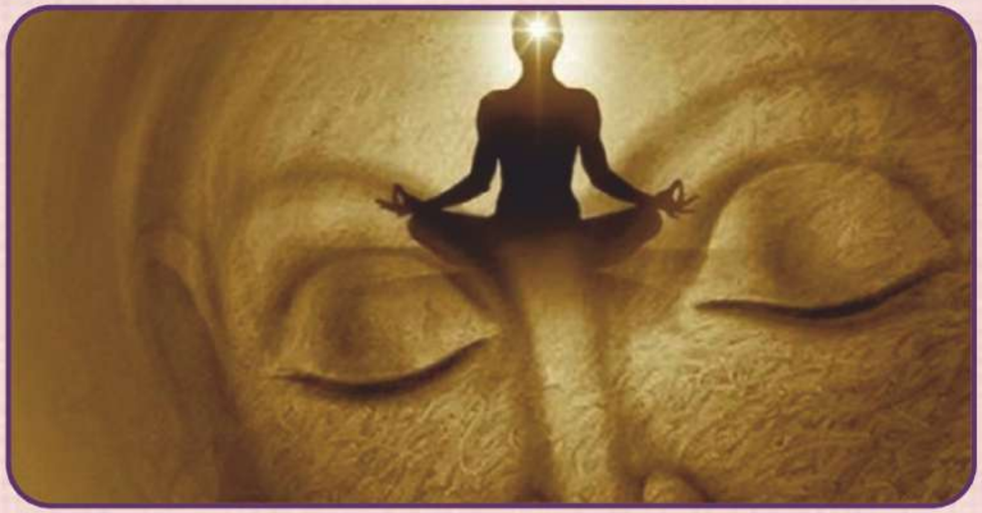

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :
36864000 पद
उपलभ्यमान प्रमाण :
1250 श्लोक प्रमाण
विभाग :
2 श्रुतस्कंध, 20 अध्ययन
श्री अभयदेवसूरिकृत टीका :
9000 श्लोक प्रमाण

श्री विपाक सूत्र
आगम विज्ञान
1) पुण्य का फल सुख
2) पाप का फल दुःख
जीवदया
सामायिक
धूम्रपान
मारामारी
स्वाध्याय
देवलोक
सुख और दुःख की चाबी
नरक
शेर मार्किट
सेवा
प्रभु पूजा
जुगार
शिकार
हेमघोष

श्री औपपातिक सूत्र

चित्र दर्शन

पाप करनेवाला दुःखी, धर्म करनेवाला सुखी और अध्यात्म में मग्न बननेवाला मुक्ति को पाता है।

(1) साधु की 22 उपमाएँ इसमें दी गई हैं। अरिहंत वंदनावली की स्तुति में आ रहे "कुंजर समा शुरवीर जे छे" ऐसे काफी सारे पद का मूल यह ग्रंथ है। **साधु दुनिया में सबसे मूल्यवान -गुणवान -पुण्यवान तत्व हैं**, यह दिखाने के लिए दुनिया में सबसे उत्कृष्ट जो जो सामग्री हैं उसकी उपमा साधु को दी है।

(2) देवलोक में उपपात (जन्म), अभिषेक, वस्त्र-अलंकार परिधापन, व्यवसाय और वहीवटीय कार्य कैसे, कहाँ होता है वह दिखाया है।

(3) **जंगल का भील राजमहल के सुख का अनुभव कर सकता है लेकिन जंगल की सामग्री की उपमा से कभी भी राजमहल के अलौकिक सुख को नाप नहीं सकता ,वैसे ही सिद्ध भगवंत मोक्षसुख का, आत्मिकसुख का अनुभव करते हैं, लेकिन कभी भी भौतिक साधन व सुख से उसकी उपमा नहीं दे सकते हैं।**

जैसे राजमहल के सुख के सामने जंगल की सामग्री व सुख नगण्य या तुच्छ है,

वैसे ही मोक्ष सुख व आत्मिक सुख के सामने भौतिक सामग्री व सुख नगण्य या तुच्छ है।

इसी लिए सभी भौतिक चीजों की उपमा से भी मोक्ष सुख को नापना नामुमकीन है, भौतिक साधन की उपमा से मुक्ति सुख का अनुभव नहीं होता है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :
1164 पद
विभाग :
43 सूत्रो, 225 पद्यो
श्री अभयदेवसूरिकृत टीका :
3125 श्लोक प्रमाण

श्री औपपातिक सूत्र

आगम विज्ञान

1) भगवान के श्रमणों की 22 उपमाएं

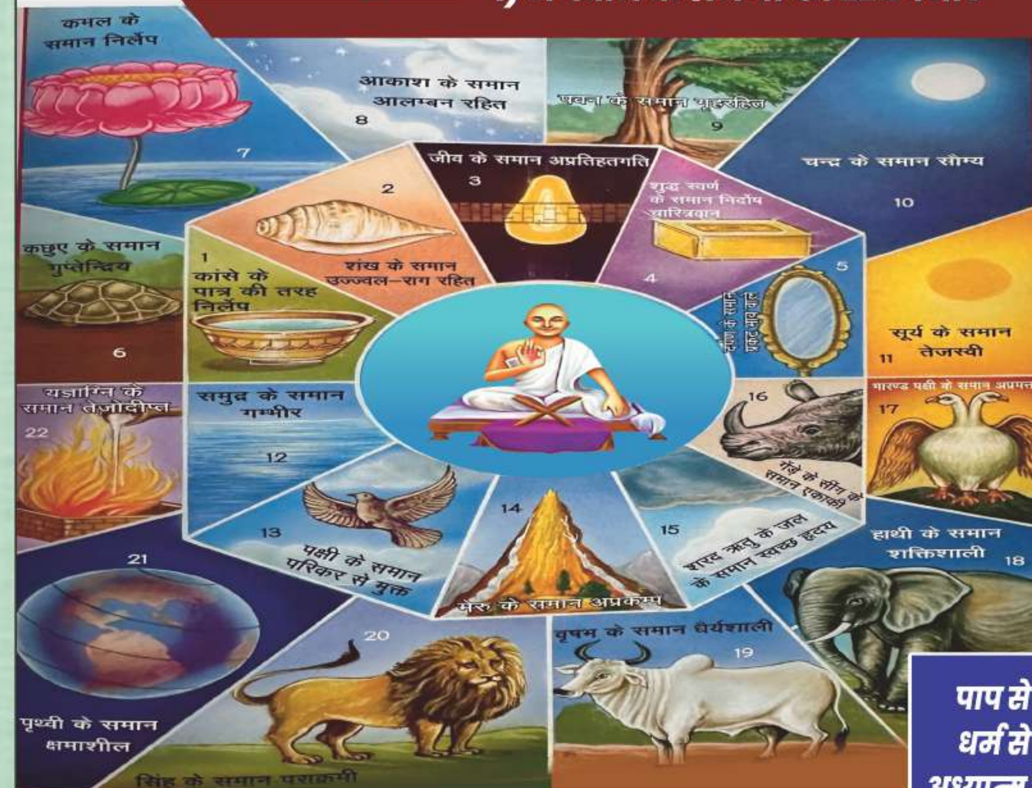

2) देवो की पांच सभाए

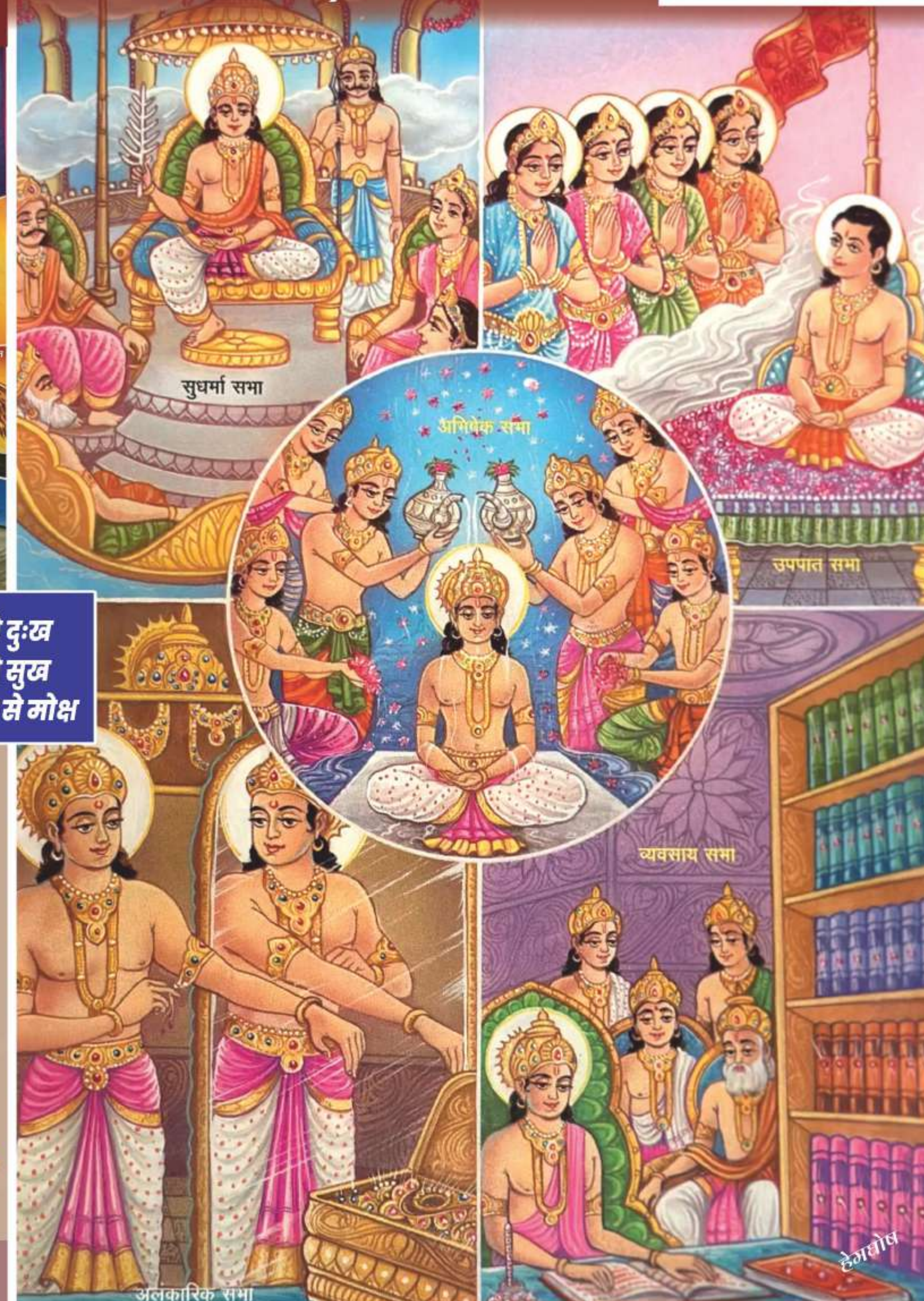

पाप से दुःख
धर्म से सुख
अध्यात्म से मोक्ष

3) भौतिक सुख-सामग्री की उपमा रहित मोक्ष का अनुपम सुख

श्री राजप्रश्नीय सूत्र

चित्र दर्शन

आत्मा, कर्म, परलोक विषयक संवाद इस ग्रंथ का मुख्य विषय है।

(1) प्रभु के वचनानुसार ध्वनि, वज़न, प्रकाश आदि के द्रष्टांत से नास्तिक मत का खंडन करके आत्मा, पुण्य, पाप, देवलोक-नरक की सिद्धि केशी गणधर प्रदेशीराजा को देते हैं।

केशी गणधर के प्रत्युत्तर से संतुष्ट प्रदेशीराजा धर्म स्वीकार करके दूसरे भव में सूर्याभदेव बनकर प्रभु की नृत्यभक्ति करता है।

- सम्यक्त्व के प्रभाव से पूर्व के नास्तिक प्रदेशी राजा को सद्गगति मिली। खुद की अतिप्रिय पत्नी सूर्यकांता ने ही उनको मार डाला, फिर भी प्रदेशी की समाधि टिक गई, यह ताकत सम्यक्ज्ञान की है।
- सूर्याभ देवने 32 प्रकार के नाटक से प्रभु की उत्कृष्ट नृत्यभक्ति की।

(2) 4 प्रकार के व्यवहारी हैं - **उदारता और मीठाश की चतुभँगी से प्रेम और पुरूषार्थ बढाने का मार्ग दिखाया है।**

(3) चार मित्र - कमाने के लिए परदेश - रास्ते में क्रमशः लोहा, चांदी, सोना और रत्न की खदान मिली - एक ने प्रथम मिला लोहा पकडकर रखा - बाकी ने अधिक कीमती तत्त्व मिलने पर अल्प कीमती छोड़ दिया - अंत में रत्न को स्वीकारा -उसी तरह **गलत मान्यता छोडकर हितकर सत्य मान्यता स्वीकारने से जीवतत्व का विकास होता है।**

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :

2076 श्लोक प्रमाण

विभाग :

85 सूत्रो

श्री मलयगिरिसूरिकृत टीका :

3700 श्लोक प्रमाण

श्री राजप्रश्नीय सूत्र
1) जीव, पुण्य, पाप, नरक, देवलोक की साबिती भिन्न-भिन्न तरीके से देते तीर्थंकर भगवंत
आगम विज्ञान
आत्मा
नारक
पुण्य
देवलोक
पाप
ध्वनि के तरंग
वजन
प्रकाश
तीर्थंकर भगवंत
Life
Logic of
Love
PROGRESS
2) चार प्रकार के जीव
हाथ में उदारता + मुह में मिठाश
हाथ में अनुदारता + मुह में कडवाश
भिखारी
हाथ में उदारता + मुह में कडवाश
हाथ में अनुदारता + मुह में मिठाश
3)
A. पुराना लोहा पकड़ के चांदी, सोना, रत्नों को ठुकरानेवाला मुरख और दुखी मित्र
लोहा
चांदी
सोना
रत्न
B. पुराना लोहा, चांदी, सोना को क्रमशः छोड़ के नए चांदी, सोना, रत्नों को ग्रहण करते बुद्धिशाली और सुखी मित्र
लोहा
चांदी
सोना
रत्न

श्री जीवाजीवाभिगम सूत्र

चित्र दर्शन

आधुनिक Biology, Chemistry और Physics का आधार तुल्य यह ग्रंथ है।

(1) जिसमें जीव और उसके 563 भेद, अजीव के मुख्य 5 भेद:- जिसमें Space, Time, Matter के अलावा धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय की भी रोचक जानकारी दी है। Matter (पीरियोडिक टेबल) के भेद की चर्चा भी इसमें दी गई है। मेटर के मुख्य भेद वर्ण-गंध-रस-स्पर्श-संस्थान की भी बहुत दिलचस्प चर्चा इसमें की गई है।

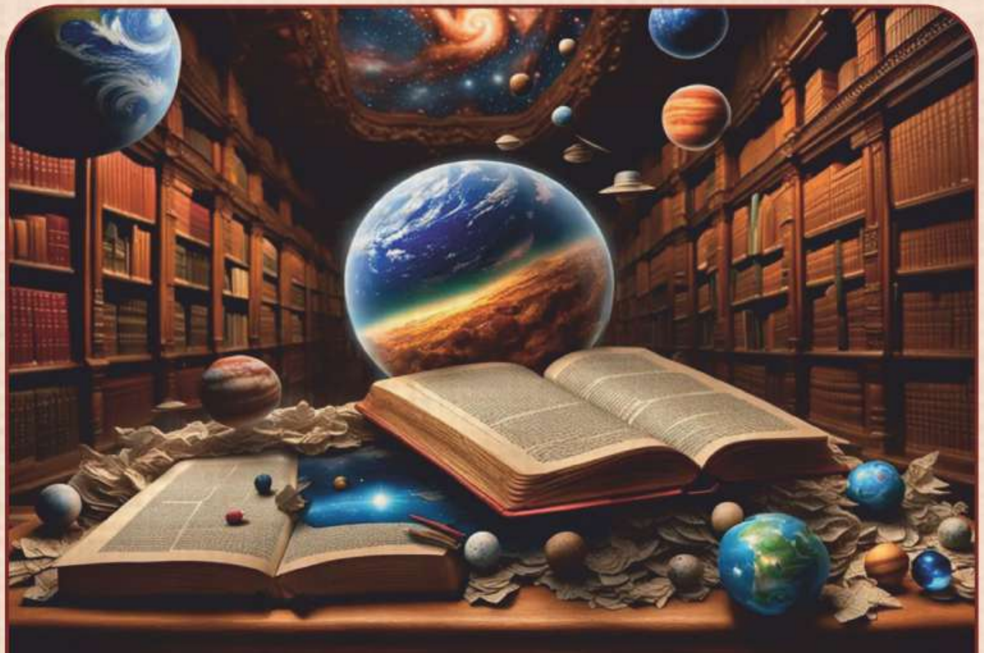

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :
4750 श्लोक प्रमाण

विभाग :
10 प्रतिपत्ति

श्री हरिभद्रसूरिकृत टीका:
1192 श्लोक प्रमाण

श्री मलयगिरिसूरिकृत टीका :
14000 श्लोक प्रमाण

श्री जीवाजीवाभिगम सूत्र
जीव अजीव के भेदो का विस्तृत वर्णन
आगम विज्ञान
विश्व
14 राजलोक
जीव
अजीव
संसारी
सिद्ध
त्रस
स्थावर
एकेन्द्रिय
बेइन्द्रिय
तेइन्द्रिय
चउरेन्द्रिय
पंचेन्द्रिय
देव
मनुष्य
तिर्यंच
नरक
पृथ्वी
अप्
तेउ
वायु
प्रत्येक वनस्पति
साधारण वनस्पति
अजब दुनिया का गजब विज्ञान सर्वज्ञ के माध्यम से
धर्मास्तिकाय
अधर्मास्तिकाय
आकाश
काल
पुद्गल
सफ़ेद
पीला
लाल
नीला
काला
वर्ण
सुगंध
दुर्गंध
गंध
मीठा
तीखा
खट्टा
तुरा
कड़वा
रस
ठंडा
गरम
कर्कश
मृदु
रुक्ष
स्निग्ध
लघु
गुरु
स्पर्श
त्रिकोण
चोरस
वर्तुल
लंबचोरस
परिमंडल
संस्थान (आकार)
हेमघोष

श्री पन्नवणा सूत्र

चित्र दर्शन

इस ग्रंथ को वैज्ञानिक ग्रंथ की उपमा दी जा सकती है। 36 पद (चेप्टर) का यह ग्रंथ विज्ञान और वैज्ञानिको के लिए माइलस्टोन है।

(1/2/3) **मन** = न्युरोसायन्स, **लेश्या** = सायकोथेरापी, **भाषा** = Feeling Sharing का माध्यम, इन सभी का वैज्ञानिक दृष्टि से अद्भूत वर्णन प्रभु ने दिया है।

(4/5) हमें मिला हुआ स्थूलदेह **औदारिक शरीर**, एवं सूक्ष्म देह **तैजस/कार्मण शरीर**, देव-नरक का देह **वैक्रिय शरीर** तथा **आहारक शरीर** की व्यवस्था, संरचना तथा आँख, नाक, कान, जीभ, चमडी जैसी इन्द्रियाँ, उनकी अभ्यंतर संरचना, मन से उनका संबंध, इन सभी का विस्तृत वर्णन इसमें है।

(6) **जीव की उत्पत्ति का स्थान-योनि**, जैसे मिट्टी से घडा, हाइड्रोजन-ओक्सीजन से पानी उत्पन्न होता है, वैसे सभी जीवों की 84 लाख योनि का, विशेषतः मनुष्य की उत्पत्ति जहाँ होती है वह स्त्री के गर्भाशय का भी वर्णन इसमें दिया गया है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :
4750 श्लोक प्रमाण
विभाग :
10 प्रतिपत्ति
श्री हरिभद्रसूरिकृत टीका:
1192 श्लोक प्रमाण
श्री मलयगिरिसूरिकृत टीका :
14000 श्लोक प्रमाण

श्री पन्नवणा सूत्र
आगम विज्ञान
1) विचारो की भिन्न भिन्न अवस्था = लेश्या
कापोत लेश्या
तेजो लेश्या
नील लेश्या
पद्म लेश्या
कृष्ण लेश्या
शुक्ल लेश्या
2) भाषा के पुद्गलों के उपयोग से भिन्न-भिन्न भाषा का जन्म
भाषा के पुद्गल
ABCEFRJUG
कखगचधनपफ
3) मनोवर्गणा के पुद्गलों का प्रतिबिंब स्वीकारनेवाला दर्पण
मन
TOUCH
VISION
SMELL
TASTE
HEARING
4) भिन्न भिन्न प्रकार के शरीर
मानव शरीर
औदारिक पुद्गल
देव शरीर
वैक्रिय पुद्गल
पूर्वधर मुनि का शरीर
आहारक पुद्गल
ओरा
तैजस पुद्गल
कर्म शरीर
कार्मण पुद्गल
विज्ञान की पूर्णता सर्वज्ञ के वचनों में
5) भिन्न भिन्न इन्द्रियों की समज
इन्द्रिय
नाक
चमड़ी
कान
जीभ
आँख
6) योनि = उत्पत्ति का माध्यम
मिट्टी में से घड़े की उत्पत्ति
पानी की योनि हाईड्रोजन और ऑक्सिजन
हेमघोष

श्री सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र

चित्र दर्शन

पूरी Galaxy (ज्योतिषचक्र) और जीव सृष्टि को उर्जा देनेवाले सूर्य विमान एवं सूर्य देव के विषय में A to Z ज्ञान प्रदान करनेवाला यह ग्रंथ है।

(1) सूर्य का उत्तरायण-दक्षिणायन, मकरसंक्रांति - कर्कसंक्रांति, उसके कारण ऋतुचक्र एवं दिन-रात की व्यवस्था का सुंदर वर्णन इसमें है।

(2) अमावस्या को होनेवाले सूर्यग्रहण की व्यवस्था एवं उसका कारण इसमें दिखाया है।

(3) ज्योतिषशास्त्र का आधार नक्षत्र (Constellation) एवं राशि के साथ सूर्य-चंद्र के योग की व्यवस्था इसमें दीखाई है। आधुनिक युग में भी जीयोसेंट्रीक (धरती पर से ब्रह्मांड दर्शन) पद्धति से हो रहा अवकाश दर्शन इस ग्रंथ की माहिती के साथ काफी मिलता-झुलता है।

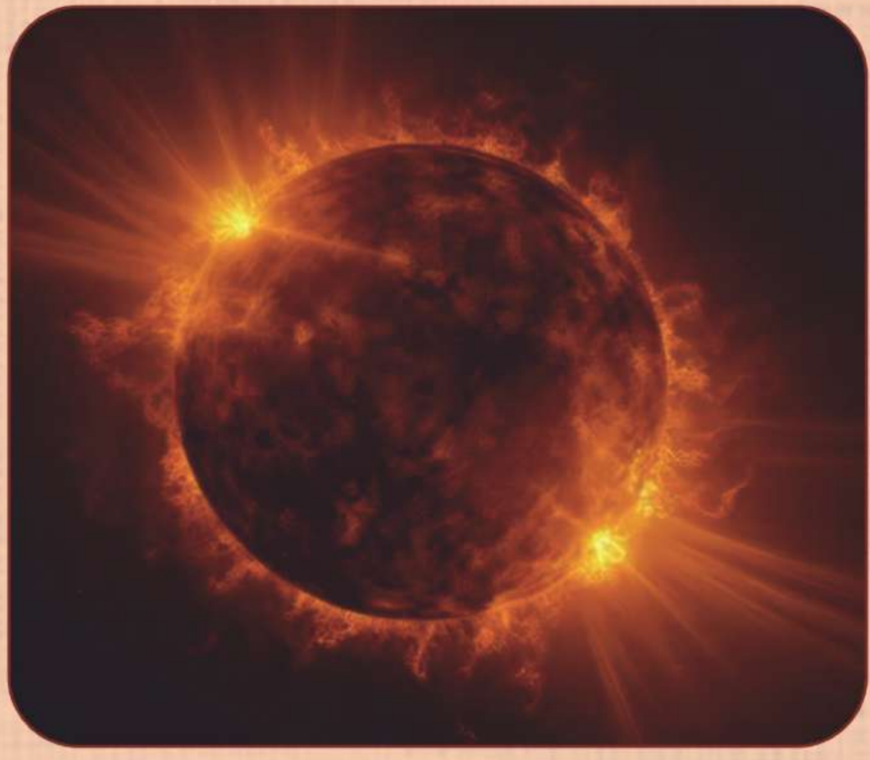

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :
2200 श्लोक प्रमाण
विभाग :
20 प्राभृत
श्री मलयगिरिसूरिकृत टीका :
9000 श्लोक प्रमाण

श्री सूर्यप्रज्ञप्ति सूत्र

आगम विज्ञान

सूर्यका उत्तरायण – दक्षिणायन

पर्व राहु के कारण सूर्य ग्रहण

A to Z about Sun

सूर्य-चंद्रका नक्षत्र के साथ योगसे ज्योतिष विज्ञानकी उत्पत्ति

हेमघोष

श्री जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति सूत्र

चित्र दर्शन

भूगोल-खगोल की जैन मान्यता को दिखानेवाला अद्भूत ग्रंथ।

(1/2) जैन भूगोल की केन्द्रीय व्यवस्था का आधार 1 लाख योजन लंबा चौडा जंबूद्वीप और 1 लाख योजन ऊँचा मेरु पर्वत है।

(3/4/5) 1 Galaxy में (ज्योतिषचक्र में) 1- सूर्य, 1-चंद्र, 28 नक्षत्र, 88 ग्रह (Planets), 66975 करोड X करोड तारे (Stars) होते हैं और वे सब अपने केन्द्र मेरु के आसपास घुमते हैं। तथा जंबूद्वीप के 180 योजन और लवण के 330 योजन में (आधुनिक परंपरा अनुसार कर्कवृत्त से मकरवृत्त तक) सूर्य-चंद्र अपनी सीधी उर्जा देते हैं।

(6) अवकाश में भिन्न भिन्न नक्षत्र का एक निश्चित **आधिपत्यक्षेत्र अवकाशखंड** है जिसमें सूर्य-चंद्र-ग्रह आ जाए तो उससे सूर्य - चंद्र - ग्रह के साथ नक्षत्र-राशि का योग बनता है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :
4146 श्लोक प्रमाण

विभाग :
7 वक्षस्कार, 365 सूत्र

श्री मलयगिरिसूरिकृत टीका :
8500 श्लोक प्रमाण

अवचूरि :
1879 श्लोक प्रमाण

श्रीशांतिचन्द्र उपाध्यायकृत टीका :
18000 श्लोक प्रमाण

श्रीहीरविजयसूरिकृत टीका :
14252 श्लोक प्रमाण

Science of Cosmos

जम्बूद्वीप की 2 गैलेक्सी

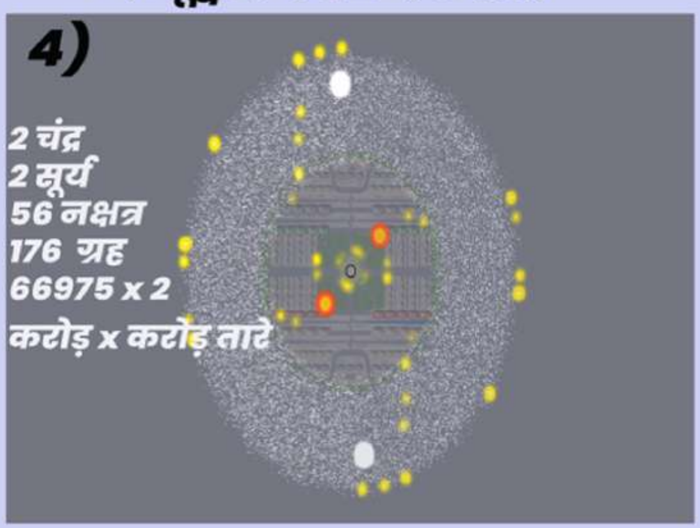

श्री चंद्रप्रज्ञप्ति सूत्र

चित्र दर्शन

जीवों के मन को प्रभावित करनेवाले, ज्योतिषचक्र के राजा चंद्र का यानि चंद्र विमान एवं चंद्र देव का A to Z ज्ञान देनेवाला सूत्र

(1/2) चंद्र की भिन्न भिन्न कला यानी की Moon Phases को दो पद्धतियों से बताया गया है।

(ए) अवकाश में नित्यराहु के कारणग्रस्त होता तथा खुलता चंद्र बिंब का विस्तार (Area) यानि क्षेत्रफल,

(बी) सूर्य-चंद्र के विमान का अपने केन्द्र (मेरु) की अपेक्षा से बन रहा कोण (Angle),इसे moon phases के 30 दिन के नाप को चंद्र का Synodic Month (करिबन 29 दि. 12 घ.) कहते है। या तो चंद्र के 1 दिन व 1 रात का Total यह होता है।

(3) चंद्र का उत्तरायण, दक्षिणायन एवं चंद्र की मकरसंक्रांति, कर्कसंक्रांति जो करीबन 27 दिन 7 घ. 40 मि. से आधा यानि करिबन 13 दिन 16 घ. के आसपास का है, जिसे चंद्र का Sidirial Month कहते है।

इस में पर्वराहु के कारण पूनम के दिन होनेवाले चंद्रग्रहण की बात बताई गई है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :

1854 श्लोक प्रमाण

विभाग :

20 प्राभृत

श्री मलयगिरिसूरिकृत टीका :

9000 श्लोक प्रमाण

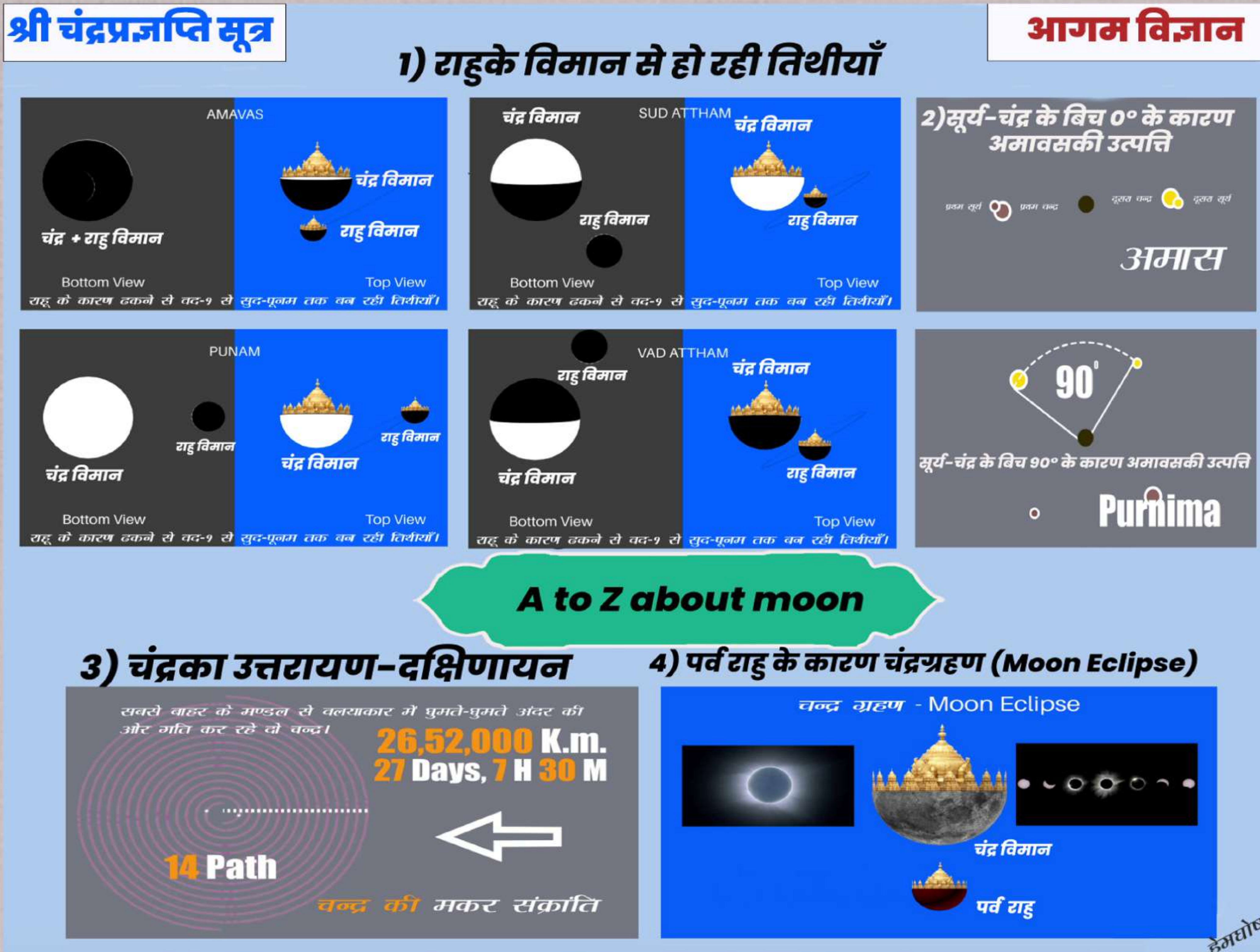

श्री चंद्रप्रज्ञप्ति सूत्र
आगम विज्ञान
1) राहुके विमान से हो रही तिथीयाँ
AMAVAS
चंद्र + राहु विमान
चंद्र विमान
राहु विमान
Bottom View
Top View
राहू के कारण ढकने से वद-१ से सुद-पूनम तक बन रही तिथीयाँ।
SUD ATTHAM
चंद्र विमान
राहु विमान
चंद्र विमान
राहु विमान
Bottom View
Top View
राहू के कारण ढकने से वद-१ से सुद-पूनम तक बन रही तिथीयाँ।
2)सूर्य-चंद्र के बिच 0° के कारण अमावसकी उत्पत्ति
अमास
PUNAM
राहु विमान
चंद्र विमान
चंद्र विमान
राहु विमान
Bottom View
Top View
राहू के कारण ढकने से वद-१ से सुद-पूनम तक बन रही तिथीयाँ।
VAD ATTHAM
राहु विमान
चंद्र विमान
चंद्र विमान
राहु विमान
Bottom View
Top View
राहू के कारण ढकने से वद-१ से सुद-पूनम तक बन रही तिथीयाँ।
90°
सूर्य-चंद्र के बिच 90° के कारण अमावसकी उत्पत्ति
Purnima
A to Z about moon
3) चंद्रका उत्तरायण-दक्षिणायन
सबसे बाहर के मण्डल से वलयाकार में घुमते-घुमते अंदर की और गति कर रहे दो चन्द्र।
26,52,000 K.m.
27 Days, 7 H 30 M
14 Path
चन्द्र की मकर संक्रांति
4) पर्व राहु के कारण चंद्रग्रहण (Moon Eclipse)
चन्द्र ग्रहण - Moon Eclipse
चंद्र विमान
पर्व राहु
हेमघोष

श्री निरयावलिका सूत्र

चित्र दर्शन

पाप का तो फल दुर्गति है लेकिन पाप में सहाय का फल भी दुर्गति है - यह सूचित करनेवाला यह ग्रंथ है।

(1) इस अवसर्पिणी काल का सबसे बडा युद्ध स्त्रीहठ के कारण वैशाली नगरी के राजा चेडा और मगध के राजा कोणिक के बीच हुआ | जिसमें पाप के (कोणिक के) पक्ष में युद्ध करनेवाले कोणिक के 10 पराक्रमी भाई मृत्यु के बाद नरक में उत्पन्न हुए। इस युद्ध में एक दिन में 1,80,00,000 लोगों का संहार हुआ जिसमें से सिर्फ दो लोगों को छोडकर 1,79,99,998 लोग दुर्गति में उत्पन्न हुए। **इसमें काल, सुकाल, महाकाल आदि श्रेणिक के दस पुत्र या कोणिक के दस भाई जो नरक में उत्पन्न हुए उनका जीवन कथन भी दिया है।**

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :
146 श्लोक प्रमाण

विभाग :
पाँच वर्ग (पाँच उपांगरूप)

श्रीचन्द्रसूरिकृत टीका :
600 श्लोक प्रमाण

श्री नीरयावलिका सूत्र
आगम विज्ञान
1) यह अवसर्पिणी का सबसे बड़ा चेडाराजा और कोणिक का युध्ध
पापी को दे सहारा खुद बने बेसहारा
काल
सुकाल
महाकाल
कृष्ण
सुकृष्ण
महाकृष्ण
वीरकृष्ण
रामकृष्ण
पितृसेनकृष्ण
महासेनकृष्ण
2) पाप का फल नरक में भुगतते 10 राज कुमार
हेमघोष

श्री कल्पावतंसिका सूत्र

चित्र दर्शन

(1/2) काल, सुकाल, महाकाल आदि 10 श्रेणिक के पुत्रों के भी पुत्र यानि **पद्म ,महापद्म, भद्र, सुभद्र** आदि श्रेणिक राजा के 10 पौत्रों ने भगवान के पास चारित्र ग्रहण किया, आराधना की और क्रमशः प्रथम साधु प्रथम देवलोक में... दूसरा दूसरे, तीसरा तीसरे... दसवाँ-दसमें देवलोक में उत्पन्न हुआ। इसका विस्तृत वर्णन इस आगम सूत्र में है। चारित्र आराधना सब की समान होते हुए भी सबके भाव भिन्न भिन्न थे इसके लिए परिणाम भिन्न मिला। इस ग्रंथ का सार यह है कि :-

आराधना में आदर-समर्पण जितना उच्चकक्षा का होगा उतना ही परिणाम उच्च मिलेगा।

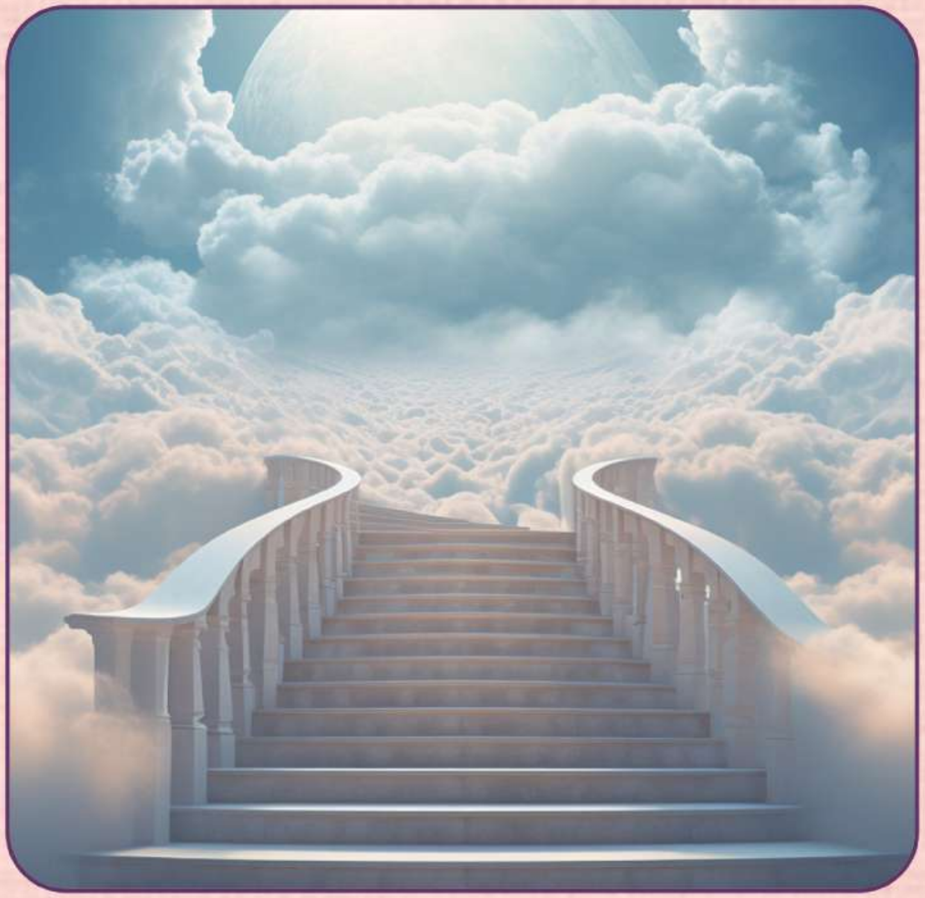

स्वरूप दर्शन

निरयावलिका का यह उपविभाग है।

(निरयावलिका, कल्पावतंसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका, वह्निदशा)

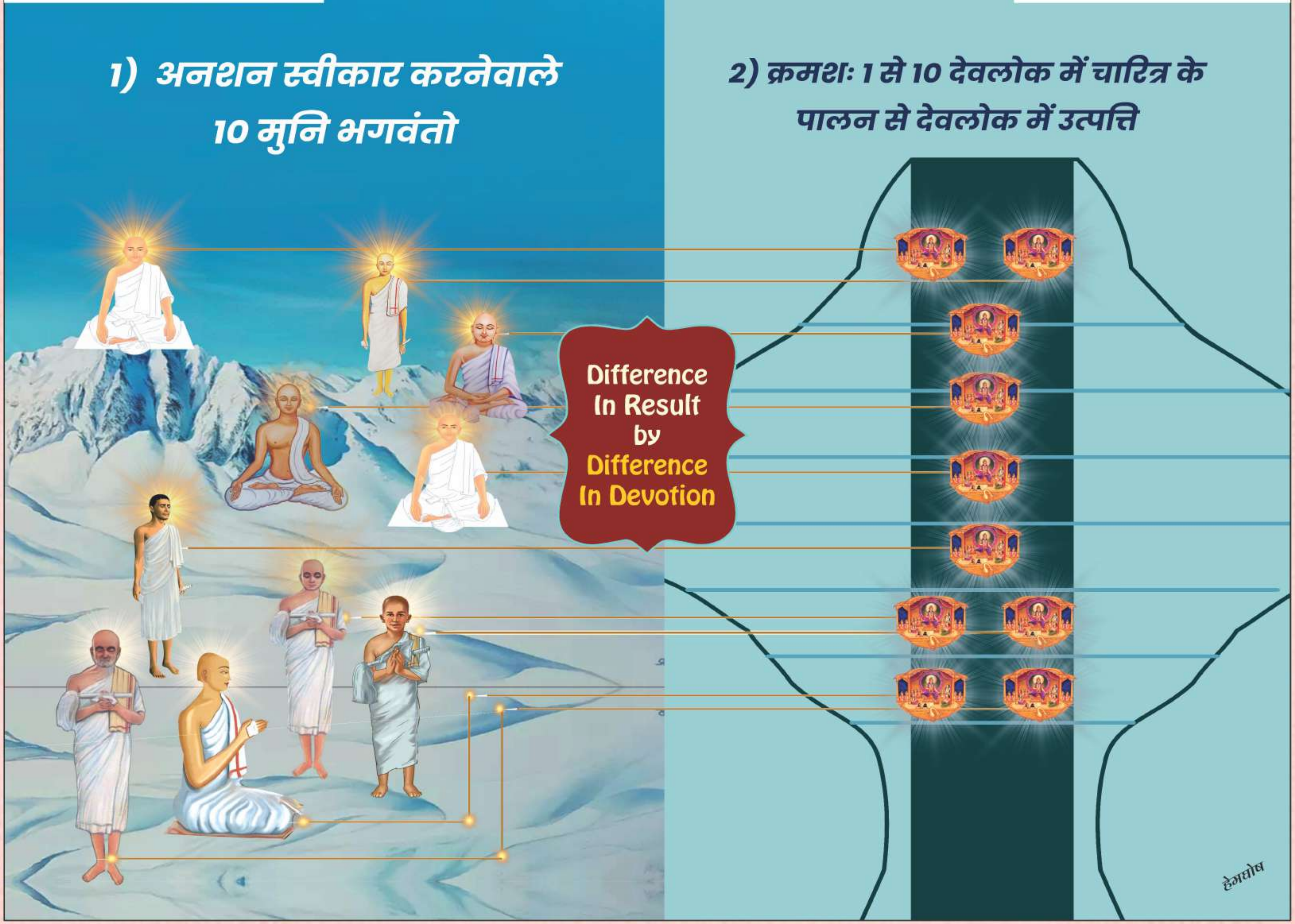
1) अनशन स्वीकार करनेवाले
10 मुनि भगवंतो
2) क्रमशः 1 से 10 देवलोक में चारित्र के
पालन से देवलोक में उत्पत्ति
Difference
In Result
by
Difference
In Devotion
हेमघोष

श्री पुष्पिका सूत्र

चित्र दर्शन

पूर्वभव में प्रभु निश्रा में जिनशासन की शुभभाव से आराधना की उसके कारण दूसरे भव में देवलोक में सूर्य-चंद्र-शुक्र आदि विमानों के इंद्र(अधिपति) देव बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। **ऐसी 10 कथाएँ और 10 देवों का पूर्वभव इसमें दिया है।** देवलोक में जन्म के बाद यह सभी समवसरण में आकर अपनी दिव्यशक्ति से नृत्य के माध्यम से परमात्मा महावीर देव की उत्कृष्ट भक्ति करते हैं।

संदेश स्पष्ट है - भगवान की कृपा से, शासन की कृपा से, धर्म की कृपा से जो मिले उसे देव - गुरु -धर्म व शासन के चरणो में ही अर्पण करना चाहिए।

स्वरूप दर्शन

निरयावलिका का यह एक उपविभाग है।

दस भिन्न भिन्न देवताओं द्वारा
नृत्य भक्ति
अणाढिय
चंद्र
बहुपुत्रिका
सूर्य
बल
धर्म का फल
धर्मदाता के
चरणों में
शुक्र
मणिभद्र
पूर्णभद्र
दत्त
शीव
हेमघोष

श्री पुष्पचूलिका सूत्र

चित्र दर्शन

(1) प्रभु पार्श्वनाथ की परंपरा में हुए पुष्पचूला साध्वीजी भगवंत के पास 10 महिलाओं ने चारित्र लिया। लेकिन बाद में शरीर की विभूषा के आकर्षण से गुरू की, प्रभु की आज्ञा छोडकर साधुजीवन के आचार-विचार में शिथिल बन गए।

(2) जम्बूद्वीप में पद्म, महाबल, तेगिच्छि, केसरी, पुंडरीक, महापुंडरीक नामक 6 द्रह की अधिष्ठायिका **श्रीं ,ह्रीं , बुद्धि, लक्ष्मी** आदि, दूसरी चार देवियाँ एवं 10 देवी का जीवनचरित्र और पूर्वभव का सातिचार चारित्र का वर्णन इसमें है। **शिथिलाचार पूर्वक के साधु जीवन से सभी कम पुण्यवाली द्रह देवी बनती हैं । शुद्धाचार पूर्वक के साधु जीवन से मोक्ष प्राप्ति होती है या विशिष्ट पुण्यवाले वैमानिक देव बनने का सौभाग्य मिलता है ।**

संदेश स्पष्ट है - साधना को वफादार न रहे तो साधना का फल कम हो जाता है। इस लिए साधना विधिपूर्वक - भावपूर्वक करनी चाहिए ।

स्वरूप दर्शन

निरयावलिका का यह एक भाग है ।

श्री पुष्पचूलिका सूत्र
आगम विज्ञान
1) प्रभु पार्श्वनाथ की परंपरा में पुष्पचूला साध्वीजी के पास 10 स्त्रीओं की दीक्षा, शरीर की विभूषा करने पूर्वक सातिचार चारित्र
वफ़ादारीता का अभाव कम करे साधना का प्रभाव
2) सातिचार चारित्र के प्रभाव से अल्प ऋद्धिमय देवीपणा की प्राप्ति ।
हेमघोष

श्री वह्निदशा सूत्र

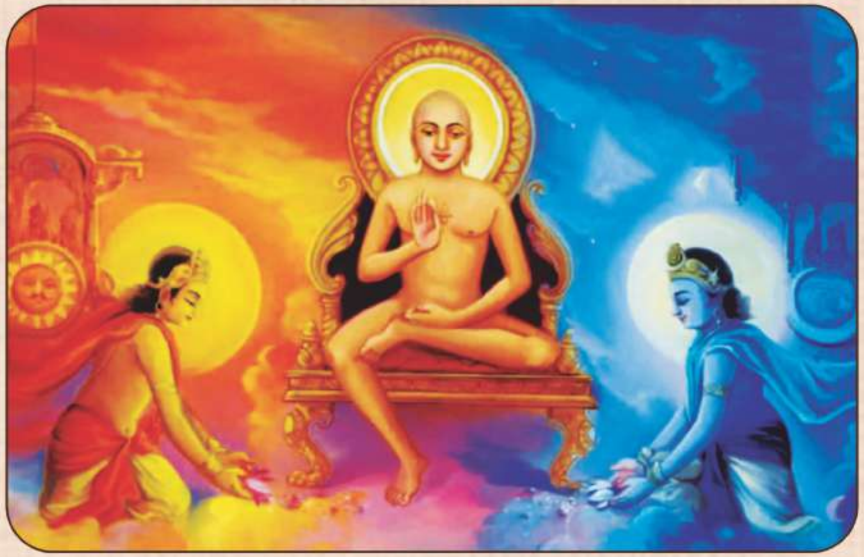

चित्र दर्शन

मनकी पवित्रता से पुण्य की, परिणति की, पूर्णता की प्राप्ति होती है।

(1/2) नेमिनाथ प्रभु के पास दीक्षा ग्रहण करनेवाले **निषध, अनिय, वह, वेहल आदि.... यदुकुल के 12 राजकुँवर** उच्चकक्षा का निर्मल चारित्र पालकर अनुत्तर विमान में विश्व के सर्वश्रेष्ठ भौतिक सुखधारक विशिष्ट पुण्यवाले देव बने। जहाँ प्रत्येक देव की शय्या के ऊपर सच्चे मोती का खूबसूरत झूमर (चंदरवा) रहता है। मंद मंद पवन से वह मोती आपस में टकराते हैं और अद्भूत संगीत प्रगट होता है। जैसे श्रोत्रेन्द्रिय का सुख, उसी तरह सारी इन्द्रियों के सर्वोच्च भोगसुख को वह देवता दीर्घकाल तक पूर्वभव की साधना के प्रभाव से भुगतते हैं।

स्वरूप दर्शन

निरयावलिका का यह एक विभाग है।

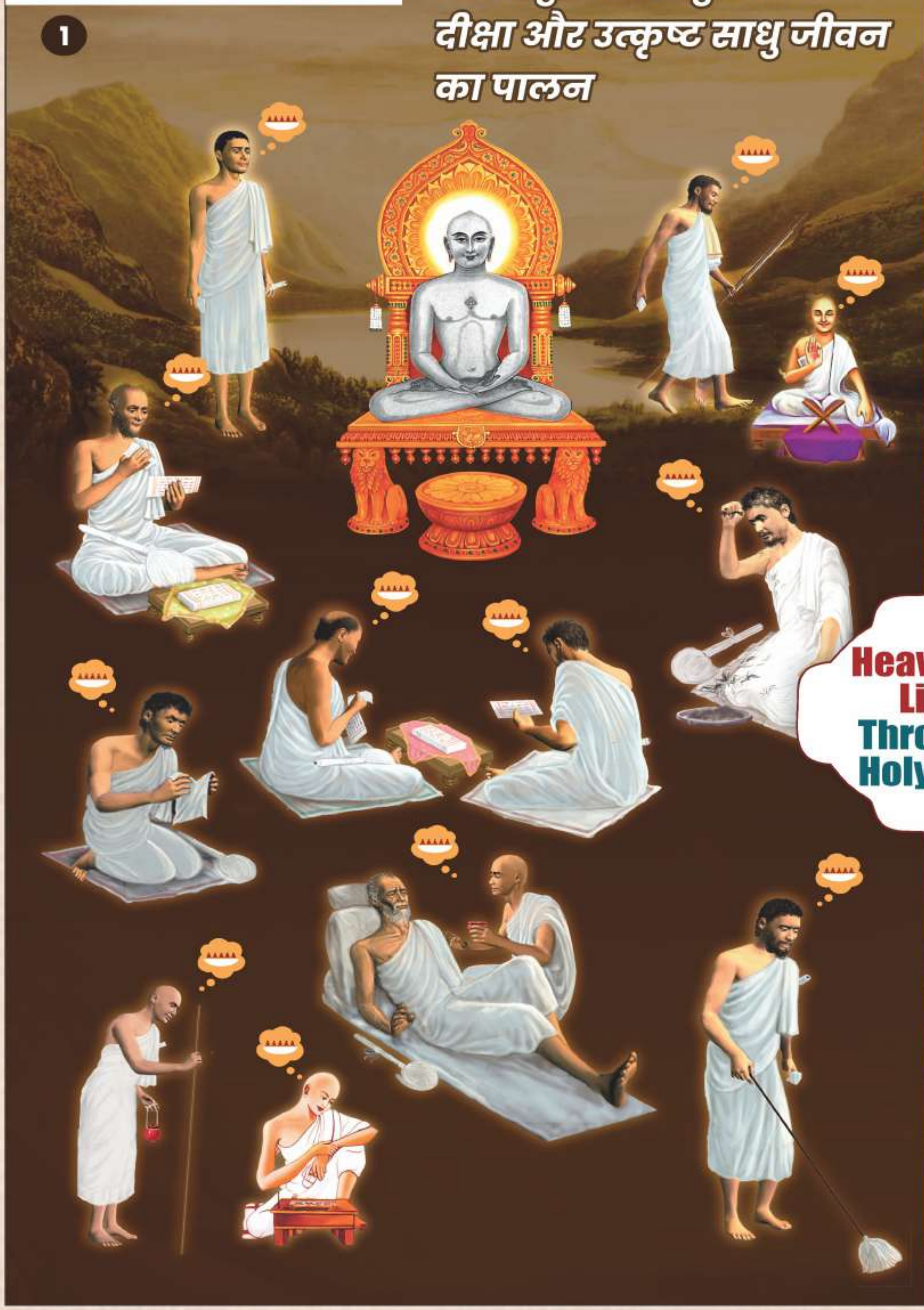

Heavenly Life Through Holy Life

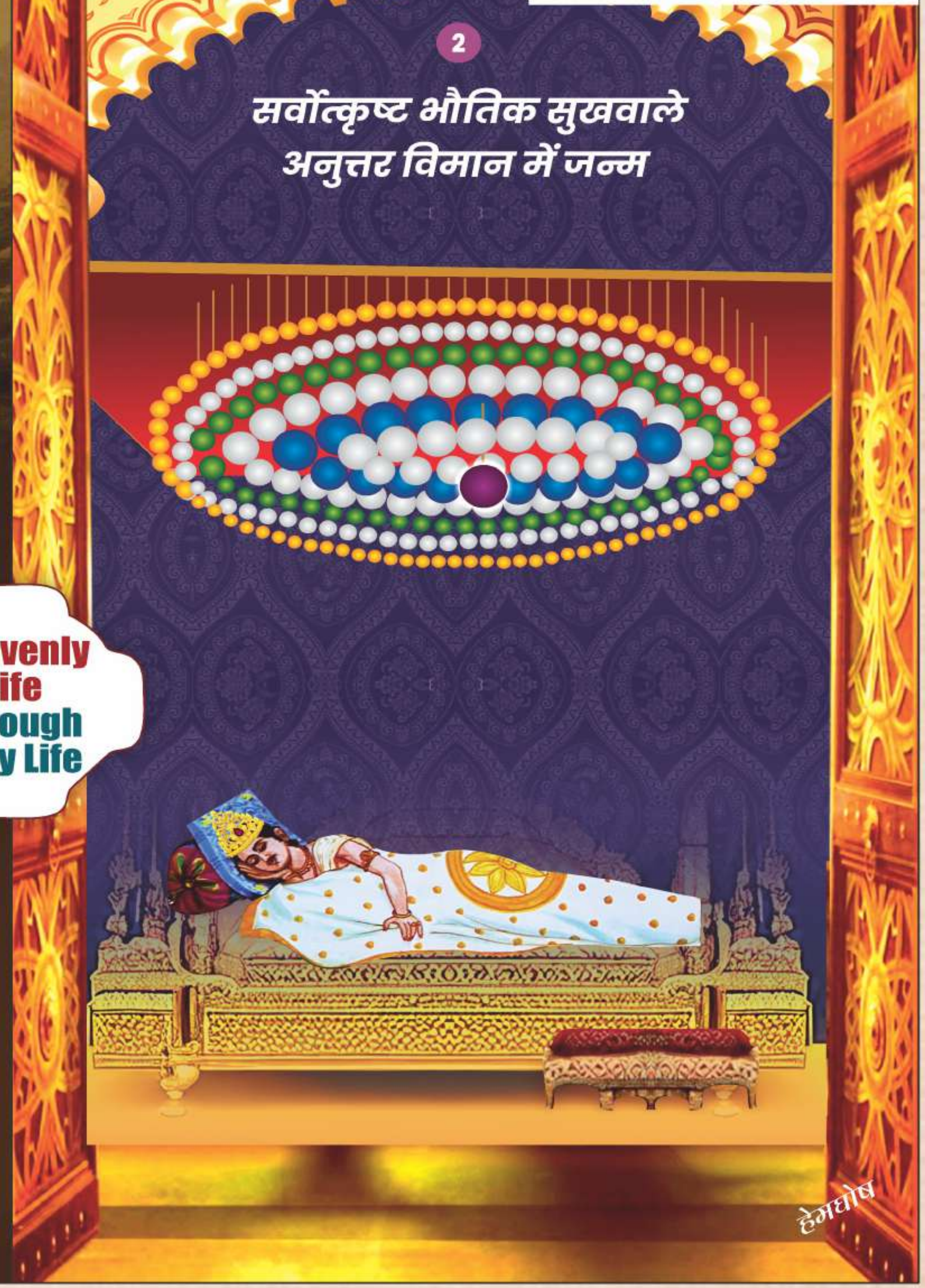

श्री चतुः शरण पयन्ना सूत्र

चित्र दर्शन

दोष को छोड़कर गुण की प्राप्ति करना अथवा स्वभाव का परिवर्तन करना यही जींदगी का लक्ष्य है और उसी के रास्ते इस ग्रंथ मे दिखाए हैं।

(1) मन-वचन-काया से जो भी दुष्कृत हुआ है उसका सच्चा पश्चाताप।

(2) अरिहंत, सिद्ध, साधु तथा केवली प्ररूपित धर्म का शरण स्वीकार करना।

(3) सभी के सुकृत के प्रति अहोभाव, आदरभाव, विस्मयभाव धारण करना।

स्वरूप दर्शन

दूसरा नाम :
कुशलानुबंधी अध्ययन
प्रमाण :
80 गाथा
कर्ता :
श्री वीरभद्राचार्य
श्री विजयविमलगणिकृत टीका:
200 श्लोक प्रमाण

श्री चतुःशरण सूत्र
आगम विज्ञान
1) दुष्कृत गर्हा
हिंसा
परिग्रह
जूठ
मैथुन
चोरी
रात्रि भोजन
2) चार शरण स्वीकार
सिद्ध
अरिहंत
SECRET OF PROGRESS
साधु
चारित्र
3) सुकृत अनुमोदना
शील
(झुके हुए नयन)
दान
विरति
हेमघोष

श्री आतुर प्रत्याख्यान सूत्र

चित्र दर्शन

(1) **शास्त्र में चार प्रकार के मरण दिखाए हैं , उसके आधार से ही जीवन के विभाग होते हैं । मतलब मौत सुधरे वैसा ही तथा वैसे ही जीवन जीओ।**

पंडित-पंडित मरण : संसार का अंतिम मरण, यानि जन्म-मरण के बंधन से कायमी मुक्ति, उदा. तीर्थंकर भगवंत

पंडित मरण : अंतिम समय में देव-गुरु-धर्म के शरण-स्मरण-समर्पण से उत्कृष्ट समाधि व प्रसन्नता।

जन्म-मरण के बंधन की सीमितता, उदा. साधु-साध्वीजी भगवंत

बाल पंडित मरण : अंतिम समय में अल्प कषाय, अल्प ममत्व, बहुधा आराधकभाव से मध्यम समाधि। उदा. श्रावक जीवन

बाल मरण : पूरी जिंदगी साधन – सामग्री – स्वजन - सत्ता - सन्मान में बिताने से अंतिम समय में मौत की, सब छोडने की वेदना से असमाधि मरण। उदा. भोगी जीव

याद रहे पूरा जीवन जैसे भावो में या जैसी प्रवृत्तियों में पसार किया होगा, अंतिम समय में वो ही याद आयेगा। इसलिए यह भी कह सकते हैं कि मरण के चार विभाग हैं वैसे ही जीवन के चार विभाग हैं,

(a)पंडित-पंडितजीवन (b) पंडितजीवन (c) बाल-पंडितजीवन (d) बालजीवन.....

हमारा जीवन सुधरेगा तो मरण सुधरेगा, मरण सुधरेगा तो परलोक सुधरेगा।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :
100 गाथा

कर्ता :
श्रीवीरभद्राचार्य

श्रीगुणरत्नसूरिकृत टीका :
150 श्लोक प्रमाण

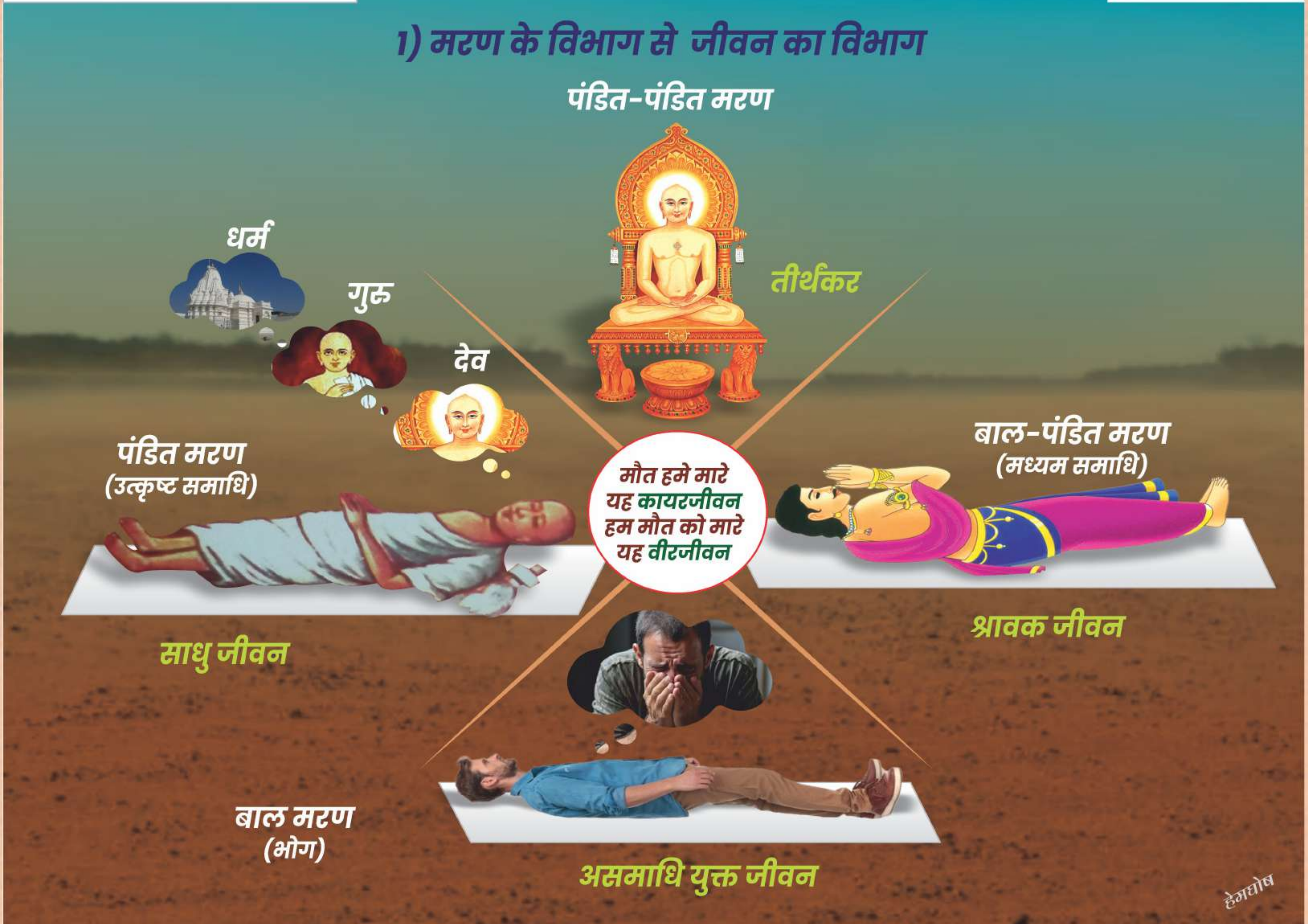
1) मरण के विभाग से जीवन का विभाग
पंडित-पंडित मरण
तीर्थंकर
धर्म
गुरु
देव
पंडित मरण
(उत्कृष्ट समाधि)
साधु जीवन
मौत हमे मारे
यह कायरजीवन
हम मौत को मारे
यह वीरजीवन
बाल-पंडित मरण
(मध्यम समाधि)
श्रावक जीवन
बाल मरण
(भोग)
असमाधि युक्त जीवन
हेमघोष

श्री महाप्रत्याख्यान सूत्र

चित्र दर्शन

मौत को सुधारने के 3 स्टेप्स

(1) पूरे ब्रह्मांड में कर्माधीन जीव जन्म-मरण कर चुका है फिर भी संसार की और दुःख की परंपरा समाप्त नहीं हुई है, क्योंकि जीव का कर्म के साथ नाता तूटा नहीं है।

(2) स्वजन-परिजन, ज़मीन-जायदाद इन सबके मध्य में से अचानक सबको छोडकर कर्माधीन जीव अकेला चला जाता है। मतलब जीव अकेला जन्म लेता है, अकेला मौत पाकर दुःख-सुख भुगतने के लिए अकेला चला जाता है।

(3) इस संसार तथा दुःख परंपरा का नाश करने का रास्ता है, देव-गुरु-धर्म व नवकारमंत्र का स्मरण।

धर्म ही शरणभूत है, सुख का कारण है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :

142 गाथा

1) पुरे ब्रह्माण्ड में (14 राजलोक में)
जन्म-मरण कर रहा कर्माधीन जीव

2) सब के बिचमें से अकेला
कर्माधीन जीव का परलोकगमन

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्व साहूणं
एसो पंच नमुक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढ़मं हवई मंगलं

3) जन्म-मरण,
आधि-व्याधि-उपाधि
के नाश के लिए सब fail
केवल नवकार मंत्र -
देव/गुरु/धर्म pass

श्री भत्तपरिज्ञा सूत्र

चित्र दर्शन

मौत को सुधारने के 3 स्टेप्स

(1) अंतिम समय में करने जैसे 3 प्रकार के अनशन:

- **भक्त परिज्ञा** : आहार-पानी का आजीवन त्याग।
- **इंगिनी** : आहार-पानी का, सेवा लेने का आजीवन त्याग।
- **पादपोपगमन** : आहार-पानी, सेवा लेना, खुद की सुरक्षा स्वयं करने का भी त्याग।

(2) जैसे पौधे का कारण बीज, बारिश का कारण बादल, उसी तरह मुक्ति का कारण देव-गुरु की भक्ति है।

(3) खुद के धन का उपयोग कैसे करना वह ज्ञान जैसे आवश्यक है, वैसे ही **धर्मधन का उपयोग भौतिक सुख की प्राप्ति की जगह आत्मिक सुख की प्राप्ति के लिए करना चाहिए वह ज्ञान आवश्यक है।** नियाणा करने से धर्मधन तुच्छ ऐसे भौतिक सुख के कारण विफल हो जाता है, इसी लिए नियाणा का त्याग करना चाहिए।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :
172 गाथा
कर्ता :
श्री वीरभद्राचार्य

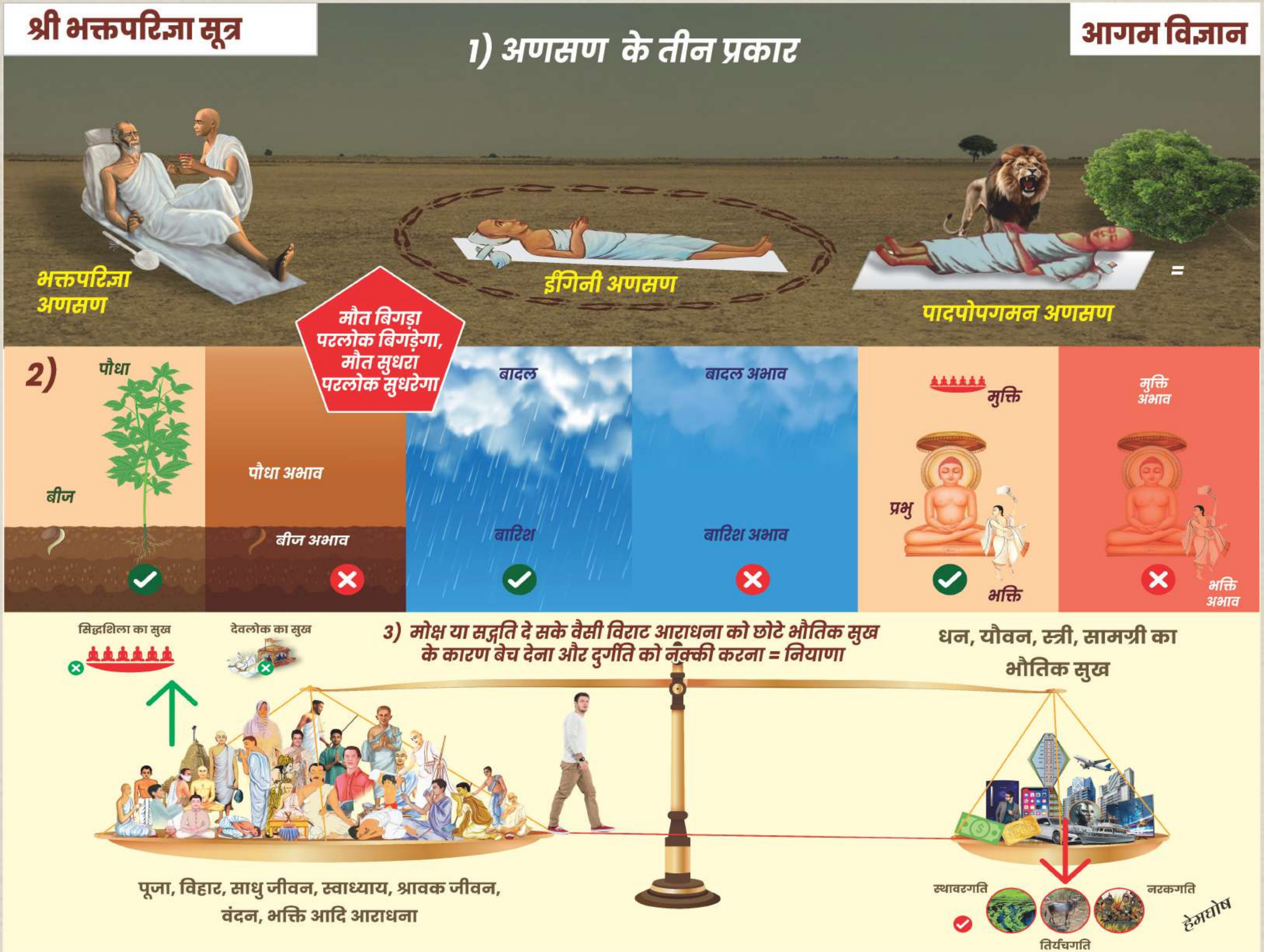
श्री भक्तपरिज्ञा सूत्र
आगम विज्ञान
1) अणसण के तीन प्रकार
भक्तपरिज्ञा अणसण
इंगिनी अणसण
पादपोपगमन अणसण
=
मौत बिगड़ा परलोक बिगड़ेगा, मौत सुधरा परलोक सुधरेगा
2)
पौधा
बीज
पौधा अभाव
बीज अभाव
बादल
बारिश
बादल अभाव
बारिश अभाव
मुक्ति
प्रभु
भक्ति
मुक्ति अभाव
भक्ति अभाव
सिद्धशिला का सुख
देवलोक का सुख
3) मोक्ष या सद्गति दे सके वैसी विराट आराधना को छोटे भौतिक सुख के कारण बेच देना और दुर्गति को नक्की करना = नियाणा
धन, यौवन, स्त्री, सामग्री का भौतिक सुख
पूजा, विहार, साधु जीवन, स्वाध्याय, श्रावक जीवन, वंदन, भक्ति आदि आराधना
स्थावरगति
नरकगति
तिर्यंचगति
हेमघोष

श्री संस्तारक सूत्र

चित्र दर्शन

ऊँचे लोग ऊँची पसंद, वैसे ही ऊँचे आदर्श ऊँचा जीवन
गुरू शिष्य को महापुरूषों का जीवन बताकर अंतिम समय में महापुरूष के जीवन की विशिष्ट घटना के श्रवण से सत्त्व, संयम, सहिष्णुता की परिणति बढ़ाते हैं , मुझे भी जीवन में ऐसा शारीरिक व मानसिक पराक्रम साधना है यह लक्ष्य सुदृढ़ करवाते हैं इसीलिए

(1) करने जैसी आराधना का स्वरूप,

(2) रखने जैसी सावधानी और जागृति का स्वरूप समझाते हैं।

यानि अंतिम समय में क्या करना वही इस सूत्र में दिखाया है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण : 122 गाथा

श्रीगुणरत्नसूरिकृत अवचूरि : 110 श्लोक प्रमाण

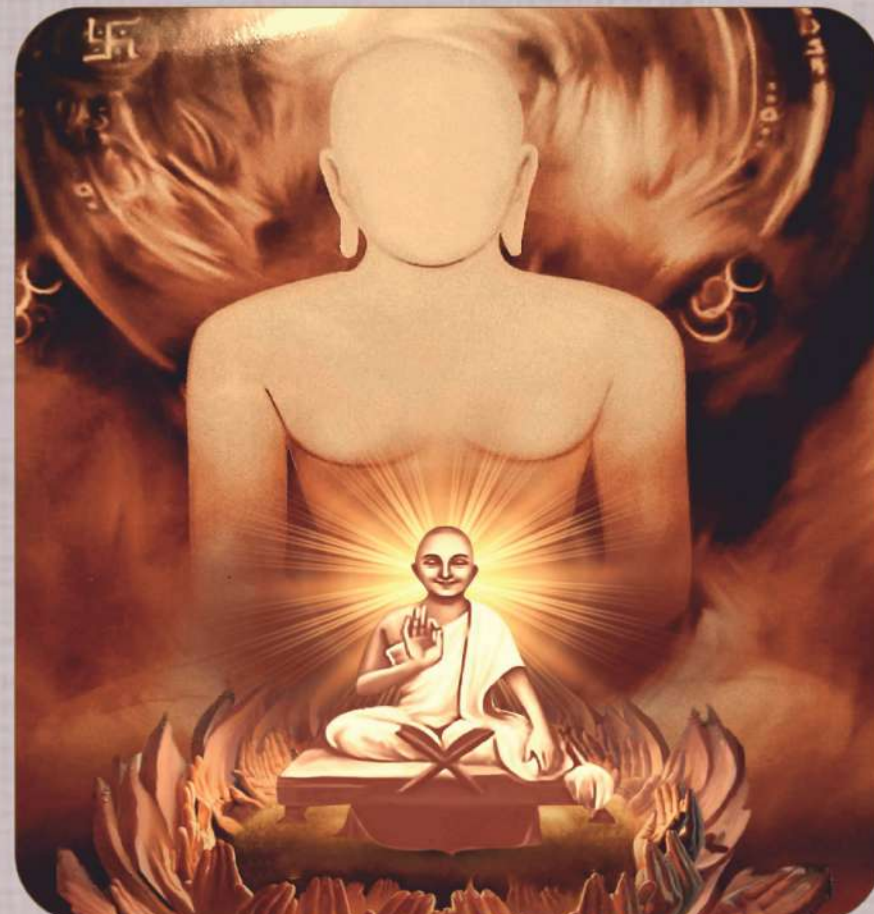

अंतिम समय में
महापुरूषो का आलंबन लेनेकी
गुरू की हितशिक्षा
अंतिम समय में
आलंबनतुल्य
महामुनिवर
मेतारज मुनि
गजसुकुमाल
मुनि
परिसह
सहते
महामुनिराज
आलंबन हो
महापुरूष
हम बने
धीरपुरूष
शिष्य का मन
महापुरूष को नमन
हेमघोष

श्री तंदुलवैचारिक सूत्र

चित्र दर्शन

विकास-उत्थान के लिएआहार और आचार दोनों को सुधारना आवश्यक है।

(1) गर्भ के प्रथम क्षण से अंतिम दिन तक की विकास प्रक्रिया का रोचक वर्णन इसमें है।

(2) अगणित आहार के भोजन पश्चात् भी शरीर-मन को तृप्ति नहीं होती, ऐसा क्यूँ ? तो उत्तर है पुद्गल और आत्मा का स्वभाव ही विभिन्न है। इसलिए 14 राजलोक के पूरे पुद्गल इकट्ठा होकर भी जीव को तृप्ति नहीं दे सकते।

(3) **जीवन के 100 साल का वर्गीकरण** : प्रमाद, बीमारी और अशक्ति... इसमें खुद के विकास के लिए कहाँ?

जब 15% समय ही खुद के उत्थान के लिए मिल सकता है तो उसी समय का वफादारिता पूर्वक उपयोग करना परलोक के सुख के लिए आवश्यक है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण : 500 सूत्र

श्रीविजयविमलगणिकृत टीका : 500 श्लोक प्रमाण

श्री तंदूलवैचारिक सूत्र
आगम विज्ञान
1) गर्भ में जीव की उत्पत्ति के बाद तंदूल जैसा जीव का विकास क्रम
तंदूल जैसा जीव
विकसित जीव
गर्भ का विकास क्रम
शरीर का विकास आहार से
आत्मा का विकास आचार से
3) जीवन के 100 वर्ष का
वास्तविक विभागीकरण
20% समय
अशक्ति में
बचपन
बुढ़ापा
10
20
30
40
50
60
70
80
90
100
50% समय
नींद याने
प्रमाद में
15% समय
मांदगी में
15% समय
कुछ अच्छा करने में
2) 460 करोड़
80 लाख तंदुल के दाने,
84 करोड़ से ज्यादा
मूँग के दाने नमक, घी,
सब्जी भी अगणित रूप से,
100 साल में जीव भुगतता है
फिर भी तृप्त नहीं होता ।

श्री चंद्रवेध्यक सूत्र

चित्र दर्शन

(1) राघावेध जैसा कठिन साधुजीवन...लक्ष्य को प्राप्त करने प्रलोभन एवं प्रतिकूलता की ओर अलिप्त रहना आवश्यक है, वैसे ही निर्मल संयमजीवन और निर्वाण सुख की प्राप्ति हेतु भौतिक सुख-दुःख के प्रति अलिप्तता, समभाव तथा वैराग्यभाव आवश्यक है।

(2) मरण की अकल्पनीय वेदना में भी मन शुभ में स्थिर तो सद्गति व सिद्धिगति निश्चित होती है।

इसी लिए छोटे-छोटे प्रलोभनों को Ignore करना चाहिए, प्रतिकूलता को Accept करना चाहिए।

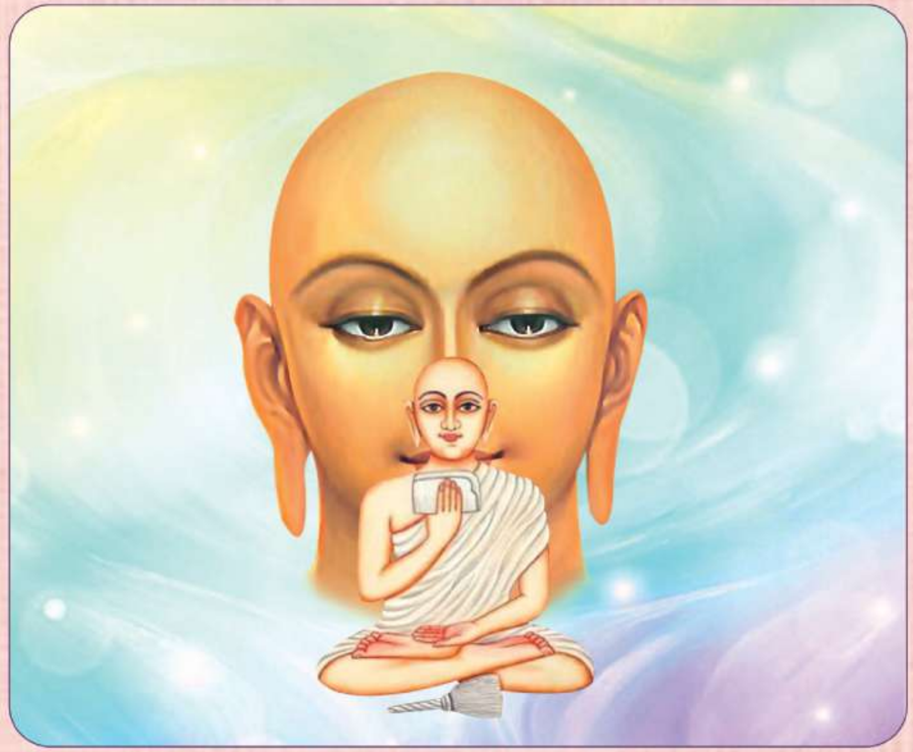

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :

175 गाथा

श्री चंद्रवेध्यक सूत्र
आगम विज्ञान
1) राधावेध जैसा कठिन साधुजीवन
GREAT CONQUEROR NEVER FIGHT ON SMALL ISSUES
प्रभु के प्रति भक्तिभाव
2) अंतिम समय में समाधि मरण की प्राप्ति
गुरू प्रति समर्पण
क्षमापना
हेमघोष

श्री देवेन्द्रस्तव सूत्र

चित्र दर्शन

वैमानिक और ज्योतिष देवता विमान में, भवनपति और व्यंतर देवता भवन (महलों में) रहते हैं। प्रत्येक देवलोक में भिन्न-भिन्न प्रतर (layers) होते हैं। भिन्न-भिन्न प्रतर में पंक्तिबद्ध और पुष्पावकीर्ण विमान व भवन होते हैं।

(1) भवनपति - ज्योतिष - वैमानिक देवलोक के 32 इन्द्र एवं समस्त दैवी शक्ति वीतराग परमात्मा के चरणो में झुकती है।

(2) इस ग्रंथ में देवों के आवास, देवलोक की व्यवस्था, इंद्रों की प्रभुभक्ति-स्तवना का वर्णन है।

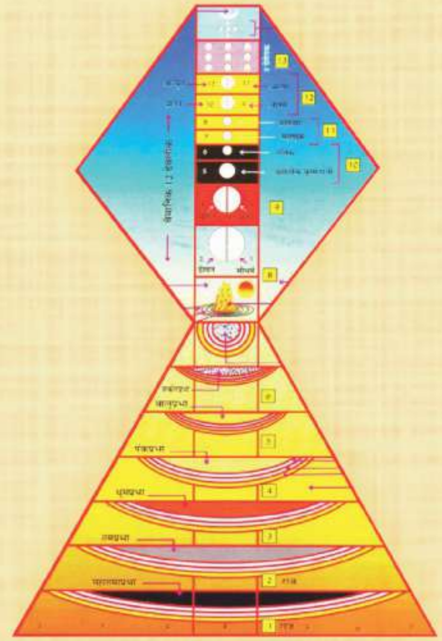

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :

311 गाथा

प्रभुको वंदन करते चारो जातिके देवता

देव शक्ति झुकें परम शक्ति के चरणों में

देव विमानमें उपरकी बाजु देवोके महेलोकी रचना

भिन्न-भिन्न आकारके देव विमानमें रहेते देवता

श्री गणिविज्जा सूत्र

चित्र दर्शन

(1) अवकाश में भिन्न भिन्न आकार में स्थित 28 नक्षत्रों (Constellations) का एक साथ दर्शन इसमें करवाया है। इस ग्रंथ में सूर्य-चंद्र-नक्षत्र-ग्रह-तारा का अवकाश में स्थान, परस्पर के योग की माहिती देकर भविष्यफलकथन की पद्धति दिखाई है। आज भी अवकाश में नक्षत्र की यह आकृति मिलती है। बिना कोई साधन अवकाश निरीक्षण से ही नक्षत्र की पहचान, उसके योग से ज्योतिष विद्या का सचोट ज्ञान और फल कथन पूर्वाचार्य करते थे। आत्मकल्याण के लिए यह ज्ञान का उपयोग लाभकारी हैं लेकिन भौतिक विकास हेतु किया गया उपयोग नुकशानकारी एवं संसार को बढ़ानेवाला है।

विश्व के एवं आश्रित के सुरक्षित और उज्ज्वल वर्तमान के लिए भविष्य को जानना जरूरी है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :

86 गाथा

श्री गणिविज्जा सूत्र

ज्योतिष शास्त्र के आधारभूत विभिन्न आकृति में अवकाश में स्थित 28 नक्षत्र के विमान

आगम विज्ञान

श्री मरणसमाधि सूत्र

चित्र दर्शन

आत्मा शुभ भावों से जितना भावित होता है, जीवन एवं मरण उतना ही प्रसन्नता और पवित्रता सभर बनता है।

(1/2/3) संसार का सुख Temporary है, सिद्धशिला का सुख Permenant है = **अनित्य भावना**

संसार का सुख Unsafe है, सिद्धशिला का सुख Safe है = **अशरण भावना**

संसार का सुख Unconstant है, सिद्धशिला का सुख Constant है = **संसार भावना**

(4/5/6) कर्मानुसार जीव परलोक से अकेला आता है परलोक में अकेला जाता है = **एकत्व भावना**

सब भौतिक सामग्री एवं स्वजन से जीव भिन्न है = **अन्यत्व भावना**

सब सामग्री को मलिनता का अभिशाप है = **अशुचि भावना**

(7/8/9) आत्मा में मिथ्यात्व-अविरति-कषाय-योग के हेतु से कर्मरज का आना = **आश्रव भावना**

आत्मा में अहिंसा-सत्य-अचौर्य-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहादि हेतु से कर्मरज का प्रवेश रुक जाना = **संवर भावना**

आत्मा में से पूर्व प्रवेशित कर्मरज को 12 प्रकार के तप से साफ करना = **निर्जरा भावना**

(10/11/12) धर्म के प्रभाव से ही यह दुनिया सुखी और जीने जैसी है = **धर्ममहिमा भावना**

तीन लोक स्वरूपी विश्व का यह नक्शा जिसमें देव-नरक-मनुष्य-तिर्यंच एवं सिद्धशिला का भी समावेश = **लोकस्वरूप भावना**

खाण में रत्न वैसे मनुष्यभव से लेकर क्रमशः सम्यग्दर्शन तक की प्राप्ति बहुत ही दुर्लभ है = **बोधिदुर्लभ भावना**

ऐसे भावों से भावित होने से अध्यात्म जागृत होता है।

इसीलिए 12 भावनाओं से मन को भावित करना चाहिए।

श्री मरणसमाधि सूत्र
1) अनित्य भावना : सिद्धो के सुख के अलावा दुनिया का समग्र सुख नाशवंत है।
EXPIRED
2) अशरण भावना: सिद्धो के अलावा पूरी दूनिया के पीछे मोत, रोग और जरा के राक्षस खड़े है।
घडपण
रोग
मृत्यु
3) संसार भावना: देव-मनुष्य-नरक-तिर्यंच यह चक्कर सतत चालू रहता है।
4) एकत्व भावना: कादव से कमल, वैसे ही पूरे संसार के सभी जीव से यह जीव अलग है, अकेला है।
5) अन्यत्व भावना: तैल-पानी के जैसे, साथ में रहे शरीर-स्वजन-संयोग से जीव अन्य है।
7) आश्रव भावना: खुल्ले मकान में धूल का वैसे ही, बिगड़े जीव में कर्म का प्रवेश होता है।
8) संवर भावना: खिड़की बंध- धूल अटक जाये वैसे ही, धर्ममय जीव- कर्म भी रुक जाये।
9) निर्जरा भावना: साधना से पुराने कर्म का नाश।
6) अशुचि भावना: आगे पीछे सोचेंगे तो सब मलिन लगेगा।
अच्छा वस्त्र
मलिन वस्त्र
स्वादिष्ट भोजन
सड़ा भोजन
सोना
धूल
खूबसूरत इन्सान
हाड़पिंजर
आगम विज्ञान
11) लोक स्वरूप भावना: पूरे विश्व का चिंतन
SACRED LIFE PLEASENT DEATH
10) धर्ममहिमा भावना: विश्व का आधार देव-गुरु-धर्म
12) बोधिदुर्लभ भावना: खाण में रत्न प्राप्ति दुर्लभ, संसार में मनुष्य भव, धर्म-श्रद्धा-सत्व की प्राप्ति दुर्लभ
हेमघोष

श्री दशाश्रुतस्कंध सूत्र

चित्र दर्शन

इस विश्व में देव-गुरू का जीवन पवित्र है। इसीलिए उनका शरण, स्मरण, समर्पण आवश्यक है।

(1) इस ग्रंथ में कल्पसूत्र विभाग के अंतर्गत प्रभु महावीर आदि का जीवन चरित्र दिया है। जिसमें से वर्षीदान का द्रश्य तथा परमात्मा को आए दश स्वप्न और उसका फलकथन इसमें दिखाया है।

(2) भिन्न-भिन्न आसन में रहकर साधना कर रहे साधु की 12 प्रतिमा।

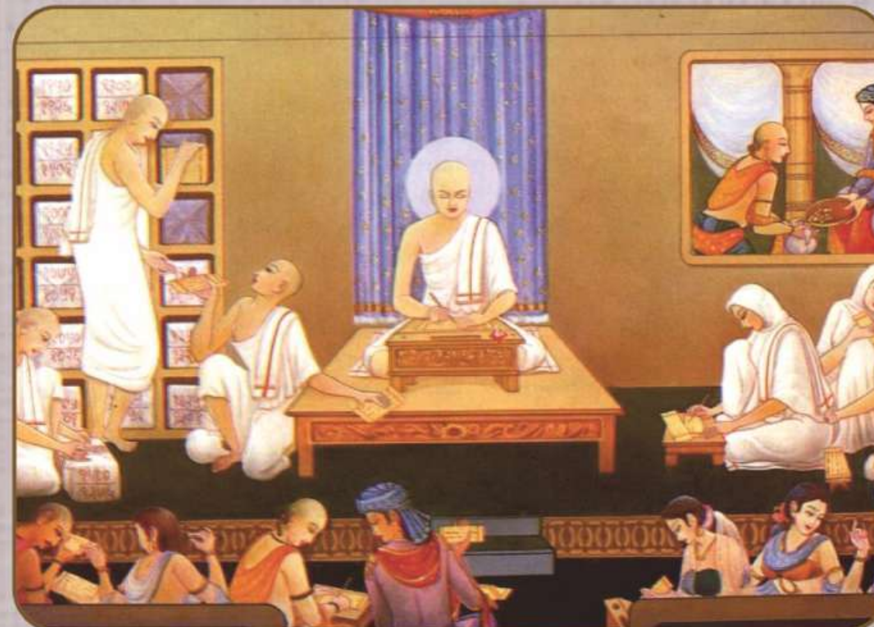

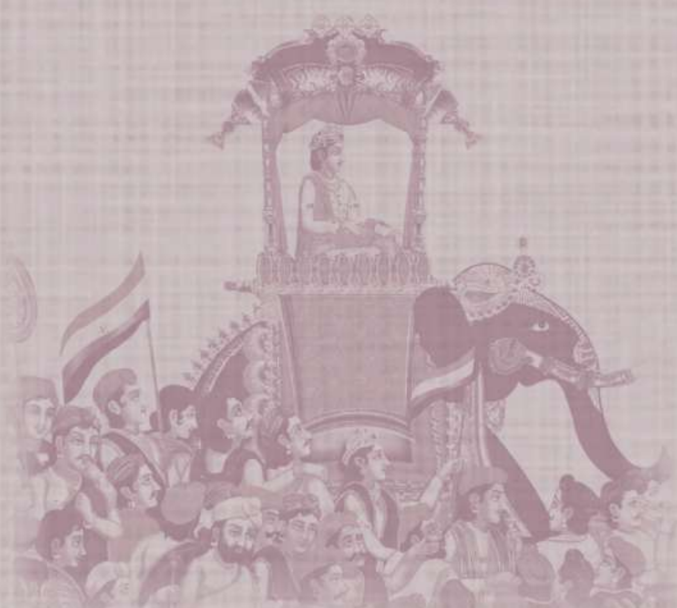

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :

1810 श्लोक प्रमाण

विभाग :

10 दशा

निर्युक्ति :

180 श्लोक प्रमाण

चूर्णि :

2225 श्लोक प्रमाण

श्री दशाश्रुतस्कंध सूत्र

आगम विज्ञान

1) प्रभुका 1 साल तक प्रतिदिन 1 करोड़ 60 लाख सोनैया का प्रीतिदान और आनंदित प्रजाजन

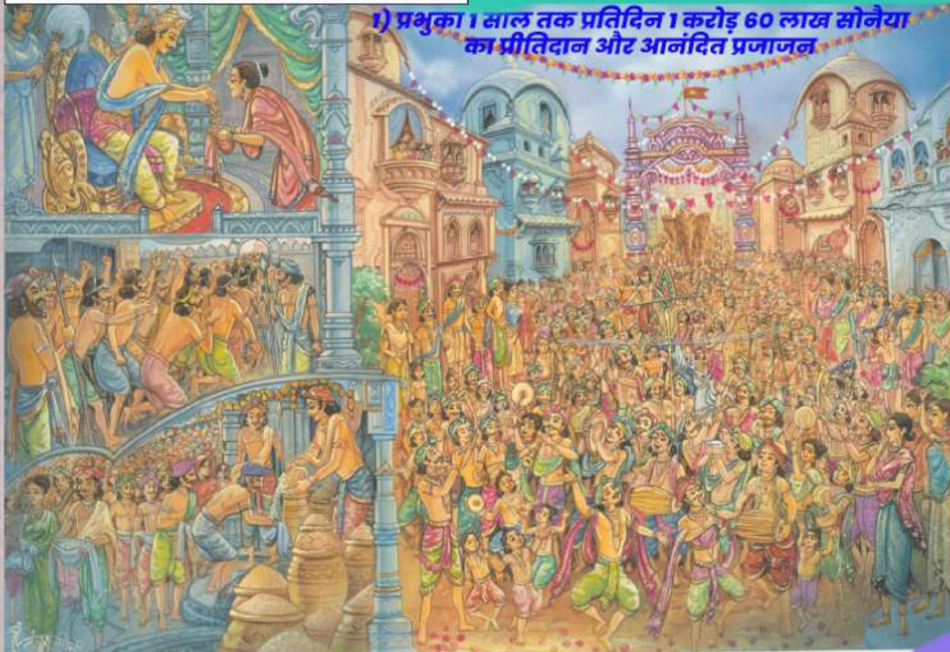

2) प्रभु महावीर को आये हुए 10 स्वप्न और उसका फलकथन

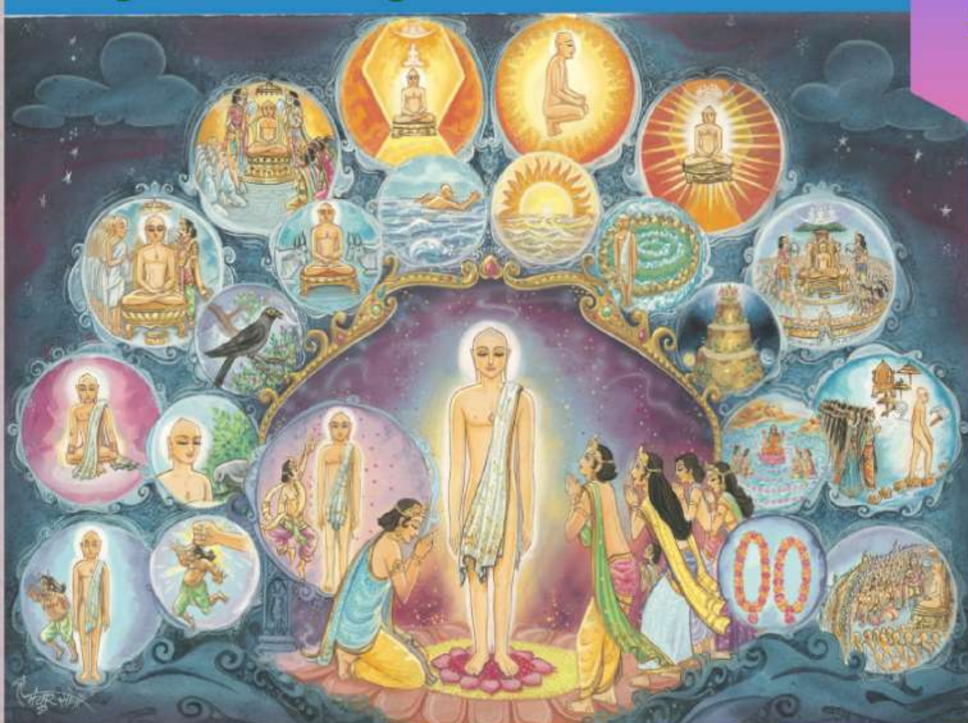

Holly Lifestyle of Dev & Guru

3) विविध मुद्रामें विविध प्रतिमा (साधना) करते साधु भगवंत

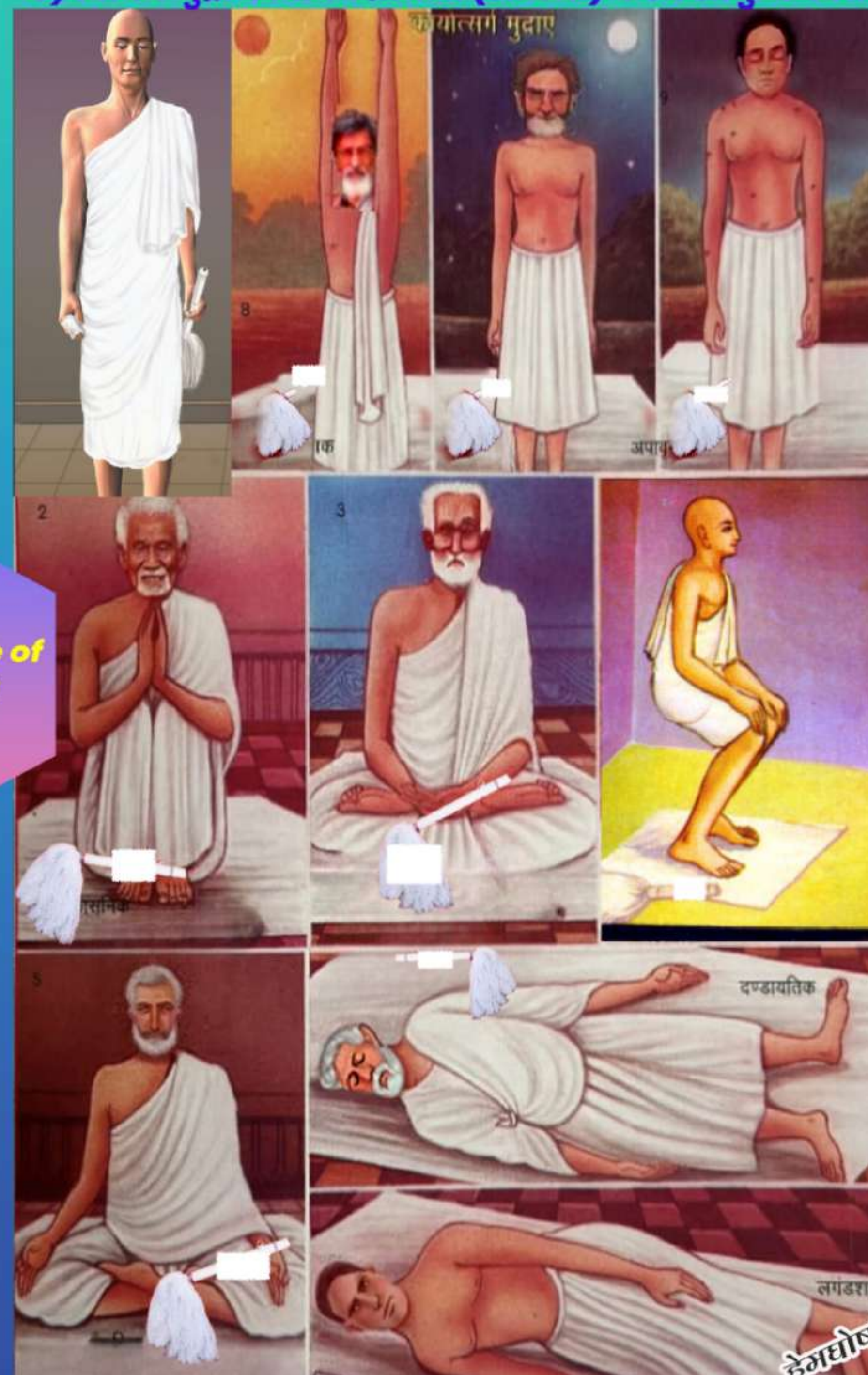

श्री बृहत्कल्पसूत्र

चित्र दर्शन

पापरहित जीवन जीने का सही रास्ता इस ग्रंथ में है।
बड़े पाप की सज़ा को छोटे करने की प्रक्रिया = आलोचना

(1) कर्माधीन जीव से यदि पाप हो जाए तो उससे मुक्त होने का भी रास्ता प्रभु ने यह ग्रंथ मे दिखाया है।

आलोचना नहीं करने से जीव का कर्मभार बढ़ता है, इसी कारण दुःख एवं दुर्गति की परंपरा बढ़ती है।

आलोचना करने से कर्मभार कम होता है और सुख एवं सद्गति प्राप्त होती है।

इसीलिए हृदय में पाप के प्रति वेदना एवं पुनः न करने के दृढ़ संकल्पपूर्वक गीतार्थ गुरु के सामने जीवनकिताब को खोलना-धोना-शुद्ध करना चाहिए।

(2) आलोचना नामक चालनी से शुद्ध हो रहा जीव। जैसे चालनी से पानी शुद्ध बनता है, वैसे सुविशुद्ध मानसिक, वाचिक, कायिक आलोचना से जीव भी शुद्ध होता है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :
437 श्लोक प्रमाण
विभाग :
6 उद्देशा
श्री संघदासगणिकृत भाष्य :
7600 श्लोक प्रमाण
चूर्णि :
16000 श्लोक प्रमाण
श्रीमलयगिरिसूरि + श्रीक्षेमकीर्तिसूरिकृत टीका :
42600 श्लोकप्रमाण

आलोचना
आत्मजल को
निर्मल करने
की प्रक्रिया
1) गुरु निश्रा में
शिष्य की भाव पूर्वक आलोचना
(पापकथन)
(2) आलोचना से
मलिन आत्मा का
शुद्धिकरण
मलिन जीव
क्रमशः
शुद्ध हो रहा जीव
आलोचना गरनी
विशुद्ध जीव
हेमघोष

श्री व्यवहार सूत्र

चित्र दर्शन

सर्वजीवसुखकारक, शाताकारक, आश्चर्यकारक साधु जीवन का आधार यह 5 (पाँच) व्यवहार है।

(1) इसमें पाँच प्रकार के कार्य करनेवाले पाँच प्रकार के साधु भगवंत दिखाए हैं। इसके कारण जैन साधु संस्था 2600 साल के बाद भी पारिवारिक व्यवस्था से एवं अन्य संत परंपरा से ज्यादा सन्माननीय, वंदनीय और विशुद्ध है।

(2) आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा और जीत इन पाँच आधार पर बदलते समय में भिन्न-भिन्न जीव की व्यवस्था का बदलाव जैन साधु संस्थाने मान्य किया।

इसी कारण जिनशासन में सिद्धांत को सुरक्षित रखकर सामाचारि बदलाव का अधिकार मिला। जिससे बदलते समय में जीव की / श्रीसंघ की मलिनता भी नहीं बढी और समय से पीछे न रहने का कलंक भी नहीं आया।

जिनशासन की यह बहुत ही व्यावहारिक (practical) व्यवस्था के कारण **most scientific & most practical religion** का ख़िताब जिनशासन को आधुनिक युग में मिला है।

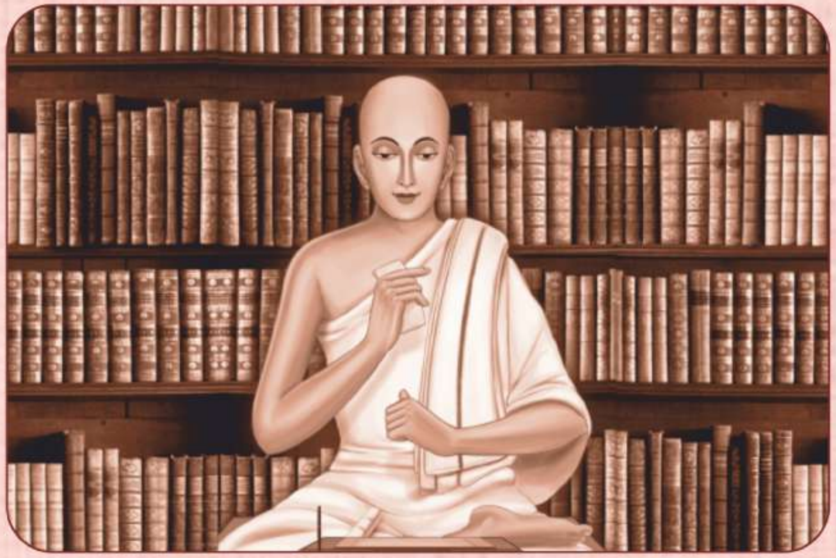

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :
675 श्लोक प्रमाण
विभाग :
10 उद्देशा
श्री भद्रबाहुस्वामिकृत भाष्य :
6400 श्लोक प्रमाण
चूर्णि :
12000 श्लोक प्रमाण
श्रीमलयगिरिसूरिकृत टीका :
33625 श्लोक प्रमाण

श्री व्यवहार सूत्र

आगम विज्ञान

(1) पाँच प्रकार के साधु भगवंत से सुदृढ़ बनी साधु जीवन की व्यवस्था

(बगीचे)पुष्प जैसे आकर्षक **आचार्य** भगवंत

श्रुतसरिता को बहाने वाले **उपाध्याय** भगवंत

अच्छे योगो में उत्साह से जोड़नेवाले चाबी तुल्य **प्रवर्तक** भगवंत

आराधना में सहायक बनके स्थिर बनानेवाले आधार जैसे **स्थविर** भगवंत

सबकी आवश्यकता की पूर्ति करनेवाले कल्पवृक्ष जैसे **गणावच्छेदक**

(2) जीवन व्यवहार तथा लोकव्यवहार के विभिन्न आधार

Constitution Of SANYAM JIVAN

अतिशय ज्ञान से व्यवहार = आगमव्यवहार

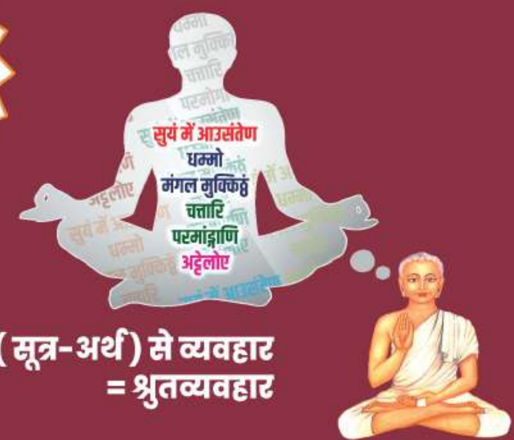

श्रुत (सूत्र-अर्थ) से व्यवहार = श्रुतव्यवहार

सांकेतिक शब्द से गीतार्थ आचार्य का व्यवहार = आज्ञाव्यवहार

गुरु की संमति या गुरु व्यवहार की खुद की स्मृति से हो रहा व्यवहार = धारणा व्यवहार

वर्तमान परिस्थिति के उपलक्ष से बहुमत गीतार्थो का व्यवहार = जित व्यवहार

हेमघोष

श्री निशीथ सूत्र

चित्र दर्शन

न केवल थियरी से, प्रेक्टीकली भी जीवन विज्ञान को इस ग्रंथ में दिखाया है।

(1) चारित्र जीवन में **पर्याय, श्रुत और वय** से अनुभव की वृद्धि दिखाई है। अनुभव से ही स्व/पर उभय का कल्याण शक्य है।

(2) मोक्षमार्ग बहुत ही पेचीदा है। **समर्पण, समज, साहस** से ही उस पर चलना शक्य है। वरना गलत रास्ते पर पहुँच गए तो सही रास्ते को ढूँढते ही रह जाएँगे।

(3) मन में पापप्रवेश से लेकर आचरण में पापप्रवेश के 4 STEPS भगवान ने बहुत अच्छे ढंग से दिखाए हैं। जिस STEP पर जीव रहता है, उसके अनुसार उसको कर्मबंध होता है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण : 812 श्लोक प्रमाण

विभाग : 20 उद्देशा

निर्युक्ति : 7000 श्लोक प्रमाण

जिनदासगणि चूर्णि : 28000 श्लोक प्रमाण

संघदासगणिकृत भाष्य : 7500 श्लोक प्रमाण

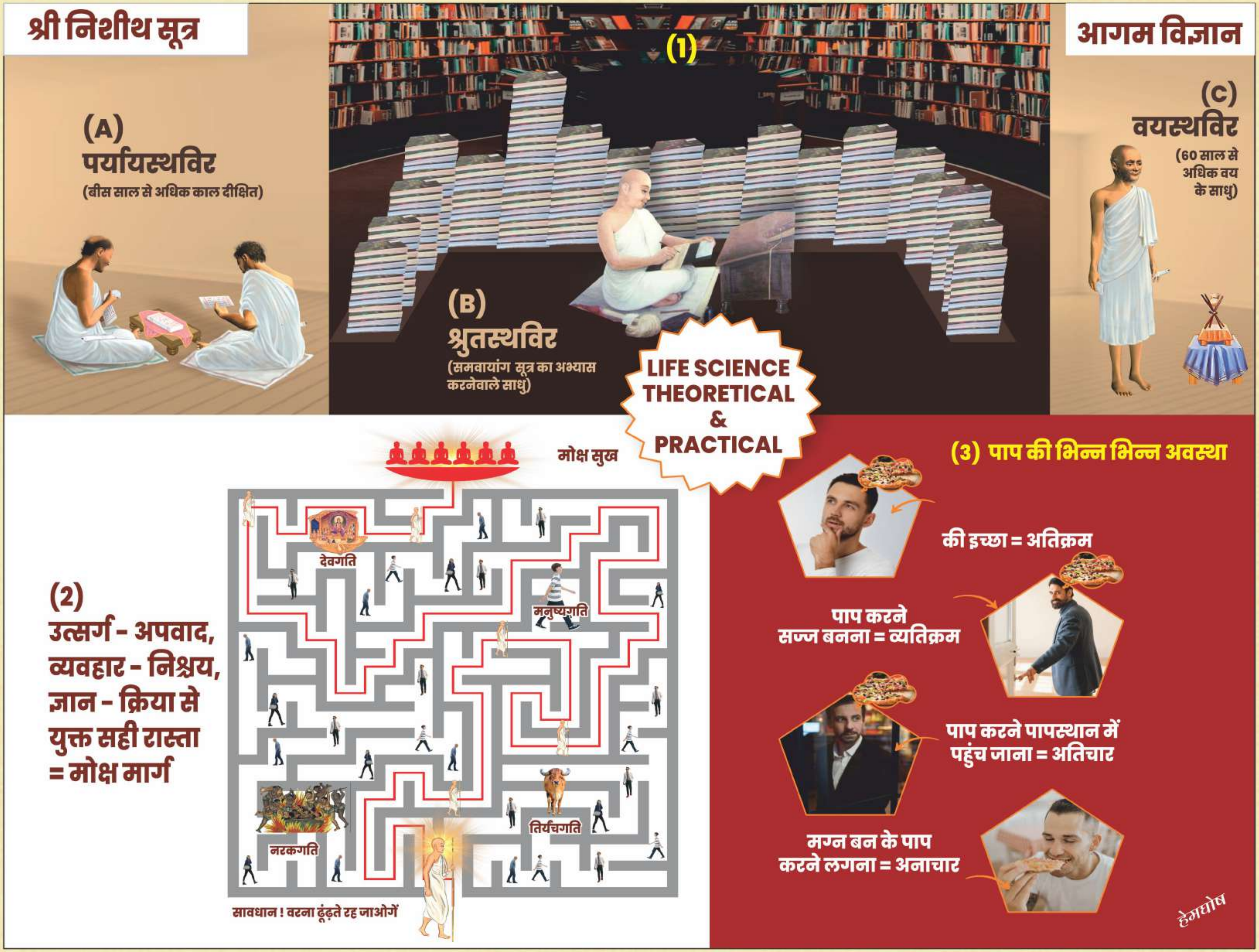
श्री निशीथ सूत्र
आगम विज्ञान
(1)
(A)
पर्यायस्थविर
(बीस साल से अधिक काल दीक्षित)
(B)
श्रुतस्थविर
(समवायांग सूत्र का अभ्यास करनेवाले साधु)
(C)
वयस्थविर
(60 साल से अधिक वय के साधु)
LIFE SCIENCE THEORETICAL & PRACTICAL
मोक्ष सुख
देवगति
मनुष्यगति
तिर्यंचगति
नरकगति
सावधान ! वरना ढूंढ़ते रह जाओगें
(2)
उत्सर्ग - अपवाद, व्यवहार - निश्चय, ज्ञान - क्रिया से युक्त सही रास्ता = मोक्ष मार्ग
(3) पाप की भिन्न भिन्न अवस्था
की इच्छा = अतिक्रम
पाप करने सज्ज बनना = व्यतिक्रम
पाप करने पापस्थान में पहुंच जाना = अतिचार
मग्न बन के पाप करने लगना = अनाचार
हेमघोष

श्री महानिशीथ सूत्र

चित्र दर्शन

पाप शुद्धि एवं आराधना वृद्धि मोक्षसुख का HIGHWAY है।

(1) इस ग्रंथ में से महापुरुषों ने जिसकी आराधना श्रावक के लिए आवश्यक है वैसे नवकार, नमुत्थुणं, लोगस्सादि सूत्रों के उपधान की विधि श्रावक समाज के लिए निश्चित की है।

(2) नारकी में जीवों को दंड देनेवाले परमाधामी देवों की गति और दूसरों को परेशान करने की सज़ा।

दूसरों को परेशान करके आनंद प्राप्त करनेवाले जीव परमाधामी देव बनते हैं। नारकी के जीव को सजा देने के लिए अपने दैवी सुख को भी छोड़ देते है, क्योंकि उनको दूसरे को दुखी देखने में ज़्यादा आनंद मिलता है। आयुष्य पूर्ण करके परमाधामी देव रत्नद्वीप में अंडगौलिक मनुष्य बनते हैं। जन्म से गले में अंड की गोली होती है, उसे पाने वहाँ के व्यापारी दारू-मांस की लालच में फसा कर 6 महिने घंटी में पीसकर उस अंडगौलिक मनुष्य को मार डालते हैं। असमाधिपूर्वक मृत्यु पाकर यह अंडगौलिक मनुष्य 7 वी नरक में नारकी का जीव बनता है और वहाँ बहुत दुःख भुगतता है।

(3) पाप और काँटे की तुलना- काँटा केवल एक ही अंग को सड़ाता है, पाप पूरे आत्मा को सड़ाता है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण : 4504 श्लोक प्रमाण
विभाग : 8 अध्ययन
लघुवाचना : 3500 श्लोक प्रमाण
मध्यमवाचना : 4200 श्लोक प्रमाण
बृहद्वाचना : 4504 श्लोक प्रमाण

श्री महानिशीथसूत्र

(1) यह ग्रंथ में से पूर्वाचार्यो ने गृहस्थ के उपधान की विधिका उद्धरण किया और सबको पंचमंगल महाश्रुतस्कंध (नवकार मंत्र) आदि का अधिकार दिया।

आगम विज्ञान

(2) परमाधामी देव मृत्यु पाकर अंडगौलिक मनुष्य बनते है और घंटी में 6 महीना पीस के 7वी नरक में उत्पन होते है।

पापों की शुद्धि और आराधना की वृद्धि तुर्त दिलावे सिद्धि

(3)

हेमघोष

श्री जीतकल्प सूत्र

चित्र दर्शन

आत्मा को विशुद्ध बनानेवाले 10 प्रकार के प्रायश्चित्त

(1) पाप की तीव्रता एवं पश्चात्ताप की मात्रानुसार गुरू प्रायश्चित्त प्रदान करते हैं।

- **छोटे पाप में या उत्कृष्ट पाश्चाताप में** (a) आलोचना, (b) प्रतिक्रमण, (c) मिश्र प्रायश्चित्त देते हैं।
- **मध्यम पाप में या मध्यम पाश्चाताप में** (a) विवेक, (b) कायोत्सर्ग, (c) तप प्रायश्चित्त देते हैं।
- **बडे पाप में** (a) छेद, (b) मूल, और **विशेष व्यक्ति को** (c) अनवस्थाप्य और (d) पारांचित प्रायश्चित्त देते हैं।

ये सभी जिनमत के **पारिभाषिक** शब्द है। गीतार्थ गुरू भगवंत इस ग्रंथ को पढने पढाने के अधिकारी हैं। छोटे पाप से लेकर बड़े पाप तक सभी पापस्थानक की शुद्धि की प्रक्रिया जिनशासन में दिखाई है, न केवल कायिक किन्तु वाचिक एवं मानसिक पाप की शुद्धि की भी प्रक्रिया इसमें दिखाई है।

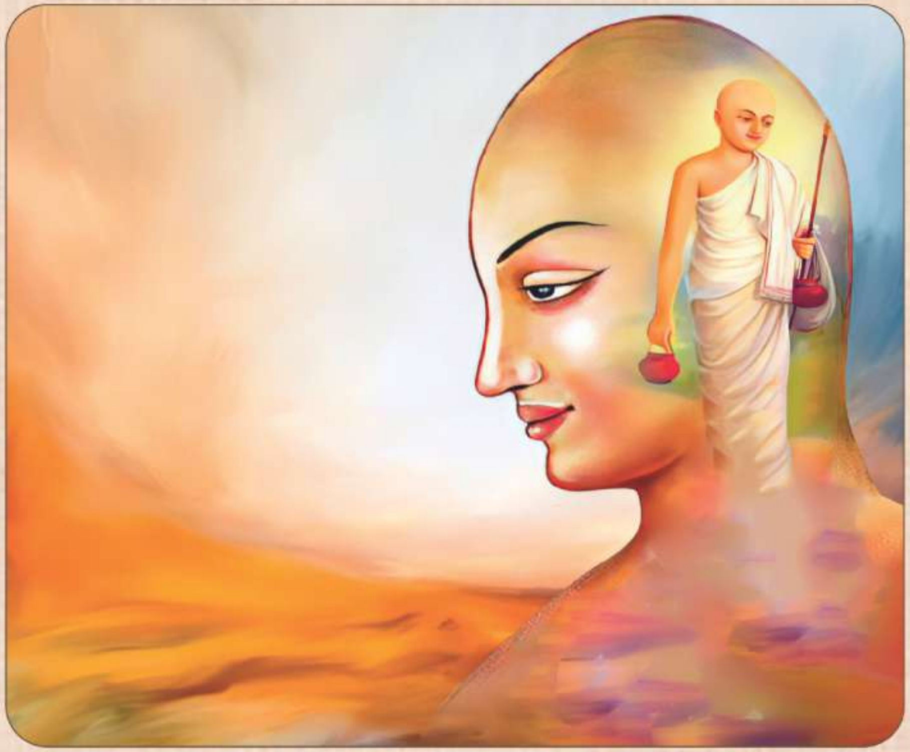

स्वरूप दर्शन

प्रमाण :

142 श्लोक प्रमाण

श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणकृत भाष्य :

2606 श्लोक प्रमाण

श्री जितकल्प सूत्र
आगम विज्ञान
पाप की आग को पश्चाताप के आँसू से मिटानेवाले
आलोचना के 10 भेद
(1)
मिच्छामि दुक्कडम
(आलोचना प्रायश्चित्त)
(2)
प्रतिकमण प्रायश्चित्त
(3)
आलोचना + प्रतिकमण
= मिश्र प्रायश्चित्त
(4) हंस की भांति पाप - पुण्य के भेद
को करनेवाला = विवेक प्रायश्चित्त
(5)
शरीर की सुख शीलता - मन की अस्थिरता
को दूर करनेवाला = कायोत्सर्ग प्रायश्चित्त
WAYS
TO
PURIFY
SOUL
(6)
पाप का नाश और मन को शुद्ध करनेवाले
12 प्रकार के तप (आयंबिलादि)
= तप प्रायश्चित्त
(7)
बिगड़े जीवन को काटना
= छेद प्रायश्चित्त
(8)
सडे हुए जीवन को
समूल उखड़ना
= मूल प्रायश्चित्त
(9)
फिरसे महाव्रत -
पच्चखाण को ग्रहण करना
= अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त
संयम
संसार
(10)
दूसरे को आराधना में
जोड़के खुदका आराधनामार्ग में प्रवेश
= पारांचित प्रायश्चित्त
हेमघोष

श्री उत्तराध्ययन सूत्र

चित्र दर्शन

प्रभु वीर की अंतिम देशना का संग्रह इस ग्रंथ में है। इस ग्रंथ का सार है ~जो, जैसा, जैसे, जितना और जबतक मिला है उसकी कीमत समझकर उसका सो प्रतिशत लाभ लेना चाहिए।

(1) मनुष्यभव, सद्धर्मश्रवण, धर्म की श्रद्धा, धर्म का आचरण यह चार चीज़ें सब से VALUABLE है। कभी भी उसको दूसरों के कारण गौण नहीं करना चाहिए।

(2) पुण्यवान, धनवान से भी ज्यादा ज्ञानवान का मूल्य है। उस को समझाने के लिए इधर ज्ञानी की बहुत ही अच्छी विशेषताएँ दी है।

(3) जीवन अल्प समयवाला है और समय कभी भी वापस नहीं आता इसलिए जो भी समय मिला है उसमें साधना (परलोक की SAFETY) कर लेनी चाहिए।

(4) प्राप्त हुए **पुण्य धन को कम करना** = नरक, तिर्यंच गति का रिझर्वेशन, **पुण्य धन को बचाना** = मनुष्यगति का रिझर्वेशन, **पुण्यधन को बढाना** = देवगति का रिझर्वेशन।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण : 2000 श्लोक प्रमाण
विभाग : 36 अध्ययन
श्रीभद्रबाहुस्वामिकृत निर्युक्ति : 600 श्लोक प्रमाण
श्री जिनदासगणिकृत चूर्णि : 5850 श्लोक प्रमाण
श्री शांतिसूरिकृत टीका : 16000 श्लोक प्रमाण
श्री नेमिचंद्रसूरिकृत टीका : 14000 श्लोक प्रमाण
श्री भावविजयगणिकृत टीका : 14225 श्लोक प्रमाण
श्री कमलसंयमोपाध्यायकृत टीका : 14000 श्लोक प्रमाण
श्री कीर्तिवल्लभगणिकृत टीका: 8265 श्लोक प्रमाण
श्रीउदयसागरगणिकृत दीपिका : 8000 श्लोक प्रमाण
श्रीज्ञानसागरसूरिकृत अवचूरि : 3600 श्लोक प्रमाण

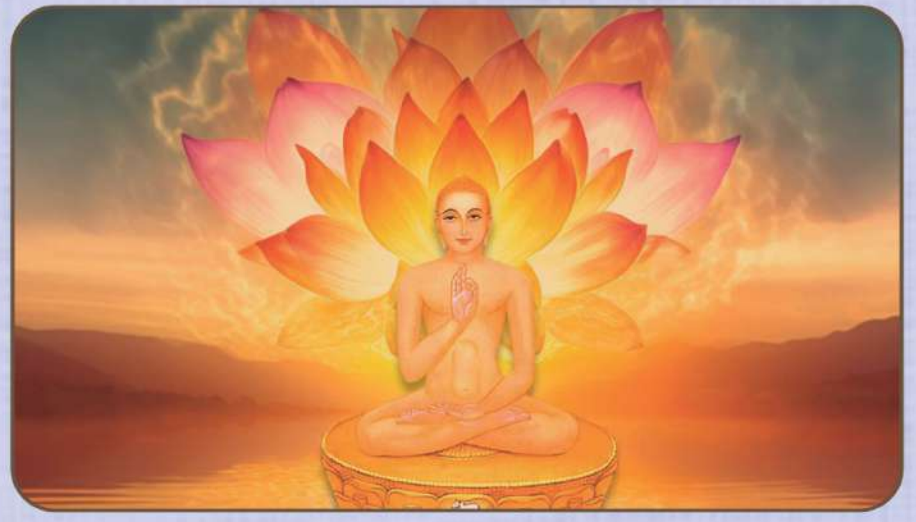

श्री उत्तराध्ययन सूत्र
आगम विज्ञान
1) क्रमशः दुर्लभ चार तत्त्व
मणि जैसा सबसे दुर्लभ सदाचार
रत्न जैसी दुर्लभतम श्रध्दा
सोने जैसा दुर्लभ सद्‌गुरु के पास धर्म श्रवण
चांदी जैसा दुर्लभ मनुष्यभव
2) बहुश्रुत पंडित की विविध उपमाँए
बहु श्रुतपंडित साधु
शंख जैसे
जातिवंत अश्व जैसे
सेनापति जैसे
गजराज जैसे
कामधेनु गो जैसे
सिंह जैसे
वासुदेव जैसे
चक्रवती जैसे
देव जैसे
सूरज जैसे
चांद जैसे
वेपारी जैसे
कल्पवृक्ष जैसे
नदी प्रवाह जैसे
मेरु जैसे
रत्नाकर जैसे
Rare Elements
Education
value of
Time
Opportunity
3) औस बिंदु जैसा क्षणिक मनुष्यभव एवं भोगसुख
औस बिंदु
4) पुण्य धन की प्राप्ति के बाद सुखी और दु:खी बनने का रास्ता
(A)
पुण्यधन का नाश करना
नरकगति
(B)
पुण्यधन को संभालना
मनुष्यगति
(C)
पुण्यधन को बढ़ाना
देवगति
हेमघोष

श्री दशवैकालिक सूत्र

चित्र दर्शन

करियर से ज़्यादा केरेक्टर का निर्माण महत्वपूर्ण है, सफलता से ज़्यादा पवित्रता का महिमा है- यह सूत्र का संदेश है।

(1) यह ग्रंथ भी आचार का, विनय का, भाषाविवेक - गोचरीविवेक प्रमुख विषयों का ग्रंथ है।

14 पूर्वी शय्यंभवसूरिजी ने पुत्र मनक का अल्प आयुष्य जानकर 14 पूर्व में से इसे संध्या समय पर उधृत करके 10 विभाग में विभाजित किया, इसीलिए इसका नाम दशवैकालिक निश्चित किया गया।

• इस ग्रंथ के माध्यम से पापरहित फिर भी सफलता युक्त जीवन जीने की TIPS प्रभु बताते हैं - दैनिक प्रवृत्तियाँ जैसे चलना, बैठना आदि ही जयणा पूर्वक करो जिससे पापरहित सफलता प्राप्त हो।

(2) अभी करियर, बाद में केरेक्टर, अभी संसार-व्यवहार, बाद में धर्म-साधना.... ऐसी गलत मान्यता में मग्न जीवों को प्रभु बताते है धर्म और कर्म (संसार) में आगे बढने योग्य समय एक ही है। यही समय में या तो धर्म करो या तो धर्म-कर्म का BALANCE.

(3) धर्म-कर्म का BALANCE करने विनयपूर्वक गुरु की प्रेरणा लेनी चाहिए एवं क्रोधादि दोषों को छोड़कर गुणों का स्वीकार करना चाहिए।

प्रभु वीर के शासन के अंत तक ज्ञानप्रकाश देनेवाला यह आगम है।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण : 507 श्लोक प्रमाण

विभाग : 10 अध्ययन 2 चूलिका

श्रीभद्रबाहुस्वामिकृत निर्युक्ति : 550 श्लोक प्रमाण

भाष्य : 63 श्लोक प्रमाण

श्री हरिभद्रसूरिकृत टीका : 7000 श्लोक प्रमाण

श्री जिनदासगणिकृत चूर्णि : 7000 श्लोक प्रमाण

श्रीअगत्स्यसिंहगणिकृत चूर्णि : 5000 श्लोक प्रमाण

श्री तिलकाचार्यकृत टीका : 7000 श्लोक प्रमाण

श्री सुमतिसूरिकृत टीका : 2600 श्लोक प्रमाण

श्री विनयहंसगणिकृत टीका : 2100 श्लोक प्रमाण

श्री दशवैकालिक सूत्र
आगम विज्ञान
1) पाप रहित दैनिक जीवन जीने के Tips की प्राप्ति में उत्सुक साधु
1) कहं चरे ?
2) कहं चिट्ठे ?
3) कहं आसे ?
4) कहं सये ?
5) कहं भुजंतो ?
6) कहं भासंतो ?
पावं कम्मं न बंधई ।
?
जयंचरे
जयं चिट्ठे
जयं आसे
जयं सये
जयं भुजंतो
जयं भासंतो
पावं कम्मं न बंधई ।
भगवान का उत्तर
2) धर्म करने का योग्य समय...
मृत्यु
जीवन
घडपण
जुवानी
रोग
नीरोगिता
अशक्ति
शक्ति
अब धर्म कैसे करोंगे ?
धर्म अभी कर लो
Spiritual Life
Successful Life
3) कषाय व दुर्गुण का त्याग, गुण का स्वीकार
क्रोध
क्षमा
मिच्छामि दुक्कडम
मान
नम्रता
माया
सरलता
लोभ
संतोष
विनयपूर्वक गुरु से ज्ञान ग्रहण करते साधु
हेमघोष

श्री आवश्यक सूत्र

चित्र दर्शन

साधु एवं श्रावक को सुख, शाता, समाधि और समृद्धि के लिए अवश्य करने योग्य क्रियाएँ

(1) **सामायिक** :- मलिनता को छोड़कर अनासक्त भाव को जीवन में प्रवेश देना।

(2) **चउवीसत्थो** :- मलिनता त्याग, शुभता स्वीकार हेतु सर्वोच्च शक्ति-पुण्य-गुण संपन्न अर्हद् तत्व का अनुग्रह स्वीकार।

(3) **वंदण** :- Personal Care Taker जैसे गुरु भगवंतों के प्रति आशिष याचना।

(4) **पडिक्कमण** :- मोहवश हुए पाप का गुरु के सामने पश्चात्ताप पूर्वक बयान।

(5) **काउसग्ग** :- ओपरेशन तुल्य पाप नाश की सर्वशक्तिमंत प्रक्रिया जिसमें मलिन मन-तन-वचन को छोडने होते हैं।

(6) **पच्चक्खाण** :- शुद्ध बनने के बाद फिर से मलिन न बनने का संकल्प।

स्वरूप दर्शन

प्रमाण : 135 श्लोक प्रमाण

निर्युक्ति : 2500 श्लोक प्रमाण

भाष्य : 483 श्लोक प्रमाण

चूर्णि : 18500 श्लोक प्रमाण

श्री हरिभद्रसूरिकृत टीका : 22000 श्लोक प्रमाण

श्री माणिक्यशेखरगणिकृत दीपिका : 11750 श्लोक प्रमाण

श्री ज्ञानसागरसूरिकृत अवचूरि : 7885 श्लोक प्रमाण

श्री आवश्यक सूत्र
आगम विज्ञान
1) सामायिक आवश्यक (करेमि भंते !)
राग द्वेष के परिणाम को आत्मा में से नाश करना,
समता को शुभ भावो को आत्मा में शामिल करना
CANCEL
ACCEPT
कषाय युक्त जीव
(संसार का परिणाम)
समता युक्त जीव
(सामायिक का परिणाम)
4) पडिक्कमण आवश्यक (मिच्छामि दुक्कडम्)
पश्चाताप की आग में पाप को जलाने का प्रयास
शुद्धि को महसूस करने का प्रयास
2) चउवीसत्थो आवश्यक
तीत्थयरा में पसीयंतु
आपके चरणों में वंदना
आपकी कृपा मुज पर
अविरत बहती रहो।
जिनेश्वर परमात्मा !
DAILY ESSENTIAL RITUALS OF JINSHASAN
5) काउसग्ग आवश्यक
अप्पाणं वोसिरामि
पाप के कारणभूत मलिन
मन-वचन-काया को
त्याग करना
काउसग्ग की प्रक्रिया
काउसग्ग का परिणाम
3) वंदण आवश्यक
मत्थएण वंदामि
में सेवक हूँ,
आप स्वामी हो।
आपके चरणों में
मेरा नमन।
6) पच्चक्खाण आवश्यक
धारणाभिग्रह पच्चक्खामि
अब से जीवन में पाप को
त्याग करने का अभिग्रह धरता हूँ।
चोरी
खून
मांसाहार
पार्टी

श्री ओघनिर्युक्ति सूत्र

चित्र दर्शन

आदर्शजीवन एवं आदर्शजीवनशैली का वर्णन

(1) पाप अभाव और अप्रमत्त बनकर प्रत्येक समय का सदुपयोग करनेवाले साधु जीवन का TIME PLANNING

(2) **सर्वज्ञ उपदिष्ट श्रुतज्ञान को चार विभाग में विभाजित किया गया है,**

(a) द्रव्यानुयोग (b) कथानुयोग (c) गणितानुयोग (d) चरणकरणानुयोग

- जगत के मूल 6 तत्व के भेदों का समावेश द्रव्यानुयोग में है,
- अतीन्द्रिय एवं कठिन पदार्थों का समावेश गणितानुयोग में है,
- आदर्शजीवनचरित्रों का समावेश कथानुयोग में है,
- आचार विषयक व्यवस्था का समावेश चरणकरणानुयोग में है।

यह ग्रंथ चरणकरणानुयोग का प्रमुखग्रंथ है।

गणित, कथा एवं द्रव्य से जगत के स्वरूप को बतानेवाले श्रुत से भी आत्मकल्याण हेतु आचार की बात करनेवाला श्रुत ज्यादा ज़रूरी है।

(3) निष्पाप साधु जीवन की साधना में सहायक बन रहे **विभिन्न साधु के विभिन्न उपकरण**।

श्री ओघनिर्युक्ति सूत्र
1)साधु की दिनचर्या
धर्म जागरिका
प्रतिक्रमण
स्वाध्याय
पडिलेहन
पात्रा पडिलेहन
प्रभु दर्शन
गोचरी
स्थंडिल भूमि
स्वाध्याय
पडिलेहन
प्रतिक्रमण
स्वाध्याय
2) सर्वोत्कृष्ट ज्ञान दान = आचार का ज्ञान दान
चरणकरणानुयोग
Do's
Don'ts
Best Lifestyle
गणितानुयोग
कथानुयोग
Storytelling
SCIENCE
द्रव्यानुयोग
आगम विज्ञान
3) साधु के उपकरण
तरपनी
पातरा
रजोहरण
पोथी-सापडो
नवकारवाली
पूंजणी
कामली
स्थापनाचार्य
आसन
संथारा
हेमघोष

श्री नंदी सूत्र

चित्र दर्शन

नंदी = आनंद

उसे प्राप्त करने का रास्ता है सर्वज्ञ उपदिष्ट ज्ञान और तीर्थंकरों के द्वारा स्व-पर कल्याण हेतु स्थापित किया हुआ व्यवस्था तंत्र = तीर्थ/संघ की भक्ति।

(1) तीर्थंकर स्थापित संघ की भिन्न-भिन्न विशेषता इस सूत्र में दिखाई है।

उदा. संघ चक्र जैसा है, जैसे चक्र विपक्ष का नाश, स्वपक्ष की रक्षा करता है, वैसे ही संघ मोह का नाश, जीव की रक्षा करता है।

(2) इन्द्रिय और मन से हो रहा ज्ञान = **मतिज्ञान।**

- गुरु के पास शास्त्र श्रवण = **श्रुतज्ञान।**
- दृश्य-अदृश्य पदार्थों का अतीन्द्रिय आत्मिकशक्ति से ज्ञान **अवधिज्ञान।**
- दूसरे मनोलब्धिवालों के विचारों को जानना = **मनःपर्यवज्ञान।**
- आत्मा के आइने में पूरे ब्रह्मांड एवं त्रिकाल का ज्ञान = **केवलज्ञान।**

इस ग्रंथ में इन पाँचों का स्वरूप विस्तार से दिखाया है।

स्वरूप दर्शन

कर्ता : श्री देववाचक गणि

प्रमाण : 700 श्लोक प्रमाण

श्रीजिनदासगणिकृत चूर्णि : 1500 श्लोक प्रमाण

श्री हरिभद्रसूरिकृत टीका : 2300 श्लोक प्रमाण

श्री हरिभद्रसूरिकृत टिप्पण : 3300 श्लोक प्रमाण

श्री मलयगिरिसूरिकृत टीका: 7732 श्लोक प्रमाण

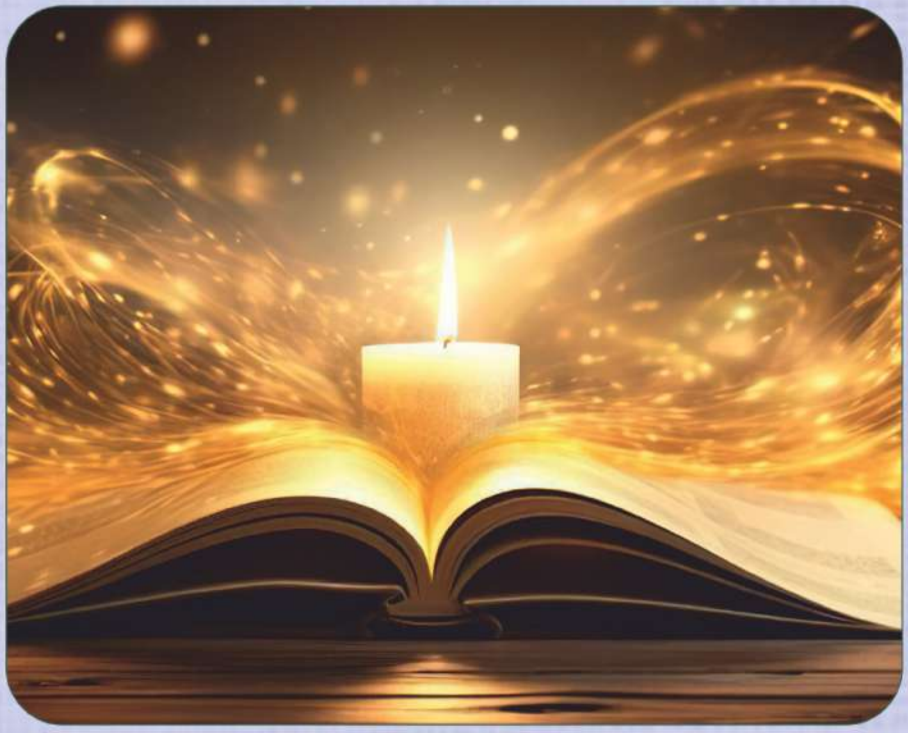

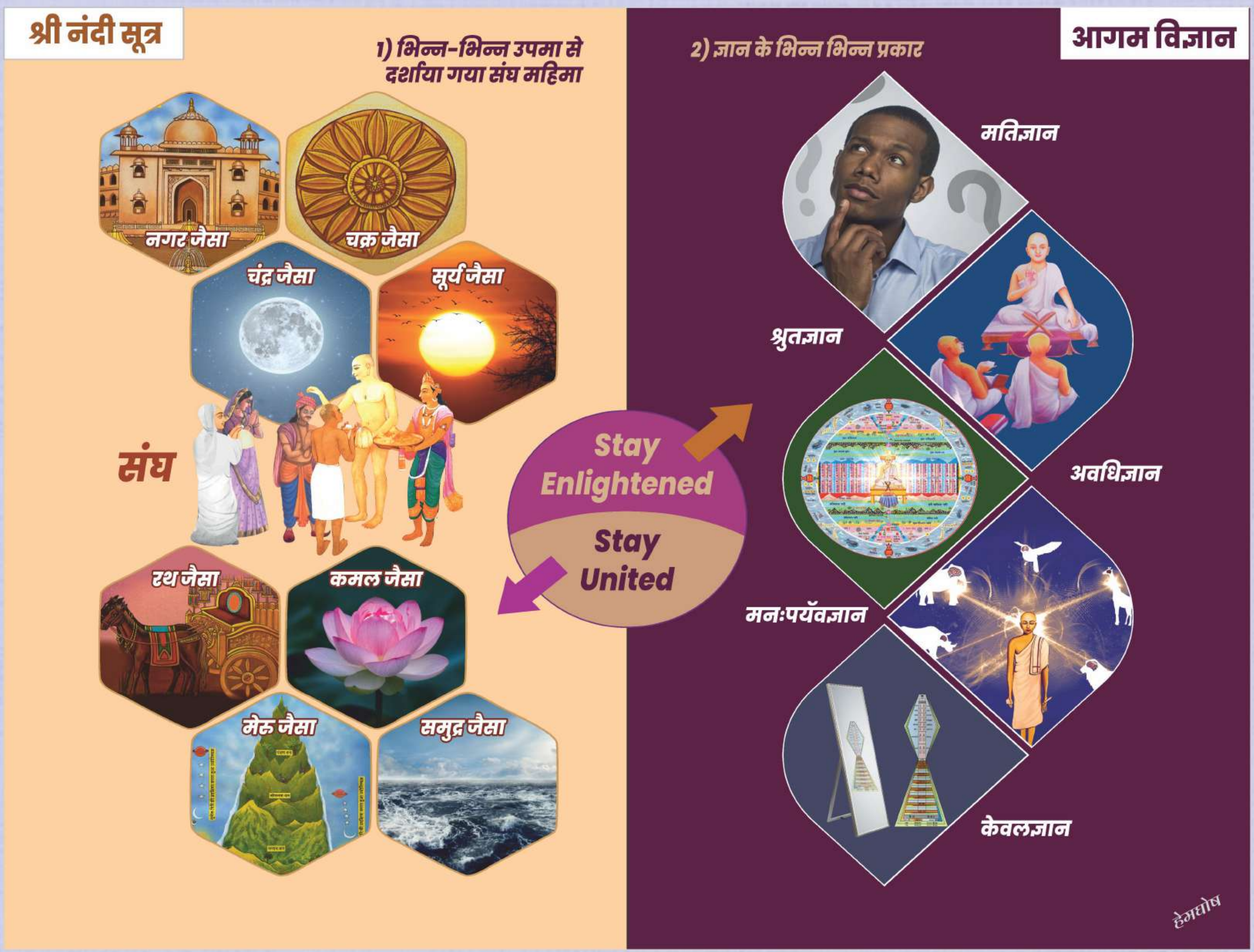
श्री नंदी सूत्र
1) भिन्न-भिन्न उपमा से
दर्शाया गया संघ महिमा
नगर जैसा
चक्र जैसा
चंद्र जैसा
सूर्य जैसा
संघ
रथ जैसा
कमल जैसा
मेरू जैसा
समुद्र जैसा
Stay
Enlightened
Stay
United
आगम विज्ञान
2) ज्ञान के भिन्न भिन्न प्रकार
मतिज्ञान
श्रुतज्ञान
अवधिज्ञान
मनःपर्यवज्ञान
केवलज्ञान
हेमघोष

श्री अनुयोगद्वार सूत्र

चित्र दर्शन

कोई भी पदार्थ को पूर्णतया जानने के लिए इस आगम का ज्ञान आवश्यक है।

(1) यह ग्रंथ गुप्त एवं रहस्यमय अर्थ को लेकर बैठे सभी आगम खजाने के ज्ञान हेतु चाबी तुल्य है।

(2) इसके अंदर संगीत के 7 प्रकार के स्वर, उसके वाजिंत्र और 9 प्रकार के मन के भावों को बेहतरीन तरीके से समझाया है।

(3) कोई भी आगम एवं ज्ञान परंपरा के पूर्णबोध हेतु निम्नलिखित चार भेदों का उपयोग आवश्यक है।

(ए) **उपक्रम** = क्षेत्र व काल से दूर रहे पदार्थ के नजदीक पहूँचना। उदाहरण - ज्ञान का मूल स्रोत तीर्थंकर भगवंत के जीवन से लगाकर ग्रंथ की रचना का इतिहास जानना।

(बी) **निक्षेप** = नाम, स्थापना, द्रव्य एवं भाव यह चार पद्धतियों से पदार्थ बोध।

(सी) **नय** = भिन्न-भिन्न प्रवाह से सागर बने वैसे ही 7 भिन्न भिन्न दृष्टि से पदार्थ का मूल्यांकन कर पूर्णबोध प्राप्ति होती है।

(डी) **अनुगम** = शब्दों के भिन्न अर्थों में से उचित अर्थ का उचित समय उपयोग करना।

स्वरूप दर्शन

कर्ता : श्रीआर्यरक्षितसूरि महाराजा

उपलभ्यमान प्रमाण : 2000 श्लोक

श्री जिनदासगणिकृत चूर्णि : 2235 श्लोक प्रमाण

श्री हरिभद्रसूरिकृत टीका: लघुवृत्ति

श्रीमलधारीहेमचन्द्रसूरिकृत टीका : 5800 श्लोक प्रमाण

श्री अनुयोगद्वार सूत्र
आगम विज्ञान
1) सभी श्रुत (आगम)के खजाने को खोलने चाबी तुल्य यह सूत्र है।
श्री पुष्पिका सूत्र
श्री पुष्पचूलिका सूत्र
श्री वह्निदशा सूत्र
श्री आचारांग सूत्र
श्री कल्पावतंसिका सूत्र
श्री सूयगडांग सूत्र
श्री समवायांग सूत्र
श्री अनुयोगद्वार सूत्र
Master Key Of Jinaagam
2) 7 प्रकार के स्वर और 9 प्रकार के रस का अद्भूत वर्णन
मृदंग
गोमुखी
शंख
मंजीरा
गोधिका
ढोलक
महाभेरी
वीर रस
श्रृंगार रस
अद्भूत रस
रौद्र रस
प्रशांत रस
व्रीडनक रस
विभत्स रस
हास्य रस
करूण रस
3) विशद व व्यापक बोध के लीये यह चार के जानना आवश्यक है।
A) उपक्रम
क्षेत्र व कालसे दूर रहे श्रुत को नजदीक लाना
श्रुतधर्म 0 KM
श्रुतधर्म 500 KM
B) निक्षेप
01 नामदेव
02 स्थापना देव
03 भाव देव
04 द्रव्य देव
C) नय
भिन्न भिन्न द्रष्टि से विचारो की प्रस्तुति
नैगम
व्यवहार
संग्रह
ऋजुसूत्र
शब्द
समभिरुढ
एवंभूत
प्रमाण दर्शन
(अनेकांत दर्शन)
D) अनुगम
योग्य सूत्र के साथ योग्य अर्थ का जोड़ाण
अनु
गम
हेमघोष

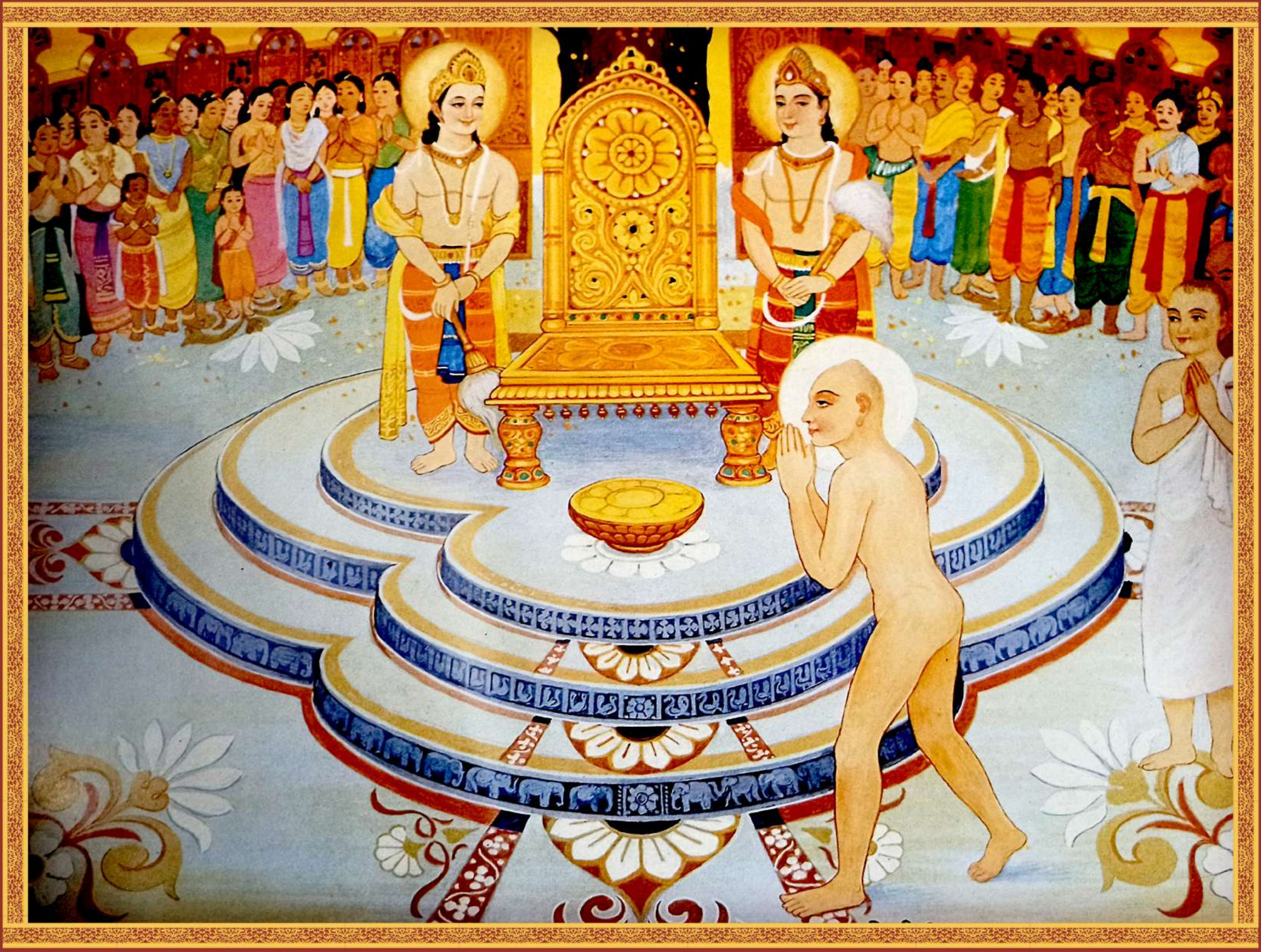

सुच्चा ते जिअलोए, जिणवयणं जे नरा न याणंति ।
सुच्चाण वि ते सुच्चा, जे नाऊणं न वि करंति ॥ १६० ॥ उपदेशमाला

जिनवचन को जो नहीं पहचानते वे तो दयनीय हैं ही,
लेकिन जिनवचन को जानने के बावजुद जो
उसका अमल-आचरण नहीं करते वे तो दयनीय से भी दयनीय हैं ।

सज्झाएण पसत्थं, ज्झाणं जाणइ अ सव्वपरमत्थं।
सज्झाए वट्टंतो, खणे खणे जाइ वेरग्गं ॥ ३३८ ॥ उपदेशमाला

स्वाध्याय करने से प्रशस्त ध्यान प्रगट होता है,
स्वाध्याय करने से सर्व पदार्थों के रहस्यार्थ-परमार्थ प्रगट होते है,
स्वाध्याय करने से जीव को प्रतिपल वैराग्यभाव प्रगट होता है।

हा ! अणाहा कहं हुंता, जइ जिणागमो ण हुंतो।।
- पू. हरिभद्र सू.म.

सच्चे सुख के मार्गदर्शक
जिनागम यदि न होते तो अनाथ ऐसे हमारी परिस्थिति क्या होती ?

GRAPHICULTURE
70487 55580